खण्ड–07 सत्र–02 / अंक–13

शुक्रवार 12 मार्च, 2021 / 21 फाल्गुन, 1942 (शक)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्यमेव जयते

सातवीं विधान सभा

दूसरा सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड–07 (भाग–1) में अंक 09 से अंक 13 सम्मिलित है।)

दिल्ली विधान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली–54

सम्पादक वर्ग

EDITORIAL BOARD

सी. वेलमुरुगन

सचिव

C. VELMURUGAN

Secretary

महेन्द्र गुप्ता

उप सचिव (सम्पादन)

MAHENDRA GUPTA

Deputy Secretary(Editing)

विषय–सूची

सत्र–2(भाग–1) शुक्रवार, 12 मार्च, 2021 / 21 फाल्गुन, 1942 (शक) अंक–13

क्र.सं.	**विषय**	**पृष्ठ सं.**
1.	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	3–4
2.	विशेष उल्लेख (नियम–280)	5–27
3.	सदन पटल पर प्रस्तुत कागजात	27–28
4.	वार्षिक बजट(2021–22) पर चर्चा	29–111
5.	अनुदान मांगों (2021–22) का प्रस्तुतीकरण, विचार एवं पारण	112–116
6.	विनियोजन (संख्या–2) विधेयक, 2021 का प्रस्तुतीकरण, विचार एवं पारण	117–118
7.	सदन द्वारा अल्पसंख्यक कल्याण समिति के प्रथम प्रतिवेदन से सहमति	119

दिल्ली विधान सभा
की
कार्यवाही

सत्र – 2, शुक्रवार, 12 मार्च, 2021/21 फाल्गुन, 1942 (शक) अंक 13

दिल्ली विधान सभा
सदन पूर्वाहन 11:04 बजे समवेत हुआ।

निम्नलिखित सदस्य सदन में उपस्थित हुए

1.	श्रीमती ए धनवंती चंदीला ए	16.	श्रीमती प्रमिला धीरज टोकस
2.	श्री अभय वर्मा	17.	श्री प्रकाश जारवाल
3.	श्री अनिल कुमाार बाजपेयी	18.	श्री रघुविंदर शौकीन
4.	श्री अजय कुमार महावर	19.	श्री राजेश गुप्ता
5.	सुश्री भावना गौड़	20.	श्री राज कुमार आनंद
6.	श्री हाजी युनूस	21.	श्रीमती राजकुमारी ढिल्लों
7.	श्री करतार सिंह तंवर	22.	श्री रोहित कुमार
8.	श्री कुलदीप कुमार	23.	श्री शरद कुमार चौहान
9.	श्री महेंद्र गोयल	24.	श्री संजीव झा
10.	श्री मुकेश अहलावत	25.	श्री सोम दत्त
11.	श्री नरेश बाल्यान	26.	श्री सोमनाथ भारती
12.	श्री नरेश यादव	27.	श्री सही राम
13.	श्रीमती प्रीति जितेंद्र तोमर	28.	श्री एस के बग्गा
14.	श्री प्रलाद सिंह साहनी	29.	श्री विनय मिश्रा
15.	श्री प्रवीण कुमार	30.	श्री वीरेंद्र सिंह कादियान

31.	श्री अजेश यादव	43.	श्री जितेंद्र महाजन
32.	श्री अखिलेश पति त्रिपाठी	44.	श्री मदन लाल
33.	श्री अजय दत्त	45.	श्री मोहन सिंह बिष्ट
34.	सुश्री आतिशी	46.	श्री ओमप्रकाश शर्मा
35.	श्री अमानतुल्ला खान	47.	श्री पवन शर्मा
36.	श्री अब्दुल रहमान	48.	श्री ऋतुराज गोविंद
37.	श्रीमती बंदना कुमारी	49.	श्री राजेश ऋषि
38.	श्री बी एस जून	50.	श्री शोएब इकबाल
39.	श्री धर्मपाल लाकड़ा	51.	श्री शिव चरण गोयल
40.	श्री दिनेश मोहनिया	52.	श्री सौरभ भारद्वाज
41.	श्री गिरीश सोनी	53.	श्री विजेंद्र गुप्ता
42.	श्री जय भगवान		

दिल्ली विधान सभा
की
कार्यवाही

सत्र–2, शुक्रवार, 12 मार्च, 2021 / 21 फाल्गुन, 1942 (शक) अंक–13

सदन पूर्वाह्न 11.04 बजे समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय (श्री राम निवास गोयल) पीठासीन हुए।

माननीय अध्यक्षः सभी माननीय सदस्यों का हार्दिक स्वागत।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः विशेष उल्लेख, 280। अजय दत्त, श्री अजय दत्त जी, नहीं हैं। नरेश यादव जी, नहीं हैं। मुकेश अहलावत जी।

विशेष उल्लेख (नियम–280)

श्री मुकेश अहलावतः सभापति महोदय आपने मुझे 280 रूल में बोलने का मौका दिया, धन्यवाद आपका। सभापति एक सिटी और मतलब एक कंट्री को हम साफ सुथरा और अच्छा तभी बना पायेंगे जब वहां की सड़कें अच्छी हों। मेरी सुल्तानपुरी विधान सभा का नक्शा बहुत अच्छा बनाया गया है परंतु, हर गली के, हर गली के साथ तो पार्क है, हर गली के साथ सड़क है, ऐसा नक्शा बनाया परंतु अतिक्रमण के कारण से वो सारा का सारा करा–कराया खराब हो रहा है। तो मेरी आपसे विनती है कि अतिक्रमण के लिए थोड़ा सा ध्यान दिया जाए। क्योंकि मैंने अभी स्टडी की कि बहुत से भू–माफिया हैं जो कब्जे करवाते हैं और उसके बाद वो उनको बेच देते हैं और बेचने से पहले क्या करते हैं, एमसीडी का चालान कटवाते हैं, फिर बिजली के मीटर लग जाते हैं, फिर उसके बाद बेच देते हैं। अब ये एक तरीके से गोरखधंधा हो रहा है तो मैं चाहता हूं कि एक विधान सभा में कोई बिल पास किया जाए या कोई नियम बनाया जाए, जिससे जितनी भी हमारी सड़कें हैं उनपर कंट्रोल किया जाए ताकि उन पर अतिक्रमण न हो पाये। मुझे ये नहीं समझ आता कि उन लोगों

के बिजली के मीटर कैसे लग जाते हैं, पानी के मीटर कैसे लग जाते हैं, उन लोगों को पावर ऑफ अटॉर्नी भी मिल जाती हैं। तो अब ये कोई नियम बनाया जाए कि पॉवर ऑफ अटॉर्नी भी न मिले, वोटर कार्ड भी न मिले, आधार कार्ड भी न बने और इनको बिजली के मीटर भी न लगे जिससे हमारी दिल्ली अच्छी हो सकती है। और मैंने कई बार डीसीपी, एसीपी, डीएम और कई अफसरों से जॉइंट मीटिंग भी की है लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। तो मेरी आपसे विनती है कि आप इस पर ध्यान दें। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः अखिलेश पति त्रिपाठी जी(अनुपस्थित), विशेष रवि जी(अनुपस्थित), अनिल कुमार बाजपेयी जी(अनुपस्थित), महेन्द्र गोयल जी(अनुपस्थित), श्रीमती राजकुमारी ढिल्लों जी।

श्रीमती राजकुमारी ढिल्लोंः माननीय अध्यक्ष जी, आपने मुझे 280 पर बोलने के लिए समय दिया, मैं आपका तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हूं। अध्यक्ष जी, मेरी विधान सभा में मायापुरी जे.जे.कलस्टर, फेस–2, रिवाड़ी लाइन के किनारे पर झुग्गियां बसी हुई हैं तकरीबन 15 से 20 हजार। लेकिन एक बहुत पुरानी समस्या जो अभी जनता को बहुत ही दुखी कर रही है साथ में बार–बार सभी लोग मेरे दरवाजे पर आकर मुझे बोलते रहते हैं लेकिन अध्यक्ष जी, मैं आपको बताना चाहती हूं कि मैं बहुत मजबूर हूं और ये समस्या प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। वहां पर झुग्गियों के बीचो–बीच एक 4 फुट चौड़ा नाला है जिसमें कि जो हमारा डीयूएसआईबी डिपार्टमेंट है वो ये कहता है कि 4 फुट से कम चौड़े नाले, नालियां हम बनाते हैं, खडंजे बनाते हैं, जीएससी बनाते हैं लेकिन 4 फुट से ऊपर, 5 या 6 फुट का जो भी चौड़ा नाला है डीयूएसआईबी में वो हम लोग नहीं बनवाते। तो ये नाले के लिए मैं बार–बार मैं रिक्वेस्ट करती आ रही हूं, इवन मैंने डीयूएसआईबी में सीनियर अधिकारी से बात की है। तो ये समस्या बहुत ही गम्भीर है। लोग वहां रहते हैं। दिल्ली सरकार उनको सारी फैसलिटी दे रही है, जीएससी दे रहे हैं, खडंजे दे रहे हैं और उनको लाइट्स दे रहे हैं, पानी दे रहे हैं, बिजली दे रहे हैं। लेकिन उनकी झुग्गियों में जो नाला टुटा हुआ है वो उसके ऊपर से सारा पानी निकल कर उनकी झुग्गियों में जा रहा है जिससे कि वो नाले का जो पानी है वो बाल्टियों से निकाल कर और civil का जो

मेन hole है उसमें डालते हैं। तो सर आपसे मेरा हाथ जोड़कर निवेदन है कि जो ये झुग्गी झोपड़ी कलस्टरवासी जो लोग हैं उनको इस परेशानी से निजात दिलवाई जाए। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः वीरेंद्र सिंह कादियान जी।

श्री वीरेंद्र सिंह कादियानः माननीय अध्यक्ष जी, आपकी अनुमति से 280 के तहत मैं कहना चाहूंगी कि देशभक्ति बजट को बहुत ही सराहना मिल रही है और सरकार के इस कदम से जनता इनकी बहुत ही तारीफ कर रही है और साथ ही साथ मैं इसमें कुछ और जोड़ने के लिए निवेदन करना चाहूंगा। दिल्ली एक्स–सर्विसमैन एसोसिएशन और अन्य पूर्व सैनिक संगठनों ने देशभक्ति बजट से प्रेरित होकर एक सुझाव दिया है कि जिस प्रकार से बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर और शहीद भगत सिंह जी के बारे में पाठ्यक्रम और उनके बारे में, उनके जीवन के बारे में पढ़ाकर राष्ट्रभक्ति उत्पन्न करने में हमारे देशवासियों को प्रोत्साहन मिलेगा, उसी प्रकार जो सैनिक, हमारे देश के सैनिक अपनी मातृभूमि की रक्षा करते समय अपने प्राणों की परवाह किये बगैरह देश पर न्यौछावर हो गये और राष्ट्र का सर्वोत्तम युद्ध मेडल, अवार्ड जो परमवीर चक्र के रूप में उन्हें नवाजा गया, उन परमवीर चक्र विजेताओं की दिल्ली के सरकारी स्कूलों में एक फोटो गैलरी बनाकर, उस फोटो गैलरी में इन war heroes, युद्ध विजेताओं, वीरों की फोटो प्रतिमा लगाकर बच्चों को सेना के प्रति और हमारे वीर जो देश की सीमाओं की रक्षा करते हुए शहीद हुए हैं और अपनी बहादुरी का परिचय दिया है, उनको पढ़कर हमारे छात्रों में सेना के प्रति, देश के प्रति राष्ट्रभक्ति की भावना पैदा होगी। मैं ये निवेदन करना चाहूंगा कि इसको भी इस पाठ्यक्रम में जोड़ा जाए।

इसके अलावा पूर्व सैनिक संगठनों ने और बहुत से मेरे जो साथी हैं उन्होंने मांग की है कि जैसे अन्य राज्यों में जिला सैनिक बोर्ड होते हैं परंतु दिल्ली में सिर्फ एक ही बोर्ड है, राज्य सैनिक बोर्ड, आई.एस.बी.टी. बस अड्डे पर है। जिला सैनिक बोर्ड भी यहां दिल्ली में बने ताकि पूर्व सैनिकों को बहुत सी चीजों के लिए एक्स–सर्विसमैन जो हमारे यहां पर दिल्ली में हैं, खासकर पालम, नजफगढ़, द्वारका, शाहदरा और जहां–जहां पर अधिक मात्रा में पूर्व सैनिक रहते हैं उनको इन जिला सैनिक बोर्डों की

सुविधा का लाभ मिले। ये भी सभी जिलों में, जहां पर एक्स–सर्विसमैन की अधिक पापुलेशन है, वहां पर स्थापित किये जाए।

हमारे पूर्व सैनिक, इनके लिए इ.सी.एच.एस, एक्स–सर्विसमैन कंट्रीब्यूटरी हेल्थ सर्विस की सुविधा प्राप्त है परंतु राज्य सरकार और केंद्र सरकार मिलकर इ.सी.एच. एस सेंटर हर जिले में अन्य राज्यों में खोले हुए हैं, यहां पर दिल्ली में बेस हॉस्पीटल और एक लोधी रोड पर और अभी एक शाहदरा में खुला है। तो मैं ये चाहूंगा कि एक नजफगढ़, द्वारका और जहां पर भी हमारे एक्स–सर्विसमैन की संख्या अधिक हैं, पापुलेशन अधिक रहती हैं वहां पर इ.सी.एच.एस सेंटर खोले जाए और जिला सैनिक बोर्ड खोले जाए ताकि हमारे पूर्व सैनिक भाइयों को जिन्होंने अपने जीवन की जो जवानी सेना में सेवा करते समय बॉर्डरों पर गुजार दी, उन सैनिक भाइयों को और उनके परिवारों को इन सुविधाओं का लाभ मिले। आपने मुझे 280 में बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका धन्यवादी हूं। जय हिंद।

माननीय अध्यक्षः ओम प्रकाश शर्मा जी।

श्री ओमप्रकाश शर्माः धन्यवाद। आदरणीय अध्यक्ष जी, वैसे तो ये जो आज मेरा विषय है मैं कल कह चुका हूं लेकिन पुनः क्योंकि 280 में ये आया है तो मैं इसका लाभ लेना चाहता हूं। मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि दिनांक 9 मार्च, 2021 को सदन में माननीय वित्तमंत्री जी कह रहे थे कि दिल्ली में कुल 1,40,000 सी.सी.टी.वी. कैमरे लगाए गए हैं, यानी कि पहला फेस आपने खत्म कर दिया है। अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी को बताना चाहता हूं कि मेरी विधान सभा क्षेत्र विश्वास नगर, विधान सभा क्षेत्र–59 में एक भी सी.सी.टी.वी. कैमरा नहीं लगाया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार विपक्षी दलों के विधायकों के साथ सौतेला व्यवहार कर रही है। सरकार के दावे के अनुसार जहां पूरी दिल्ली में इतनी बड़ी संख्या में सी.सी.टी.वी. कैमरे लगाये गये हैं तो कुछ सी.सी.टी.वी. कैमरे विश्वास नगर विधान सभा क्षेत्र में भी लगने चाहिए थे। हमारे विधान सभा क्षेत्र की जनता भी दिल्ली सरकार की योजनाओं का लाभ उठाने की बराबर की हकदार है। अध्यक्ष जी, आपके माध्यम से मंत्री महोदय जी से मैं अनुरोध करता हूं कि मेरी विधान सभा क्षेत्र में भी सी.सी.टी.वी. कैमरे लगाये जाए।

और इसके अलावा जो रिसर्च फैलो की हम बात करते हैं, आज तक कोई भी रिसर्च फैलो मुझे नहीं दिया गया है। सी.एम. सड़क योजन का एक रुपया भी मेरी विधान सभा में खर्च नहीं हुआ है। अर्बन विलेज का जो फंड 2 करोड़ रुपया हर गांव का होता है, वो भी एक रुपया भी हमारी विधान सभा में खर्च नहीं किया गया है। इसके अलावा पिछली साल आपने करीब 20 विधान सभाओं में अलग से एक्सट्रा फंड देकर वहां पर एक नया प्रयोग किया था, उसमें भी हमारी विधान सभा नहीं आई। तो मैं बार–बार आपके माध्यम से सरकार को ये कहना चाहता हूं कि पक्ष, विपक्ष, राष्ट्रवाद और अनेकों–अनेक जब आप बात करते हैं तो ये जरूरी है कि, पक्ष की ये जिम्मेदारी बनती है कि आप हमारी बातों से सहमत हों या असहमत हों लेकिन हमारे अधिकारों की रक्षा करना ये पक्ष का भी काम है और स्पीकर साहब आपका भी काम है। तो मैं ये समझता हूं कि आप इन चीजों पर ध्यान देंगे और जल्द से जल्द जो काम पूरी दिल्ली में हो रहा है वो हमारे क्षेत्रों में भी होगा। धन्यवाद।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्यों से मैं प्रार्थना कर रहा हूं, साहनी जी,

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः साहनी जी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः दो मिनट, दो मिनट।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः भई आपसी बातचीत नहीं साहनी जी, प्लीज। प्लीज।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः प्लीज। मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूं 6 साल हो गये हैं लेजिस्लेशन के प्रति हमारी अभी संवेदना जागी नहीं है। कृपया मेरी बहुत

करबद्ध प्रार्थना है, नम्र निवेदन है इसको जगाये। आज अभी 10 में से 6 सदस्य यहां उपस्थित नहीं थे, जिनके 280 लगे हैं। देर से आये हैं, मैं उनके नाम ले रहा हूं...

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः देख लिया है मैंने बाजपेयी जी, देख लिया है। श्री अजय दत्त जी।

श्री अजय दत्तः धन्यवाद अध्यक्ष जी, आपने मुझे मेरे क्षेत्र के बहुत ही महत्वपूण र्ण मुद्दे पर बोलने का मौका दिया। अध्यक्ष जी, अंबेडकर नगर में अभी कुछ समय पहले माननीय मुख्यमंत्री– अरविंद केजरीवाल जी ने एक 600 बेड के हॉस्पीटल का निर्माण करवाया और उसको कोरोना को समर्पित करके उसकी ओपनिंग की। और उसी के साथ एक बहुत बड़ा एकमात्र पार्क है जिसे हम विराट का पार्क कहते हैं जो डीडीए की प्रॉपर्टी के अंतर्गत आता है जोकि हॉस्पीटल के साथ सटा हुआ है और हॉस्पीटल को चलाने के लिए एक्सट्रा जगह की जरूरत है और जिसके लिए मैंने डीडीए को लिखा और हेल्थ डिपार्टमेंट ने भी डीडीए को लिखा और यकायक पिछले 3 महीने पहले उस पार्क में एक उत्सव स्थल बनाना शुरू कर दिया गया। जब मैंने डीडीए से जानना चाहा कि ये उत्सव स्थल क्यूं बनाया जा रहा है तो उन्होंने कहा कि ये डीडीए की पॉलिसी के तहत हम यहां उत्सव स्थल बना रहे हैं और जिसकी कोई आवश्यकता नहीं है। एक तरीके का बारात घर है जिसका किराया कम से कम 50 हजार के आसपास ये लोग लेंगे और जिसकी कोई आवश्यकता नहीं है। फिर मैंने और तहकीकात की तो पता चला कि किसी भी हॉस्पिटल के 100 मी. की दूरी तक कोई भी ऐसा संस्थान या नॉयस पॉल्यूशन या शोर शराबे जैसी कोई स्थिति या कोई भवन का निर्माण नहीं होना चाहिए। ये डिटेल मैंने माननीय एलजी साहब को भेजी, मैंने डीडीए के चेयरमैन, वाईस चेयरमैन को भेजी, अनुराग जैन जी को और चीफ इंजीनियर को भी भेजी और मैंने उनसे रिक्वेस्ट की कि भई आप इसको न बनाएं। तो मैंने एलजी साहब को 3 बार पत्र लिखा, उनसे मैंने टाईम मांगा। मैंने उनसे कहा कि एलजी साहब आप कम से कम वीडियो कांफ्रेंसिंग पर बात कर लीजिए क्योंकि ये जनता के हित का मामला है, ये अस्पताल का मामला है और दिल्ली सरकार के

अस्पताल के विभाग ने ये भी लिखकर दिया कि उनको रेजीडेंट डाक्टर के लिए वहां पर फ्लैट्स बनाने हैं, पार्किंग बनानी है और ये 600 बैड का हॉस्पिटल जब चलेगा तो करीबन 5 से 6 हजार लोग इस 600 बेड के हॉस्पिटल में आयेंगे तो इसलिए यहां पर उत्सव स्थल न बनाया जाए। लेकिन माननीय एलजी साहब ने वो बार बार कहते हैं कि दिल्ली सरकार मेरी सरकार है और उन्हें दिल्ली सरकार के विधायक से 5 मिनट मिलने का समय नहीं था। मैंने कई बार उनके पीए को लिखा, बताया, एलजी साहब को लिखा, बताया लेकिन मुझे कोई जवाब नहीं मिला और मैं इससे बहुत आहत हूं और मैं एलजी साहब को आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि अंबेडकर नगर में कई लाख लोग रहते हैं उनके लिए हॉस्पिटल बन रहा है, पूरी साउथ दिल्ली के लिए हॉस्पिटल बन रहा है तो क्या ये उत्सव स्थल बनाना जरूरी है जो कि अम्बेडकर नगर के लोगों को नहीं चाहिए? मेरे यहां बहुत सारे बारात घर हैं वो खाली पड़े रहते हैं, 17–17 हजार के बारात घरों को लोग बुक नहीं करते हैं और आप 50 हजार का बारात घर बना रहे हैं जिसकी आवश्यकता नहीं एकमात्र पार्क आप बंद कर रहे हैं जिसकी आवश्यकता नहीं है।

माननीय अध्यक्षः हो गया अजय दत्त जी, कंप्लीट हो गया।

श्री अजय दत्तः अध्यक्ष जी, एक मिनट और लूंगा मैं अभी 5 मिनट पूरे नहीं हुए, घड़ी देख रहा हूं मैं, मेरे पास है।

माननीय अध्यक्षः 5 मिनट नहीं, जो आपने लिख के भेजा है मैं उसकी बात कर रहा हूं।

श्री अजय दत्तः एक चीज और मैं आपको बताना चाह रहा हूं। इसमें 3 लोग शामिल हैं जो इस काम को कराना नहीं चाहते। मैं वाईस चेयरमैन अनुराग जैन जी से मिला, मैं आर.पी. सिंह जो चीफ इंजीनियर हैं डीडीए के उनको मैंने बार बार पत्र लिखा, उनको फोन किया, वो तो एकदम इतने बेहूदा व्यक्ति हैं जिन्हें अपने प्रोटोकोल का, बात करने का सलीका भी नहीं है, फोन तक नहीं उठाते किसी का। इसकी शिकायत मैंने बकायदा वीसी को की। वीसी ने भी नहीं लिखा। ये 5 करोड़ रूपये का पूरा प्रोजेक्ट बना रहे हैं और मुझे पता चला है कि इसमें बहुत बड़ी धांधली भी

कर रहे हैं ये लोग। तो मैं आपके माध्यम से एलजी साहब से ये कहना चाहता हूं कि इसकी बकायदा एसीबी में, सीबीआई में, सीवीसी में जांच हो जिससे कि जो भ्रष्ट अधिकारी जबर्दस्ती बिना किसी जरूरत के ये बारात घर बनाने की कोशिश कर रहे हैं और इनमें इनकी कोई पर्सनल मंशा है और मुझे ये भी पता चला है कि उसका आवंटन भी किसी बीजेपी के नेता को इन्होंने दे दिया है। तो अध्यक्ष जी, मेरा आपसे और इस सदन के माध्यम से ये अनुरोध है कि डीडीए को तलब किया जाए, उससे पूछा जाए कि जब जरूरत नहीं है, विधायक मना कर रहे हैं, वहां की जनता प्रोटेस्ट कर रही है तो आप ये उत्सव गृह क्यों बना रहे हैं और एलजी साहब से भी मेरा अनुरोध है कि अगर आप अपनी सरकार हमें मानते हैं, अगर आप कहते हैं कि हम जब यहां खड़े हो के इतने भाषण देते हैं कि मेरी सरकार अच्छा काम कर रही है तो आप दिल्ली के एक विधायक से जो जनता के लिए लड़ रहा है, काम कर रहा है उसको क्यूं नहीं मिलना चाहते, उससे क्यूं नहीं बात करना चाहते, उसको क्यूं टाइम नहीं दे रहे, ऐसी क्या बात है। एलजी साहब को भी मेरा मैसेज आपके माध्यम से पहुंच जाए, आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का मौका दिया, धन्यवाद, जय हिन्द।

माननीय अध्यक्षः श्री नरेश यादव जी।

श्री नरेश यादवः धन्यवाद अध्यक्ष जी, जो आपने मेरी विधान सभा के महत्वपूर्ण मुद्दे को उठाने का मौका दिया। अध्यक्ष जी, मेरी विधानसभा में वसंत कुंज और साकेत दो ऐसे एरिया हैं जिसमें डी डी ए ने बिल्कुल प्लान्ड वे में उसको डेवलप किया था और मैं विशेष तौर पे साकेत की समस्या को उठाना चाहूंगा। आज अध्यक्ष जी, साकेत में जो फुटपॉथ है रोड्स के उपर उनपर पूरी तरह से एंक्रोचमेंट हो चुकी है। वहां पर केवल दो ही इंटर्नल रोड हैं एक प्रमोद महाजन रोड है और एक जे ब्लाक मार्किट रोड है लेकिन दोनों फुटपाथ पर आज बहुत ज्यादा एंक्रोचमेंट्स हैं और वहां पर सीनियर सिटिजंस को चलने में बहुत दिक्कत होती है। जब भी मैं वहां मीटिंग करने के लिए जाता हूं तो हमेशा यही मुद्दा उठता है और पिछले 4–5 साल से ये मुद्दा लगातार उठता है और जिसकी शिकायत मैं एमसीडी में भी करता हूं और वो दोनों रोड पीडब्ल्यूडी के रोड्स हैं। पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों को जब मैं बुलाता हूं तो

वो मुझे दिखाते हैं कि उन्होंने चिट्ठी लिखी है एमसीडी को और एसडीएम को, डीएम को लेकिन वहां पर धरातल पर कोई काम होता नहीं है, केवल वो चिट्ठिया दिखाते हैं। इसके अलावा अध्यक्ष जी, वहां पर एक नाला है जो साकेत के बीचोंबीच निकलता है जो बरसाती नाला है लेकिन उस बरसाती नाले में जब मैंने विजिट किया और देखा तो वहां पर बहुत ज्यादा स्मेल होती है आसपास के एरिया वालों को बहुत प्राब्लम होती है क्योंकि उस नाले के अंदर 12 महीने पानी चलता है। बरसाती नाले में 12 महीने पानी नहीं चलना चाहिए। जब उसका पता किया तो उसमें सीवर के कनेक्शंस कहीं न कहीं जोड़े हुए हैं और वो सीवर का पानी निकलता है। तो लगातार सफाई करवाने के बावजूद भी उसमें वो स्मेल नहीं जाती और वो नाले की सफाई नहीं हो पाती। इसके अलावा अध्यक्ष जी प्रेस एनक्लेव रोड है जो मैक्स हॉस्पिटल वाला रोड बोलते हैं हम उसको, उसमें ट्रैफिक जाम की भी बहुत बड़ी समस्या है तो आदरण ीय पीडब्ल्यूडी मिनिस्टर से मेरा आग्रह है कि जो प्रेस एनक्लेव रोड है इसमें कोई एलिवेटिड रोड या कोई ऐसा प्लान किया जाए जिससे कि वहां ट्रैफिक जाम की समस्या हटे और अध्यक्ष जी, इसके अलावा वहां लगभग 14 आरडब्ल्यूएज़ हैं, 14 ब्लॉक्स हैं साकेत के अंदर, वहां पर कोई भी कम्युनिटी सेंटर नहीं है ताकि कोई भी आरडब्ल्यूए अपना कोई छोटा मोटा फंक्शन कर सके या आरडब्ल्यूए की मीटिंग कर सके। वसंत कुज में काफी कम्युनिटी सेंटर्स हैं लेकिन साकेत में नहीं है जबकि वो डीडीए की ही कालोनी है जो डीडीए ने डेवलप किया था और मैं आपके माध्यम से यही रिक्वेस्ट करूंगा कि एमसीडी को निर्देश दिया जाए, कमिश्नर को निर्देश दिया जाए कि वहां पर जो इन्क्रोचमेंट्स हैं वो हटाई जाए, फुटपाथ क्लियर की जाए, पीवीआर जो बहुत ही फेमस पीवीआर साकेत बहुत पहले से एक सिनेमा हॉल फेमस होता था जब हम छोटे होते थे तब भी सुनते थे, पीवीआर मार्किट के अंदर अध्यक्ष जी पूरी मार्किट के अंदर।

माननीय अध्यक्षः हो गया नरेश जी।

श्री नरेश यादवः बहुत बुरी हालत है वहां पर। जे ब्लाक मार्किट है उसमें पूरी एंक्रोचमेंट्स हैं, बहुत बुरी हालत है। जो लोकल दुकानदार वहां पर हैं, वो दुकानदारों को जगह भी नहीं मिलती, इतना ज्यादा वहां पर एंक्रोचमेंट्स हैं। तो आपके माध्यम

से मेरा निवेदन है कि एमसीडी को निर्देश दिया जाए। मैं लगातार कोशिश कर रहा हूं लेकिन उसका कोई भी हल नहीं निकला। अन्त में अध्यक्ष जी मैं माननीय मनीष जी को जो देशभक्ति बजट है उसके लिए बहुत बहुत मुबारकबाद और धन्यवाद देना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्षः बजट पर, बजट पर बोलना न।

श्री नरेश यादवः और ये ऐसा बजट है जो 30 हजार करोड़ से हमारी सरकार एक ईमानदार स्टार्ट हुई आज 69 हजार करोड़ तक पहुंची है तो केवल ईमानदार सरकार ही ये सब कर सकती है उसके लिए माननीय मनीष जी, माननीय सीएम साहब अरविंद जी को मैं बहुत बहुत धन्यवाद कहता हूं और मैं बहुत ही गौरव महसूस करता हूं कि मैं इस सरकार का हिस्सा हूं और बहुत बहुत धन्यवाद अध्यक्ष जी, जय हिन्द।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, धन्यवाद। अखिलेश पति त्रिपाठी जी।

श्री अखिलेश पति त्रिपाठीः धन्यवाद अध्यक्ष जी, सबसे पहले मैं कुछ बोलूं इस ऐतिहासिक बजट के लिए माननीय उप मुख्यमंत्री जी को मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूं कि न केवल आपने देशभक्ति बजट प्रस्तुत किया है अपितु विपक्ष को बड़े गाढ़े संकोच में डाल दिया कि इस बजट का कैसे विरोध करेंगे। मैं इसके लिए धन्यवाद करता हूं और युवाओं की तरफ से धन्यवाद देना चाहता हूं जिनके सपनों को मजबूत पंख दिए हैं आपने। दिल्ली के तमाम छात्रों की तरफ से आपको बहुत बहुत धन्यवाद जिनके लिए आपने देश में पहली बार दिल्ली में अच्छी खेल नीति बनाने का काम किया और इस बजट में खेल के लिए एक पिटारा खोलने का काम किया है। मैं अब अपने मुद्दे पर आता हूं। अध्यक्ष जी, मेरी विधान में राजपुरा, गुड़मंडी, प्रियदर्शिनी विहार, संगम पार्क, शक्ति नगर, मॉडल टाउन, डेरावाला नगर, गुजरांवाला टाउन, सी सी कॉलोनी में पिछले 10 दिनों से पानी की बहुत समस्या चल रही है। जब मैंने इसके बारे में पता किया अधिकारियों से तो उन्होंने बताया कि यमुना में पानी कम होने की वजह से पानी की सप्लाई पूरे तरीके से नहीं हो पा रही है। मैंने उनके उपर के अधिकारियों से संपर्क किया चीफ इंजीनियर वगैरह से तो उन्होंने कहा कि

हरियाणा से जो पानी आता है वो जितनी मात्रा में आनी चाहिए यमुना में वो नहीं आ रहा है जिसकी वजह से तकरीबन साढे 4 फुट यमुना का जलस्तर गिर गया है और ये पानी की समस्या केवल आपके क्षेत्र में नहीं है बल्कि दिल्ली के बड़े क्षेत्र में जो वजीराबाद प्लांट से अलग अलग क्षेत्र में जहां पर भी पानी की सप्लाई होती है पूरी दिल्ली में दिक्कत हो रही है। अध्यक्ष जी, अभी गर्मियों की शुरूआत भी नहीं हुई है और कहीं राजनीतिक विद्वेष के कारण अगर कोई प्रदेश इस तरीके का खेल खेले किसी प्रदेश के साथ तो ये बहुत दुर्भाग्य का विषय है। अतः मैं आपके संज्ञान में डालना चाहता हूं कि इस विषय में आप वहां की सरकार को अवगत कराएं और एक चीज और कि लगातार वजीराबाद प्लांट साल के अलग अलग हिस्सों में मैंने देखा है कि आए दिन ये सूचना आती है कि महीने में 4 दिन वजीराबाद प्लांट बंद हो गया। पता करते हैं कि भई क्यों बंद हो गया बोले जी अमोनिया आ गया जी, मैंने कहा अमोनिया कहां से आ गया, बोले हरियाणा से औद्योगिक रसायन छोड़ दिया गया। इसकी वजह से यमुना में पानी की क्वालिटी बुरे तरीके से खराब हो गयी और उसको फिल्टर करना संभव नहीं है इसलिए उत्पादन बंद कर दिया गया और पानी नहीं मिल पा रहा लोगों को। अध्यक्ष महोदय, इस तरीके से अगर राजनीतिक विद्वेष से काम होगा तो दिल्ली सरकार ने जो मिसाल पेश की है काम करने का चाहे शिक्षा हो, स्वास्थ्य हो, बिजली हो, पानी हो उसमें कहीं न कहीं पलीता लगाने की कोशिश हो रही है अध्यक्ष महोदय। अध्यक्ष महोदय, मेरी विधान सभा का केवल पार्क यूजीआर वजीराबाद प्लांट के टेल एंड पर पड़ता है। अगर 10 परसेंट पानी का उत्पादन प्रभावित होता है तो मेरे विधान सभा में 30 परसेंट पानी की कमी हो जाती है। इसी तरीके से कमला नगर, रूप नगर, शक्ति नगर का, घंटा घर का एरिया जो हमारा आता है गुलाबी बाग का। उधर जीतगढ़ पहाड़ी से यूजीआर से पानी आने का काम होता है मेरी विधान सभा में। अध्यक्ष महोदय, पानी की इतनी कमी हो गयी है वो भी मेरा एरिया जीतगढ़ पहाड़ी यूजीआर के टेल एंड में पड़ता है। तो मैंने अधिकारियों से बात की कि इसका समाधान क्या हो सकता है? तो उन्होंने बताया कि बहुत सालों पहले आज से 8–10 साल पहले 15 साल पहले इस तरीके की समस्या के समाधान के लिए ऑनलाइन बूस्टर का एक प्रोविजन किया गया था। टेलएंड पर जो विधान सभाएं हैं उसपर बूस्टर लगा कर इसका समाधान किया जा सकता है ताकि अंतिम छोर तक पानी प्रेशर से पहुंच जाए।

माननीय अध्यक्षः अखिलेश जी कंक्ल्यूड करिए।

श्री अखिलेश पति त्रिपाठीः तो मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं माननीय चेयरमैन साहब बैठे हुए हैं जल बोर्ड के, मंत्री जी हमारे कि मेरी विधान सभा में कम से कम दो जगह ऑनलाइन बूस्टर अलाऊ कर दें ताकि टेलएंड होने के नाते एक एक जगह पर पानी पहुंच पाए, मैं ऐसा निवेदन करता हूं और फिर से कहना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी के हमारे सदस्य बैठे हुए हैं, आइए मिलकर कुछ प्रयास करिए कि राजनीतिक विद्वेष के तहत जो है इस तरीके की घटनाएं जो की जा रही हैं यमुना पर पानी छोड़ने का काम जो है विद्वेष के साथ कम छोड़ा जा रहा है या उसमें अमोनिया छोडा़ जा रहा है वो बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है, इसकी सूचना दी जाए और साथ साथ अभी साहनी साहब कह रहे थे कि दिल्ली पॉल्यूशन कंट्रोल कमेटी के लोगों को वहां भेजने की जरूरत है ताकि वे जाकर देखें कि हरियाणा के जो भी उद्योग रसायन छोड़ रहे हैं, उन पर सख्त से सख्त कार्रवाई की जाए ताकि अमोनिया का स्तर यमुना के पानी में कम हो सके और वजीराबाद प्लांट सही से चल पाए और पानी सबको मिलता रहे। बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, विशेष रवि जी। श्री अनिल कुमार बाजपेयी जी।

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः माननीय अध्यक्ष जी मैं आपका धन्यवाद करना चाहता हूं। अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय हमारे श्री कैलाश गहलौत जी का ध्यान एसडीएम ऑफिस गांधी नगर को नंद नगरी से गांधी नगर वापिस लाने की ओर दिलाना चाहता हूं। कांग्रेस शासन के दौरान राजनीतिक दबाव में गांधी नगर से एसडीएम ऑफिस को नंद नगरी में शिफ्ट कर दिया गया था और उस समय आरडब्ल्यूए और सभी लोग जब तत्कालीन मुख्यमंत्री शीला दीक्षित से मिले थे उस समय उन्होंने ये आश्वासन दिया था कि गांधी नगर एसडीएम ऑफिस को नंदनगरी से वापस गांधी नगर में लाया जाएगा। उनकी सरकार चली गई आम आदमी पार्टी की सरकार आ गई। मैं पिछले 5 वर्षों से ये मुद्दा उठाता आ रहा हूं। माननीय अध्यक्ष जी मैंने इसी विधान सभा के पटल पर दो बार ये मुद्दा यहां पर रखा था। माननीय मुख्यमंत्री जी व माननीय श्री कैलाश गहलोत जी से मैंने व्यक्तिगत

रूप से कई संगठनों के साथ मिलकर भी इस बात की प्रार्थना उनसे की थी। दोनों लोगों ने मुझे ये आश्वासन दिया था लेकिन आज तक नहीं हुआ। अध्यक्ष जी एसडीएम इलैक्शन ऑफिस हमारा ईस्ट डिस्ट्रिक में आता है कि एसडीएम इलैक्शन गांधी नगर है। डूडा का सारा काम जो एमएलए फंड से हुआ है वो सारा का सारा हमारा डिस्ट्रिक ईस्ट से हुआ है। फिर भी एसडीएम ऑफिस नंदनगरी में क्यों? अध्यक्ष जी एसडीएम ऑफिस में मेरी विधान सभा की जनता को गांधी नगर से नंद नगरी जाना पड़ता है जो 7 किलोमीटर की दूरी पर है और कोई सीधी ट्रॉस्पोर्टेशन की सुविधा लोगों के लिए गांधी नगर से नंदनगरी के लिए नहीं है। जिन लोगों को इनकम सर्टिफिकेट, जिन लोगों को मकान की रजिस्टरी, जिन लोगों को मैरिज सर्टिफिकेट बनवाना हो उनको काफी परेशानी होती है। अगर कोई आदमी वहां गया किसी के कागज में कमी है तो सर उसको वापस लौटा दिया जाता है। अंत में वो आदमी परेशान हो जाता है। अध्यक्ष जी मैं आपके माध्यम से जनता की भावनाओं को देखते हुए अनुरोध करता हूं कि गांधी नगर की जनता की जायज मांग को देखते हुए दलगत राजनीति से ऊपर उठते हुए एसडीएम ऑफिस को नंदनगरी से पुनः गांधी नगर वापस लाया जाए। माननीय अध्यक्ष जी मैं आपको ये भी बता देना चाहता हूं कि माननीय कैलाश गहलोत जी से मेरी बात हुई थी उन्होंने मुझे ये आश्वासन दिया था कि सारा कुछ पास हो गया है केवल ये मामला कैबिनेट में लगना है, तो मेरा अनुरोध है माननीय कैलाश गहलौत जी से, मंत्री जी से कि वो हमारी याचना को स्वीकार करें और हमारी मदद करें और मेरी विधान सभा नहीं, आदरणीय जी माननीय बग्गा जी यहां बैठे हैं विधायक कृष्णा नगर इनका भी कुछ क्षेत्र उनके लोगों को भी वहां जाना पड़ता है। विश्वास नगर के लोग हैं इनको भी वहां जाना पड़ता है और कई बार बोर्ड की मीटिंग गांधी नगर में बुलाई जाती है, चाहे वो दिशा की हो और चाहे वो डीएम ऑफिस की हो। तो जब सबकुछ गांधी नगर में है तो फिर नंदनगरी में एसडीएम ऑफिस क्यों? मैं पुनः अध्यक्ष जी आपसे सदन में हाथ जोड़ के अनुरोध करता हूं कि आपका बगल वाला क्षेत्र है और गांधी नगर से आपका बहुत गहरा रिश्ता रहा है कि इस जायज समस्या को देखते हुए आप व्यक्तिगत तौर पे भी रूचि लेकर नंदनगरी से गांधी नगर में हस्तांतरित कराने की कृपा करें, बहुत–बहुत आभार, बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः श्री महेंद्र गोयल जी।

श्री महेंद्र गोयलः धन्यवाद अध्यक्ष जी जो आपने मुझे बोलने का मौका दिया। रामराज्य की अवधारणा करते हुए देशभक्ति का बजट पेश किया गया। देश के अंदर सुरक्षा हो, हर क्षेत्र के अंदर सुरक्षा हो उसी मुद्दे के तहत, मेरे यहां पर एक सैक्टर–11 है जिसके अंदर चोरी की, डकैती की, खूनखराबे की घटनाएं बार–बार घटती रहती हैं क्योंकि उस एरिये का थाना, उस एरिये से 5 किलोमीटर दूर शाहबाद डेरी के अंदर है, जबकि पहले प्रशांत विहार के अंदर ये थाना लगता था । हमारी डिमांड पहले भी रहती थी के.एन.काटजू जब 100 मीटर की दूरी के ऊपर वो थाना स्थित है तो के एन काटजू के अंदर उसका एरिया लगना चाहिए। के एन काटजू में नहीं लगा सकते तो साथ में ही सैक्टर–5 का थाना है जो बुद्ध विहार के थाने के नाम से है उसके अंदर लग जाना चाहिए। तो मेरा आपके माध्यम से पुलिस कमिश्नर साहब को, एल जी साहब को, हमारे लॉ मिनिस्टर साहब को यही अनुरोध है कि सुरक्षा की दृष्टि से शाहबाद डेरी की बजाए थाना के एन काटजू मार्ग में जाना चाहिए क्योंकि शाहबाद डेरी का एरिया वैसे भी एक बहुत बड़ा एरिया है और वहां पर इतनी व्यवस्थाएं भी नहीं है और बहुत एरिया उसमें खुला पड़ता है जहां पर चोरी डकैती की घटनाएं हर रोज घटती रहती है। तो बहुत ज्यादा न कहते हुए सिर्फ क्षेत्र की जनता की जनता की तरफ से सैक्टर–11 वालों की जनता की तरफ से मैं बार–बार हाथ जोड़कर आग्रह कर रहा हूं कि ये थाना के एन काटजू मार्ग में या दोबारा प्रशांत विहार में या सैक्टर–5 के अंदर या सैक्टर–7 के अंदर इस थाने को लगा दिया जाए ताकि वहां के जनता के अंदर जो डर–भय का माहौल है वो दूर हो और वे अपने आपको सुरक्षित महसूस करें यही मैं चाहता हूं, जयहिन्द जय भारत।

माननीय अध्यक्षः प्रमिला टोकस जी।

श्रीमती प्रमिला धीरज टोकसः धन्यवाद अध्यक्ष जी। अध्यक्ष जी आर के पुरम विधान सभा क्षेत्र में कुछ समय से बी जे मार्ग पर सत्यनिकेतन कालोनी के पास अंडर पास का कार्य चल रहा है जिससे स्थानीय निवासियों को खास दिक्कतें आ रही हैं। कृपया इस कार्य को जल्दी से जल्दी करवाने की कृपा करें क्योंकि इसको

काफी समय हो गया चलते–चलते और आर टी आर फलाई ओवर का जो एलीवेटिड कॉरीडोर है उसकी दोंनों तरफ मुनिरका से वसंत विहार के आर आर हॉस्पिटल तक 82 कॉलोनी हैं। यहां रहने वाले इस रोड से गुजरने वाले वाहनों से होते ध्वनि प्रदूषण से प्रभावित हो रहे है। कृपया इस कॉरीडोर के दोनों ओर ध्वनि नियंत्रण तकनीक की सीट लगाई जाए ताकि उन लोगों को इसका, ध्वनि प्रदूषण न सहन करना पड़े। मेरी आपसे विनम्र निवेदन है कि आर आर हॉस्पिटल से वसंत विहार तक फुटओवर ब्रिज बनाने की बहुत जरूरत है क्योंकि वहां पे सैक्टर–8 में केंद्रीय विद्यालय है, सैक्टर–7 में हमारा सरकारी स्कूल है, मलाई मंदिर है और उसमें मार्केट लगती है और वहां पर फुटओवर ब्रिज बिल्कुल भी नहीं है जहां श्रद्धालु वहां पर मंदिर में जाते हैं, हमारे स्कूल के बच्चे हैं वो रोड पार करके स्कूल जाते हैं और जो हमारी माताएं हैं, जो बहनें है वो रोड क्रॉस करके मार्किट जाती हैं तो मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि वहां पर फुटओवर ब्रिज बनाया जाए और एसडीएमसी में हमने अपने विधायक निधि से फंड दिया था 5 साल हो गए अभी तक उन्होंने काम पूरे नहीं किए हैं। मैं यही इस सदन से जानना चाहती हूं कि अभी तक काम पूरे क्यों नहीं हुए और ये काम कब तक पूरे होंगे और जब कोरोना था, जब लॉकडाउन लगा हुआ था उस टाइम पर एसडीएमसी ने पीडब्ल्यूडी के रोडों पर मोबाईल टावर लगाए गए, जहां पर ग्रीनरी थी, ग्रीनरी को खराब करके कंक्रीट डालकर वहां पर मोबाइल टावर लगाए गए। किस नियम के तहत एमसीडी ने वहां पर वो टावर लगाए गए, किस नियम के तहत बीएसईएस ने उनको कनैक्शन दिया और ऐसी क्या जरूरत हुई कि लॉकडाउन में ये मोबाइल टावर वहां पर लगाने पड़े। तो मैं इस सदन से मांग करती हूं कि इस विषय पर कार्रवाई हो और जिसने भी ये काम किया है उसपर सख्त कार्रवाई की जाए ताकि हमने जो ग्रीनरी की है पीडब्ल्यूडी के रोडों पर उसको खराब न किया जाए, बहुत–बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, संजीव झा जी।

श्री संजीव झाः बहुत–बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय कि आपने मुझे नियम 280 में अपने क्षेत्र की समस्या रखने का मौका दिया। अध्यक्ष महोदय मैं आपके माध्यम से अपने खाद्य आपूर्ति मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। चूंकि हमारे यहां

अनओथराइज कालोनी है और राशन कार्ड होल्डर्स ज्यादा हैं। मुझे लगता है कि पूरी दिल्ली में एकमात्र ऐसी विधान सभा है जहां अभी–भी 12 हजार राशन कार्ड पेंडिन्ग है। मैंने अपने एफएसओ से पूछा कि पिछले 3 महीने में कितने राशन कार्ड आपने बनाए हैं, उसने बताया कि 3 महीने में केवल 15 राशन कार्ड बनें हैं। अभी भी वहां पूरी दिल्ली में सबसे ज्यादा, लगभग 52 हजार राशन कार्ड होल्डरस हैं। लेकिन वहां एक इंस्पैक्टर नहीं है। दो विधानसभा को एक एफएसओ देख रहा है। तो ऐसे में हमारे क्षेत्र में जब मैं अपने ऑफिस में बैठता हूं तो सैकड़ों की संख्या में लोग अपनी राशन की समस्याओं को लेकर आ रहे हैं और बहुत ही अजीबो–गरीब स्थिति हमारे ऑफिस में रहता है। मैं आपके माध्यम से यही निवेदन करना चाहता हूं कि इस पर संज्ञान लेकर उस पर ठोस कार्रवाई करें ताकि राशन कार्ड जो पेंडिन्ग हैं कमोबेश वो बने, उसके बाद ही कुछ अप्लाई हो पाएगा। और एक ओर बात है अध्यक्ष महोदय इसके इतर मैं आपसे ये कहना चाहता हूं कि हम लोग 280 में यहां सवाल रखते है, हमारे अधिकारों की रक्षा यहां आप करेंगे लेकिन मुझे कहते हुए दुख भी हो रहा है कि जितने भी हमने 280 में सवाल उठाए है आज तक उसका जवाब नहीं आया। मुझे लगता है कि 280 के सवाल जब हो यहां अधिकारी बैठे। ये बहुत ही अजीबो गरीब स्थिति है कि हम सवाल यहां रखते हैं, न तो कोई सुनने वाला, न तो समाधान करने वाला है। तो मुझे लगता है इसी सदन की सैलरी पर अफसर नौकरी पाकर अपनी सैलरी पाते हैं, लेकिन जब हम समस्या रखते हैं तो सुनने वाला कोई नहीं है। यह सदन इतना कमजोर, इतना असहाय न हो, इसकी रक्षा आप करें।

माननीय अध्यक्षः धर्मपाल लाकड़ा जी।

श्री धर्मपाल लाकड़ाः अध्यक्ष महोदय जी आपका बहुत–बहुत तहेदिल से आभार व्यक्त करता हूं कि आपने मुझे किसानों के मुद्दे पर बोलने का टाइम दिया। अध्यक्ष महोदय जी सबसे पहले मैं दिल्ली में रहने वाले सभी किसानों के विषय में आपसे एक निवेदन करना चाहता हूं कि जो एमएसपी है, एमएसपी पर हर स्टेट में अब तक जो है अनाज खरीदा जाता रहा है और हमारी भाजपा सरकार अभी–भी ढिंढोरा पीट रही है कि भई एमएसपी थी, है, रहेगी। परन्तु हमारी नरेला और नजफगढ़ मंड़ियों में किसानों का अनाज एमएसपी पर नहीं खरीदा जाता। तो मैं आपके माध्यम से ये

जानना चाहता हूं कि अगले महीने आने वाली फसल के टाइम पर, हमारी दिल्ली की हजारों हेक्टेयर जमीन पर जो किसान खेती करते है उनकी खेती की उपज क्या एमएसपी पर खरीदी जाएगी? दिल्ली सरकार से निवेदन करता हूं कि इस पर ध्यान दिया जाए ताकि दिल्ली के किसानों को भी इसका फायदा मिले। पहले भी केंद्र की भाजपा सरकार बार–बार ढिंढोरा पीटती रही है कि हमने किसानों को 6 हजार रुपए पर एकड़ हर साल हम उनको सहायता देते है। आज तक मैं खुद इस विधान सभा से बोल रहा हूं कि मैं सबसे मेन किसान मैं हूं यहां। 2018–19 में जब ओलावृष्टि हुई थी तो हमारी आम आदमी पार्टी सरकार की तरफ से मुझे करीब 5 लाख रुपए मुआवजा मिला और केंद्र की तरफ से आज तक मुझे 5 रुपए तक सहायता किसी भी विषय में नहीं मिल पाई। तो मेरे किसान साथियों की मौजूदा स्थिति को देखते हुए मैं अपनी सरकार से जानना चाहता हूं कि अगले माह अप्रैल से आने वाली रवि फसलों के लिए क्या ये एमएसपी का प्रबंध हो पाएगा।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद लाकड़ा जी हो गया।

श्री धर्मपाल लाकड़ाः अध्यक्ष जी मैं एक और।

माननीय अध्यक्षः नहीं और नहीं, बस एक समस्या प्लीज।

श्री धर्मपाल लाकड़ाः एक और प्लीज।

माननीय अध्यक्षः नहीं अब नहीं, अब नहीं, दो–तीन सदस्य ले लेने दो।

श्री धर्मपाल लाकड़ाः ठीक है, धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः भावना गौड़ जी।

सुश्री भावना गौड़ः माननीय अध्यक्ष महोदय मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी का ध्यान अपने पालन विधान सभा क्षेत्र के अंतर्गत रेलवे फाटक पर अंडरपास बनवाने की ओर दिलाना चाहती हूं। अध्यक्ष महोदय, इस रेलवे फाटक पर सुबह–शाम ट्रैफिक का इतना भारी जाम लगा रहता है जो घंटो–घंटो तक खुल नहीं पाता। यह स्थिति तब है जब पालम से द्वारका के लिए एक फ्लाईओवर ऑलरेडी बना हुआ है

क्योंकि इस फलाईओवर से पालन कॉलोनी, पालम गांव और मंगलापुरी के लोगों के उतरने के लिए कोई लूप नहीं बना है इसलिए सुबह–शाम फ्लाईओवर पर घंटो जाम लगा रहता है। अध्यक्ष महोदय यह रोड बहुत पुराना है, इस रोड पर द्वारिका, उत्तम नगर, पालम, मंगला पुरी और महावीर एंकलेव आदि कॉलोनियों से लोगों को अपने कार्यस्थल तक नियमित रूप से पहुंचना होता है। अतः वर्तमान व भविष्य के हालात को देखते हुए यहां अंडर पास बनाकर इसकी वैकल्पिक व्यवस्था की जा सकती है जो निश्चित रूप से अत्यधिक कारगर सिद्ध होगी। अध्यक्ष महोदय, मैंने स्वयं यहां अंडर पास बनवाने का अग्रह करते हुए सम्बन्धित अधिकारियों को भी पत्र लिखा। मंत्री जी के कमरे में एक बार मीटिंग भी हुई। इस सम्बन्ध में रेलवे विभाग, एनडीएमसी, दिल्ली नगर निगम द्वारा सम्मिलित सर्वे भी वहां पर करवाया गया परन्तु लगातार पत्राचार होने के बाद भी अंडर पास बनने की दिशा में सम्बन्धित विभाग द्वारा कोई कदम नहीं उठाया गया। अतः अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से अनुरोध करूंगी कि इस अंडर पास को यथाशीघ्र बनवाने की दिशा में कार्रवाही करने की कृपा करें। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः श्री साहनी जी। प्रलाद सिंह साहनी जी।

श्री प्रलाद सिंह साहनीः आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं अगले महीने के बारे में जहां रमजान और बैशाखी के त्यौहार आ रहे हैं। दिल्ली के अंदर मुस्लिम बस्तियों के अंदर सफाई की कोई व्यवस्था नहीं है। आज जितने भी सीवर लाईन और पानी की लाईनें हैं वो काफी जगह पर टूटी हुई हैं। रमजान के महीनों में उन गलियों में नई लाईनें बिछाने में लोग ऐतराज करेंगे। मेरी आपसे प्रार्थना है कि जहां भी मुस्लिम बस्तिज हैं उनके अंदर शार्ट नोटिस के अंदर 13 अप्रैल से पहले–पहले पानी तथा सीवर का बन्दोबस्त किया जाए ताकि उनकी सड़कों के ऊपर कीचड या पानी न मिले ताकि नमाजी ठीक ढंग से नमाज पढ़ने जा सके। दूसरा उसी दिन बैसाखी भी है। मैं चाहता हूं कि दिल्ली के अंदर जितने गुरूद्वारे, मन्दिर, मस्जिद है उनके पास सफाई की व्यवस्था की जाए। दूसरा मैं आपको एक बात और कहना चाहता हूं। अध्यक्ष जी, मैं आपके मार्फित मंत्री महोदय से ये कहना चाहता हूं कि पहले जब भी कभी रमजान का महीना हुआ करता था तो कन्सर्ड मंत्री जो होते थे वो पहले उन मस्लिम बस्तियों

का दौरा करते थे। सफाई की सीवर लाईन की और पानी की लाईनों का देख कर उनके लिए काम करवाया करते थे, बल्कि रमजान के दिनों के अंदर पहले तो यहां मुख्यमंत्री भी जाया करती थी, मंत्री भी जाया करते थे ताकि लोगों को पूरी तरह से स्वच्छ माहौल मिल सके। खास करके मुसलमान भाईयों के लिए मैं इस लिए कहना चाहता हूं कि चार बजे सवेरे उठकर ये रमजान की नमाज अदा करने जाते हैं और पूरे चालीस दिन न उन्होंने कोई पानी पीना होता है, न कुछ खाते हैं, फास्ट (रोजा) रखते हैं। बहुत सख्त गर्मी के अंदर रमजान आदि मनाया जाता है। मेरी सरकार से विनती है कि ये पानी की समस्या है इसको भी दूर किया जाए ताकि एरिये की तमाम मुस्लिम बस्तियों के अंदर छोटी–छोटी झुग्गी झोपड़ी है वहां पर भी पर्याप्त पानी मिल सके। दूसरी चीज अपने ओपोजिशन के भाईयों को कहना चाहता हूं दिल्ली के अंदर बिधूडी जी आप इधर ध्यान दें क्योंकि आप मेरे भाई भी हैं। मैं ये कहना चाहता हूं आप कमिट हो गए हैं जिस पार्टी से, आप बहुत अच्छे आदमी हैं, आपकी जितनी तारीफ की जाए उतनी थोडी है, मगर जिस पार्टी को आपने ज्वाईन किया है बहुत गलत किया है। वो पार्टी उतनी ही खराब है जितने आप अच्छे हैं। आप इसको भी सोचें। आप मेरे साथ विधान सभा में हुआ करते थे। एक ही मसला होता था, मैं किसान का बेटा हूं। मैं किसान का बेटा हूं। आज इस पार्टी में जाकर आप सिर्फ इन्सानियत को भी भूल गए। मैं आपको ये कहना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्षः साहनी जी हो गया।

श्री प्रलाद सिंह साहनीः आप किसान के नाम पर भी नहीं बैठते

...व्यवधान...

श्री प्रलाद सिंह साहनीः बिधुडी जी। ये वो पार्टी है...

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः साहनी जी हो गया। एक सदस्य को और मौका मिल जाएगा।

श्री प्रलाद सिंह साहनीः सर मैं एक ही बोल रहा हूं। मैं कुछ नहीं बोल रहा। ये पार्टी के कहने पर चलोगे तो लोग इंसानियत भूलते हैं, ये तो बाप का नाम भी भुलवा देते

हैं। आप इन्सानियत देखो और दूसरी चीज मैं आपको ये कहना चाहता हूं आज एक बहुत बड़ी चीज दिल्ली के अंदर आई है। हरियाणा ने पानी बंद किया है। सभ्यता से, राजनीति से ऊपर उठकर बीजेपी के लोग हमारे साथ चलें। हरियाणा के मुख्यमंत्री पर प्रेशर डालें यहां के मंत्रियों के साथ जाए और जाकर unanimously ये कहे कि दिल्ली के पानी को कोई भी रोकेगा हम ये बर्दास्त नहीं करेंगे। आज मेरे भाई मंत्री जी ने, महेन्द्र भाई ने भी ये ही कहा कि पानी के बारे में तो बिधूडी जी मैं आपसे रिक्वेस्ट करना चाहता हूं। आज दिल्ली के अंदर जो समस्या आई है, पार्टी से ऊंचा उठकर उस चीज को भूल करके कि हम बीजेपी के हैं, हम कांग्रेस के हैं, दिल्ली के जनता के साथ न्याय करने के लिए हम लोग सब मिलकर हमारे मंत्री भी और आप भी सब मिलकर हरियाणा के मुख्यमंत्री पर दबाव ड़ालें कि दिल्ली के अंदर न तो गंदा पानी छोड़े और साफ पानी प्र्याप्त मात्रा में जो दिल्ली का हिस्सा है वो उसको पूरा करें।

माननीय अध्यक्षः साहनी जी हो गया। जून साहब। भूपेन्द्र सिंह जून जी। नहीं अब नहीं। नहीं मैं बारह बजे से आगे नहीं प्लीज। नहीं सदस्य रह जाएगें। जून साहब।

श्री भूपेन्द्र सिंह जूनः धन्यवाद अध्यक्ष जी। अध्यक्ष जी बिजवासन विधान सभा के पांच गांव महिपालपुर, रंगपुरी, समालका, शाहबाद मोहम्मदपुर और बागडोला इनकी जो jurisdiction District Magistrate की है वो है शाहजहां रोड पर जाम नगर हाउस पर। डीएम वहां से तीन किलोमीटर दूर पड़ता है। जबकि साउथ वेस्ट डीएम ऑफिस कापसहेडा इनके पांच किलोमीटर के radius में situate करता है। इन लोगों को छोटे–छोटे कामों के लिए जाम नगर हाउस, शाहजहां रोड जाना पड़ता है। मैने इस बारे में एक पत्र लिखा माननीय रेवेन्यू मिनिस्टर को। उन्होंने वो लैटर मार्क कर दिया डिविजनल कमिश्नर को। डिविजनल कमिश्नर से मेरी बात हुई तो उन्होंने कहा कि ये मेरे बस की बात नहीं है। इसमें केबिनेट नोट जाएगा वहां से पास होने के बाद स्टेट गवर्नमेंट नोटिफिकेशन करेगी। कोई logic नहीं है कोई justification नहीं है कि पांच गावों को तीस किलोमीटर क्यों भेज दिया गया। जबकि दूसरा डीएम ऑफिस पांच किलोमीटर के radius पर है। अध्यक्ष जी मेरी आपसे प्रार्थना है कि माननीय मंत्री जी इस तरफ गम्भीरता से विचार करें क्योंकि

लगता है इन लोगों को या तो bureaucratic red tapism होकर इनका नुकसान हो रहा है या फिर किसी unscrupulous politician ने इनसे बदला लेने के लिए इन पांच गांवो को वहां कई साल पहले वहां attach करा दिया। बहुत ज्यादा दिक्कत है लोगों को छोटे–छोटे काम के लिए इतनी दूर जाना पड़ता है। मैं उम्मीद करता हूं कि माननीय मंत्री जी इस को गम्भीरता से लेंगे और इस समस्या का समाधान करेंगे। अध्यक्ष जी माननीय उप–मुख्यमंत्री अब नहीं है लेकिन मैं एक बात जरूर कहूंगा कि दिल्ली में agricultural land के circle rate हमने लास्ट ईयर बढाये थे जो आज तक नोटिफाई नहीं हुए। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि दिल्ली में agricultural land के जो circle rate बढ़ाने का फैसला हुआ था उसको नोटिफाई किया जाए। धन्यवाद। थैंक्यू सर।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद। श्री अजय महावर जी अन्तिम बस। बस अब नहीं देखिए 12 बजते ही अलाऊ नहीं करूंगा। नहीं दो मिनट रूकिए प्लीज।

श्री अजय कुमार महावरः धन्यवाद अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि वजीराबाद की जो मेन रोड है उस मेन रोड पर भजनपुरा रोड पर लोक निर्माण विभाग और मैट्रो के फोर्थ फेज का काम चल रहा है और बहुत अच्छी गति से चल रहा है। वहां पर बीच सड़क पर एक मजार विकास की राह में रोड़ा बना हुआ है। एक पुलिस की बीट चौकी भी उसके बराबर में थी लेकिन उस बीट चौकी का स्थानान्तरण कर दिया गया है सफलतापूर्वक वैकल्पिक स्थान पर। इसी प्रकार धार्मिक भावना को ध्यान में रखते हुए ससम्मान विकास की राह को खोलने के लिए उस मजार का भी वैकल्पिक स्थान पर ससम्मानपूर्वक स्थानान्तरण किया जाए यह मैं सरकार से अपील करता हूं। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः जय भगवान जी। नहीं मैं क्रम से ले रहा हूं सबका। मैं वैसे किसी का नहीं ले रहा हूं। महावर जी आ गए बीच में इनका क्रम था प्लीज। जय भगवान जी शुरू करिए प्लीज।

श्री जय भगवानः आदरणीय अध्यक्ष महोदय जी, मैं आपका ध्यान बवाना के बवाना इण्डस्ट्रीयल एरिया जो डीएसआईडीसी कहलाता है उसकी तरफ ले जाना

चाहता हूं। आदरणीय अध्यक्ष जी वहां पर करीब 16,388 फैक्ट्रियां हैं जिनके अंदर डीपीसीसी दिल्ली पोल्यूशन कन्ट्रोल कमेटी के द्वारा चालान किये जा रहे हैं। अध्यक्ष जी क्योंकि वो फैक्ट्रियां बहुत छोटी–छोटी फैक्ट्रियां हैं। कोई सौ मीटर की है काई डेढ़ सौ मीटर की है कोई दो सौ मीटर की है और कई लोगों ने तो किराये पर लेकर वहां फैक्ट्रियां लगा रखी है। लेकिन दिल्ली पोल्यूशन कन्ट्रोल कमेटी के द्वारा उन फैक्ट्रियों के अंदर अध्यक्ष महोदय करीब–करीब एक लाख से लेकर चार करोड तक के चालान दिये जा रहे हैं जो वो लोग जमा नहीं कर पा रहे है। इससे हमारी सरकार को रेवेन्यू लॉस भी हो रहा है। चूंकि एक व्यक्ति जो मान लिया एक करोड की भी फैक्ट्री लगा रहा है या पचास लाख के आस पास भी लगा रहा है अब उसका चार करोड का चालान आ जाएगा तो वो कैसे भरेगा। अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से कहता चाहता हूं कि ये जो छोटे–छोटे फैक्ट्री मालिक है जो अपनी फैक्ट्रियां लगा रहे है इनको एक आम माफी योजना के तहत एक राहत दी जाए कि अधिकतम राशि कम से कम पांच लाख रूपये तय की जाए जिससे कि वो इस पैसे को भर सके और जो सरकार को रेवेन्यू लॉस हो रहा है वो सरकार को रेवेन्यू का फायदा रहना चाहिए। चूंकि वे लोग इतनी बड़ी जो राशि है वो नहीं भर पा रहे है, अगर उनको आम माफी योजना के तहत आप अगर पांच लाख की राशि है वो तय कर देंगे तो मुझे लगता है कि दिल्ली सरकार को रेवेन्यू का फायदा होगा। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः बहुत–बहुत धन्यवाद। मैं बोल रहा हूं बोल रहा हूं। देखिए मैं शान्तिपूर्वक एक घंटा सदन चला है। आपको आश्चर्य होगा 17 माननीय विधायकों ने 280 में अपनी बात रखी। ये पहली बार रिकार्ड हुआ है। मैं आप सबको बहुत–बहुत बधाई देता हूं इसके लिए। दूसरा, नेता विपक्ष को भी इसके लिए बधाई देता हूं कि उन्होंने इसमें सहयोग दिया और बाकी जितने भी सदस्यों का रह गया है उसको पढ़ा हुआ माना जाए। बहुत–बहुत धन्यवाद।

Sh. Vishesh Ravi : Whenever a deserving EWS patient approaches the Pvt. Hospital, he/she is sent away citing non-availability of beds. The private hospitals do not display updated EWS bed availability on their website nor on the hospital boards. Even the Health Department website

doesn't show the latest EWS bed availability status. I had requested a special EWS app that shows the EWS bed availability status of identified private hospitals on a real-time basis in a letter to Hon'ble Health Minister Ref. No.-116916/6/1/2021. What is the status of this request? When will a special EWS app be available in the public domain?

माननीय अध्यक्षः बहुत–बहुत धन्यवाद। सुन लिया है मैंने, मैं करूंगा इसको। मैं करूंगा इसको। अब श्री कैलाश गहलोत जी माननीय परिवहन मंत्री कार्यसूची में दर्शाए गए अपने विभाग से सम्बन्धित दस्तावेजों की प्रतियां सदन पटल पर प्रस्तुत करेंगे। 'क' से लेकर 'छ' तक।

माननीय परिवहन मंत्री (श्री कैलाश गहलौत)ः अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से कार्यसूची के बिन्दू क्रमांक दो में दर्शाए गए दस्तावेजों की अंग्रेजी व हिन्दी प्रतियां सदन पटल पर प्रस्तुत करता हूं।

क) श्री शकील अहमद खान, उप मुख्य महाप्रबंधक (एस्टेट), दिल्ली परिवहन निगम की नियुक्ति के संबंध में सं. एफ.74/डीटीसी/एसटीए/2020 एवं सं. एफ. 19(09)/सचि./परि./2020/51463 दिनांक 22 सितंबर, 2020[1]

ख) अनुसूची–1 के भाग ए के कॉलम I, II, III और IV तथा अनुसूची–1 के भाग बी में वर्णित सभी बैटरी इलैक्ट्रिक वाहनों पर लगने वाले कर को छूट प्रदान करने के संबंध में जो कि इस अधिसूचना के जारी होने की तिथि से लागू होगी, सं. फा. 32/रोड टैक्स/ टीपीटी/2020/डीसी/ऑप्स/टीपीटी/2020/62/57916 दिनांक 10 अक्टूबर, 2020[2]

ग) फैंसी नंबरों के संबंध में सं.एफ.डीसी/ऑप्स/टीपीटी/2014/58905 दिनांक 13 अक्टूबर, 2020[3]

---

1 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–21821 पर उपलब्ध।
2 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–21822 पर उपलब्ध।
3 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–21823 पर उपलब्ध।

घ) इलैक्ट्रिक वाहनों पर पंजीकरण शुल्क की छूट के संबंध में सं.एफ. डीसी/ ऑप्स/ टीपीटी/2020/75/59849 दिनांक 15 अक्टूबर, 2020[7]

ड) रा.रा.क्षे.दि हेतु राज्य परिवहन अपील न्यायाधिकरण के गठन के संबंध में सं.एफ. 10(118)/एएस/एसटीए/परि/2013/72939 दिनांक 01 दिसंबर, 2020[4]

च) रा.रा.क्षे.दि हेतु राज्य परिवहन प्राधिकरण के पुनर्गठन के संबंध में सं.एफ. 21/60 / सचिव/एसटीए/2009/77427 दिनांक 18 दिसंबर, 2020[5]

छ) राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में ऑटो रिक्शा आपरेटरों द्वारा लिये जाने वाले किराये के संबंध में सं.एफ.23(488)/परि/एआरयू/2010/452/1318, दिनांक 23 दिसंबर, 2020[6]

माननीय अध्यक्षः अब माननीय श्री मनीष सिसोदिया जी, माननीय उप–मुख्यमंत्री द्वारा दिनांक 09 मार्च 2021 को प्रस्तुत वार्षिक बजट 2021–22 पर आगे चर्चा होगी। आतिशी जी बजट पर चर्चा।

सुश्री आतिशी : शुक्रिया अध्यक्ष महोदय कि आपने मुझे जो बजट माननीय उप–मुख्यमंत्री जी ने प्रस्तुत किया था उस पर बोलने का मौका दिया। सबसे पहले मैं माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी को और माननीय उप–मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया जी को बधाई देना चाहूंगी इस शानदार बजट के लिए और इस लिए भी क्योंकि मुझे लगता है कि माननीय मुख्यमंत्री और उप–मुख्यमंत्री ने एक ऐसा इतिहास रचा है कि उन्होंने इस साल जो बजट प्रस्तुत किया वो सातवां ऐसा बजट है जिसमें बजट का एक चौथाई यानि 25 परसेंट बजट शिक्षा को दिया गया है। इसके लिए इन दोनों को बहुत बहुत बधाई। मुझे लगता है कि इस देश के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ होगा, सबसे पहले कि किसी सरकार ने 25 परसेंट बजट शिक्षा को दिया

4 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–21824 पर उपलब्ध।
5 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–21825 पर उपलब्ध।
6 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–21826 पर उपलब्ध।
7 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–21827 पर उपलब्ध।

है और वो भी सात साल लगातार। मुझे याद है कि कई साल पहले की बात है, मैं राजनीति में आने से पहले शिक्षा के क्षेत्र में काम किया करती थी और हम अक्सर सरकार के पास जाते थे केन्द्र सरकार को चिटिठयां लिखा करते थे और तब हमारी ये मांग होती थी कि केन्द्र सरकार छह परसेंट अपना बजट शिक्षा पर खर्च करे और केन्द्र सरकार वो छह परसेंट बजट भी शिक्षा पर खर्च नहीं किया करती थी। और दिल्ली सरकार ने माननीय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी के नेतृत्व में जो 25 परसेंट बजट इतने सालों तक शिक्षा को दिया है वो काबिले तारिफ है। इन छह सालों में जब से अरविंद केजरीवाल जी की सरकार दिल्ली में बनी है इस 25 परसेंट बजट से शिक्षा में बहुत बड़े बदलाव आए हैं। मुझे याद है कि 2015 में दिल्ली के सरकारी स्कूलों का क्या हाल होता था। हमारे सदन में भी जो सदस्य मौजूद हैं उन्हें भी याद होगा कि जब हम सरकारी स्कूलों के अंदर घुसते थे छह साल पहले तो सबसे पहले टायलेट की बदबू आती थी। ऐसा होता था सरकारी स्कूल। खिड़कियां टूटी हुई होती थी, लाइटें टूटी हुए होती थीं, पंखे टूटे हुए होते थे। बच्चे फर्श पर टाट—पट्टी पर बैठे हुए होते थे। टीचर अक्सर क्लास से बाहर हुआ करते थे। अगर छह साल पहले हम किसी को ये कहते कि एक समय ऐसा आएगा कि दिल्ली के सरकारी स्कूलों के नतीजे प्राइवेट स्कूलों से बेहतर आएंगे तो शायद कोई विश्वास नहीं करता। अगर छह साल पहले हम किसी को कहते कि सरकारी स्कूल से हर साल तीन सौ से ज्यादा बच्चे आईआईटी का एग्जाम क्लीयर करके देश के बड़े—बड़े इंजीनियरिंग कॉलेजिज में जाएंगे तो शायद कोई विश्वास न करता। अगर हम छह साल पहले कहते कि हमारे सरकारी स्कूलों से पांच सौ से ज्यादा बच्चे नीट का एग्जाम क्लीयर करके बड़े—बड़े मैडिकल कॉलेजिज में जाएंगे तो कोई विश्वास नहीं करता। लेकिन छह साल में ऐसा क्रांतिकारी बदलाव माननीय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी और उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया जी पिछले छह साल में हमारे दिल्ली के सरकारी स्कूलों में लेकर आए हैं। आज इसका क्या मतलब है। आज इसका मतलब है कि एक गरीब परिवार से आने वाला बच्चा जिसके पास बड़े—बड़े मंहगे प्राइवेट स्कूलों की फीस देने के पैसे नहीं हैं उसे भी अच्छी शिक्षा मिलती है। उसे भी जिंदगी में आगे बढ़ने का मौका मिलता है और ये क्रांतिकारी बदलाव जो दिल्ली के सरकारी स्कूलों में आए हैं, न सिर्फ दिल्ली और भारत में इन क्रांतिकारी बदलावों की चर्चा है बल्कि आज पूरी

दुनिया में दिल्ली की शिक्षा क्रांति की चर्चा हो रही है कि इतने छोटे समय में इतना बड़ा बदलाव कैसे आया। लेकिन अभी भी शिक्षा को लेकर कई बड़े सवाल हमारे देश के सामने और मैं तो कहूंगी पूरी दुनिया के सामने खड़े हैं। क्या जो 14 साल बच्चा हमारे स्कूल में रहता है क्या जब वो शिक्षा को प्राप्त करके आगे बढ़ता है तो क्या वो एक अच्छा इंसान निकलकर आता है? क्या वो एक अच्छा नागरिक निकलकर आता है? क्या वो एक सच्चा देशभक्त निकलकर आता है? और शायद ये तो बहुत बड़ा प्रश्न चिन्ह हमारे सामने है। हम लोग दिल्ली में रहते हैं, आए दिन जब हम सुबह अखबार के पन्ने पलटते हैं तो रोज पहले पन्ने पर या दूसरे, तीसरे पन्ने पर महिलाओं के खिलाफ हो रही हिंसा हेड लाईन पर होती ही है। कहीं महिलाओं के साथ बलात्कार होता है, कहीं उन पर डोमेसटिक वायलेंस के केसिस होते हैं। तो ये सवाल उठता है कि शिक्षित होने के बाद भी अगर कोई व्यक्ति महिलाओं के खिलाफ हिंसा कर रहा है, महिलाओं के खिलाफ बद्तमीजी कर रहा है, क्या हम उसे वास्तव में शिक्षित मानें? अक्सर ये पढ़ने में आता है कि बड़े–बड़े अफसर रिश्वत लेते हुए पकड़े गए। इस देश में सरकारी अफसर बनने के लिए बहुत शिक्षित होना जरूरी है। बहुत मुश्किल एग्जाम पास करना जरूरी है। लेकिन इतनी शिक्षा के बाद भी अगर कोई रिश्वत ले रहा है तो क्या हम उसे वास्तविक तौर पर शिक्षित मानें? देश में, दुनिया में आतंकवाद के इतने मसले सामने आते हैं, धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर हिंसा के मामले सामने आते हैं तो ये तो हमारे देश की, हमारी पूरी दुनिया की शिक्षा प्रणाली पर एक बहुत बड़ा प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है कि अगर हमारे स्कूलों से पढ़े हुए बच्चे, हमारे कॉलेजिज से पढ़े हुए बच्चे जाति और धर्म के नाम पर हिंसा करने को तैयार है, महिलाओं के साथ हिंसा करने को तैयार हैं, रिश्वत लेने को तैयार हैं तो हम उन्हें कैसी शिक्षा दे रहे हैं। जब इस तरह की घटनाएं घटती हैं तो हमारे माननीय मंख्य मंत्री बजट में सीसीटीवी कैमरे लेकर आते हैं क्यों? क्योंकि उन्हें लगता है कि क्राइम को रोकने का यही तरीका है। वो बसों में मार्शल लगाते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि वहां पर उनकी बहनों के साथ, दिल्ली की महिलाओं के साथ बद्तमीजी होती है। हम डिमांड करते हैं कि पुलिस फोर्स को बढ़ाया जाए। लेकिन शायद ये लगता है कि हालांकि ये कदम बहुत जरूरी है, ये कदम एक long term solution नहीं देते हैं समस्याओं का। और इसीलिये मैं माननीय मुख्यमंत्री और

उप मुख्यमंत्री को बधाई देना चाहती हूं कि उन्होंने इन समस्याओं का क्या long term solution हो सकता है, उस पर एक शुरूआत की है इस बजट में। जहां पर वो दिल्ली के सरकारी स्कूलों में देशभक्ति पाठ्यक्रम को लाने की उन्होंने बात की है। उसके लिए मैं दोनों को बधाई देना चाहती हूं। ये देशभक्ति पाठ्यक्रम इसलिए जरूरी है क्योंकि मैं ये मानती हूं कि अगर हमारे स्कूलों से पढ़ा लिखा बच्चा रिश्वत ले रहा है तो हमारी अभी की शिक्षा फेल है। अगर वो महिलाओं के खिलाफ हिंसा कर रहा है, तो हमारी अभी की शिक्षा फेल है। अगर वो धर्म और जाति के नाम पर हिंसा कर रहा है तो हमारी अभी की शिक्षा फेल है। अगर ये देशभक्ति पाठ्यक्रम जिस तरह दिल्ली के स्कूलों में लाया जा रहा है और मुझे भरोसा है कि जिस तरह से दिल्ली की शिक्षा क्रांति अब पूरे देश में फैल रही है उसी तरह से ये देशभक्ति पाठ्यक्रम जब पूरे देश में लाया जाएगा तो हम इसके माध्यम से बहुत बड़े–बड़े बदलाव दिल्ली में और पूरे देश में भी देखेंगे। एक अच्छा नागरिक, एक अच्छा इंसान, एक देशभक्त जो महिलाओं का भी सम्मान करना जानता हो, जो बुजुर्गों का भी सम्मान करना जानता हो, जो हमारे शहर के, हमारे देश का जो पर्यावरण है उसके साथ कोई अत्याचार न हो, वो चाहता हो। जो ये देख सके कि महिलाओं को, चाहे वो सड़कों पर चल रही हों, चाहे वो बसों में जा रही हों, चाहे अपने घरों में, उनका सम्मान हो, उनके प्रति किसी प्रकार की हिंसा न हो । मैं ये मानती हूं कि ऐसे बड़े–बड़े बदलाव अब दिल्ली में और पूरे देश में आएंगे। कुछ साल पहले मैं अपने परिवार के साथ लाल किला देखने गई थी तो मेरे साथ हमारी तब आठ साल की भांजी थी साथ में। तो लाल किले में वो जो हाथ से चलने वाले पंखे होते हैं न तो उस पंखे को देख के मेरी आठ साल की भांजी ये कहती है कि ये क्या है? तो मैंने कहा कि उस समय पर बिजली नहीं होती थी इसलिए हाथ से चलने वाले पंखों की जरूरत थी। तो उसे देखकर वो कहती है कि अच्छा ऐसा भी होता था क्या एक समय? तो मुझे लगता है और मुझे पूरा भरोसा है कि इस देशभक्ति पाठ्यक्रम के आने के बाद जब बच्चे बीस साल बाद, 30 साल बाद ये सीसीटीवी कैमरा लगे हुए देखेंगे तो वो पूछेंगे जी ये क्या है? तो जब हम उनसे कहेंगे कि क्राइम को रोकने के लिए सीसीटीवी कैमरा लगाने की जरूरत पड़ती थी तो आने वाले पीढ़ी के बच्चे सोचेंगे अच्छा ऐसा भी होता था क्या! कि तब क्या क्राइम को रोकने के लिए आप को पुलिस और सीसीटीवी की

जरूरत पड़ती थी? तो ऐसे देशभक्ति पाठ्यक्रम के लिए मैं माननीय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी को माननीय उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया जी को बहुत—बहुत बधाई देती हूं। और मैं ये मानती हूं कि ये हमारे देश के इतिहास में एक बहुत बड़ा माईल स्टोन साबित होने वाला है। धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः बहुत बहुत धन्यवाद। आतिशी जी। आतिशी जी ने अपनी बात बहुत कम समय में रखी है। पूरी बात रखी है। बहुत—बहुत धन्यवाद। राजकुमारी ढिल्लो जी।

श्रीमती राजकुमारी ढिल्लोंः श्री अरविंद केजरीवाल जी के नेतृत्व में हमारे दिल्ली के उप मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी ने जो बजट पेश किया उसका पूरी दिल्ली की जनता ने बहुत खुशी से स्वागत किया और खास तौर से स्वास्थ्य के क्षेत्र में जो योजनाएं शुरू करने के लिए जा रहे हैं, जिस प्रकार छह वर्षों से लगातार चल रही थी उसको और आगे बढ़ाते हुए सिसोदिया जी ने जो महिलाओं के लिए जो एक खास बजट निर्धारित किया है उसके लिए दिल्ली की महिलाएं बहुत ही गदगद महसूस कर रही हैं अपने आप में और इस बजट के लिए जगह—जगह चौराहों पर, गलियों पर खास तौर से एक खुशी जाहिर हो रही है कि आने वाले समय में मोहल्ला क्लीनिक जो महिलाओं के लिए खास तौर पर घर से बाहर निकलते ही बनाए जाएंगे अगले साल से उसकी लोगों के अंदर बहुत ही खुशी है। महिलाओं में खुशी है क्योंकि सभी जानते हैं कि हमारे जो मुख्यमंत्री जी हैं वो खास तौर से महिलाओं का सम्मान करते हैं और लोगों की तरफ से एक ये मैसेज आया है :

नारी का सम्मान करे जो युग पुरूष वही कहलाता है,

बहन बेटियों और मांओं का केजरीवाल दुलारा बन पाता है।

स्कूल की कन्याओं को सेनिटरी नेपकिन, विधवा महिलाओं को पेंशन में वृद्धि और बसों में महिलाओं के लिए फ्री यात्रा, बसों में मार्शल्स तैनात करना और डीटीसी की बसों क्लस्टर बसों में सीसीटीवी कैमरे महिलाओं की सुरक्षा के लिए और पर्यटन स्थल पर आने वाले समय में महिला सुरक्षा के लिए एलईडी लाईटस और गली

मोहल्ले में महिला सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे। ये सारी की सारी योजनाएं जो खास तौर से हमारे मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में मनीष सिसौदिया जी ने जो रखी हैं इसके लिए पूरी दिल्ली आपका हार्दिक धन्यवाद करती है और स्कूल की कन्याओं को सेनिटरी नेपकिन, विधवा महिला को पेंशन और साथ–साथ आने वाले समय में महिलाओं की अर्थ व्यवस्था में भूमिका को मजबूत करने के लिए 500 आंगनवाड़ी और अब घर के बाहर निकलते ही महिला मोहल्ला क्लीनिक दिल्ली के इतिहास में महिला उत्थान में एक मील का पत्थर साबित होगा। केन्द्र की भाजपा सरकार की जन विरोधी नीतियों के कारण आज मंहगाई सबसे पहले एक महिला ग्रहिणी को रसोई के माध्यम से झेलनी पड़ती है। और ऐसे में वह अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं दे पाती खर्च के डर से। दिल्ली के लोकप्रिय मुख्यमंत्री जिसके सीने में दर्द है महिलाओं की समस्याओं के प्रति जो स्वयं एक गृहस्थ व्यक्ति है, अपने बजट का 14 परसेंट स्वास्थ्य पर खर्च करने का निर्णय किया गया है जो आपकी दिल्ली की जनता के प्रति नर सेवा, नारायण सेवा को चरितार्थ करता है। अपने वार्ड से अगले वर्ष से महिला मोहल्ला क्लीनिक शुरूआत करने के लिए दिल्ली की जनता फिर से बधाई देती है और आने वाले समय में 22 में पूरी दिल्ली में 100 मोहल्ला महिला क्लीनिक खोले जाएंगे और उसके बाद हर वार्ड में एक महिला मोहल्ला क्लीनिक होगा। सभी जानते हैं कि मध्यम वर्गीय जो महिलाएं हैं और जो लोअर इनकम की महिलाएं हैं वो एक gynae specialist के पास नहीं जा पाती हैं तो ये जो सोच है हमारे अरविंद केजरीवाल जी की सरकार की कि घर से बाहर जो महिला निकले और वो अपने लेडी डाक्टर के पास जाए, वहां पर वो अपना आराम से इलाज करवा ले। क्योंकि कई महिलाएं ऐसी होती हैं जो अपनी बीमारी के बारे में घर पर भी डिसकस नहीं कर पातीं। इसी को ध्यान में रखते हुए हमारी जो दिल्ली सरकार है इन्होंने घर के पास एक gynae doctor का प्रबंध करने जा रहे हैं और उसी के साथ अब दिल्ली सरकार ये जिम्मेदारी निभाएगी कि दिल्ली की हर महिला के घर के पास ही मोहल्ला क्लीनिक होगा। उसमें महिला रोग विशेषज्ञ उपलब्ध होंगे। पहले चरण में ये 100 होंगे। आने वाले समय में एक वार्ड में एक ही होगा। यह अपनी आधी आबादी को सम्मान पूर्वक स्वस्थ्य रखने की दिशा में उठाया गया 75 साल के इतिहास में अब

तक का सब से महत्वपूर्ण कदम होगा। इस कदम को उठाने के लिए आजादी की 75 वीं सालगिरह के वर्ष से उचित और क्या समय हो सकता है।

हर राज से वाकिफ हैं चलना हमको भी आता है,

अगर आप साथ दें अरविंद केजरीवाल जी का

तो देश चलाना आता है।

जय हिंद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, धन्यवाद। बहुत बहुत धन्यवाद। पवन कुमार शर्मा जी।

श्री पवन शर्माः धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया। अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले दिल्ली के लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी के मार्ग दर्शन में हमारे वित्त मंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी ने जो बजट दिया है, उसके लिए बहुत बहुत बधाई और धन्यवाद करता हूं मैं।

अध्यक्ष महोदय वर्ष 2020 और 21 पूरी मानव जाति के लिए त्रासदी का वर्ष रहा। कोरोना ने सम्पूर्ण मावन जाति को संकट में ला दिया जिस वजह से सामान्य जनजीवन पर व्यापक असर पड़ा। मुझे खुशी है कि दिल्ली के उप–मुख्यमंत्री जी ने उन सभी आम जनता के हित का ख्याल रखा। महोदय हमारे वित्त मंत्री जी ने बताया कि इस साल अगस्त 2021 में हमारे देश की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ है। यह साल केवल उल्लास व सम्मान का नहीं बल्कि आत्मचिंतन का भी है। आजादी के 75 वर्ष में हमारी दिल्ली ने क्या–क्या हासिल किया और क्या–क्या हालिस करना चाहिए उसका भी वर्ष है ये। मुझे बेहद खुशी है कि आजादी की 75वीं सालगिरह को हमारी दिल्ली सरकार पूरे वर्ष विभिन्न आयोजनों के माध्यम से मनाएगी। मैं मनीष जी को विशेषरूप से धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने राष्ट्रभक्ति का राग अलापने वाले हमारे भाजपा के मित्रों को देशभक्ति का पाठ पढ़ना सिखाया है। अध्यक्ष महोदय कुछ लोग केवल कहते हैं और कुछ लोग करके दिखाते हैं। इस बजट में दिल्ली सरकार

ने हमारे माननीय मुख्यमंत्री, माननीय उप—मुख्यमंत्री हमारी सरकार ने महत्वपूर्ण कदम उठाएं हैं चाहे वो 75 साल से अधिक उम्र के वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान हो, चाहे वो दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर तिरंगा स्थापित करने की योजना हो, चाहे वो हमारी सुरक्षा में लगे जवानों के शहीद होने पर उनके परिवार के लिए एक करोड़ की सम्मान राशि देना हो। सबसे महत्वपूर्ण कार्य पूरे वर्ष आजादी की 75वीं सालगिरह के उपलक्ष्य में अनेक आयोजनों का संकल्प हो सभी कार्य दिल्ली के जन—जन में देशभक्ति की भावना को और प्रकट करने तथा समाज के विकास को एक नई दिशा देने वाले हों। अध्यक्ष महोदय लोहिया जी कहा करते थे धर्म अल्पकालीन राजनीति है और राजनीति दीर्घकालीन धर्मनीति है अर्थात राजनीति बुरे काम का डटकर विरोध करती है और धर्मनीति लगातार अच्छे काम का प्रचार करती है। ठीक उसी तरह आज देशभक्ति सिर्फ नारों में या पाकिस्तान को गालियां देने से नहीं की जा सकती बल्कि समाज के हर व्यक्ति के जीवनस्तर को बेहतरी की तरफ ले जा कर की जा सकती है। मैं मनीष जी को विशेषरूप से धन्यवाद देना चाहता हूं कि यह बजट जब दिल्ली अपनी स्वतंत्रता की 100वीं वर्षगांठ मना रही होगी उसकी बुनियाद का भी कार्य करेगा। यह बजट केवल वर्तमान की दिक्कतों को ही नहीं दूर कर रहा है बल्कि आने वाले भविष्य को भी गढ़ रहा है जो दूरदर्शी विचार व सच्ची नीयत को दिखाता है। इसमें कोई शक नहीं कि यह बजट ज्ञान, देशभक्ति के साथ—साथ सच्ची नीयत को भी परिभाषित करता है। दिल्ली के तथा दिल्ली के हर नागरिक की चिंता करता है। अध्यक्ष महोदय जो हमारी सरकार ने माननीय मुख्यमंत्री जी के मार्गदर्शन में माननीय शिक्षा मंत्री जी के द्वारा जो काम किए गए शिक्षा के क्षेत्र में उसका मैं एक अपना पर्सनल अनुभव शेयर करता हूं। अध्यक्ष महोदय जब 2015 में पहली बार मैं विधायक बना तो उस वक्त मुझे अच्छी तरह ध्यान है शुरू के एक—दो साल 2015 और 16 में पब्लिक स्कूलों में एडमिशन लेने वालों की लाइन लग जाती थी। क्योंकि अध्यक्ष महोदय बहुत मोटी डोनेशन ये लोग लेते थे और लोग चाहते थे कि शायद विधायक के बोलने पर विधायक जी हमारी अप्रोच कर दें। कम डोनेशन पे या फ्री में पब्लिक स्कूल में हमारा एडमिशन हो जाए। अब इस वक्त अध्यक्ष महोदय हमारे माननीय मुख्यमंत्री और माननीय शिक्षा मंत्री और हमारी सरकार के कामों की बदौलत इस वक्त हर साल हमारे पास ऐसे बहुत सारे केस आते हैं जो पब्लिक स्कूलों से

बच्चे नाम कटाकर और सरकारी स्कूलों में एडमिशन के लिए हमारे पास खड़े होते हैं। तो इसकी वजह केवल और केवल हमारी सरकार की ईमानदारी है। तो मैं हमारे भाजपा के मित्रों से दो शब्द कहना चाहूंगा कि ईमानदारी से क्या–क्या फायदे होते हैं जो दिल्ली सरकार ने, जो हमारे माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल ने, हमारे शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया जी ने, बाकी सभी मंत्रियों ने जो काम किए हैं ईमानदारी से उसका रिजल्ट आप सबके सामने हैं। तो अध्यक्ष महोदय मैं दो लाइनें कहकर अपनी वाणी को विराम दूंगा। भली औरत का पति निखट्ठू, पति–पत्नी का मिलता नहीं जोड़ा, अगर जोड़ा भी मिल जाए तो फिर पुत्र नहीं मिलता, पुत्र भी मिल जाए तो धन का तोड़ा, अगर धन भी मिल जाए तो फिर यश नहीं मिलता वो पुत्र नालायक हो जाएगा। अगर धन भी मिल जाए तो यश नहीं मिलता और यश भी मिल जाए तो फिर जीवन थोड़ा, देख ही नहीं पाओगे। ईमानदारी से काम करे बिन फिरता रहे दौड़ा–ही–दौड़ा। कहना मैं ये चाहता हूं कि ईमानदारी से काम किए बिना उद्धार नहीं है। ईमानदार आदमी को अगर स्वर्ग से भी कोई चीज ऊपर होती है तो वो मिलती है तो मैं धन्यवाद करता हूं आप सभी का और इस बजट का।

माननीय अध्यक्षः बहुत–बहुत धन्यवाद पवन जी, बहुत–बहुत धन्यवाद। थैंक्यू। श्री संजीव झा जी।

श्री संजीव झाः बहुत–बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, कि आपने मुझे इस बजट पर बोलने का मौका दिया। मैं आजादी के 75वें वर्षगांठ पर जो देशभति बजट पेश किया गया उसके लिए मैं अपने मुख्यमंत्री आदरणीय अरविंद केजरीवाल जी और वित्त मंत्री आदरणीय मनीष भाई का धन्यवाद करता हूं। और आज मैं उन तमाम क्रांतिकारियों को नमन करता हूं जिनकी बदौलत हमें ये आजादी मिली और हम आजादी की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं और खासकर जब इस सदन में जैसा कि वित्त मंत्री जी ने बजट के भाषण में कहा भी था। ये सदन इसलिए भी खास है चूंकि यहां अंग्रेजी कानून भी पास हुए थे तो ऐसे में जब देशभक्ति बजट इस सदन में हम पेश करते हैं तो मुझे लगता है कि ये ऐतिहासिक पल है और मेरे लिए विशेषकर ये सातवां बजट जब हमारे वित्त मंत्री जी मनीष जी पढ़ रहे थे तो मेरे लिए थोड़ा भावुक पल भी था। चूंकि 2013 में हम सब लोग पहली बार इस सदन में आए थे। हमें कोई राजनीतिक

अनुभव नहीं था कमोवेश हम 28 के 28 लोग जब सदन में आए थे तो किसी राजनीति पार्टी से जुड़े हुए लोग भी हम नहीं थे। उधर हम 28 थे और इधर 32। जब हम लोग पहली बार सदन में आए तो ऐसा लगा कि जैसे मान लीजिए चंबल में कोई सामान्य आदमी घुस के ये कहे कि तुम डकैती छोड़ दो और डकैत चारो तरफ से घेर ले तो क्या मंशा हो सकती है, हमारी स्थिति कमोवेश ऐसी ही थी। खैर मुझे ये लगता है कि 49 दिन की सरकार रही जिसने धोखा दिया वो जीरो पे गया, जिसमें हमें गाली गलौच किया वो 3 पे सिमट गया। लोग कई बार कहते हैं न, मुहावरा है चारो तरफ से घेरेंगे, तो ईश्वर ने चारों तरफ से घेरने लायक भी नहीं रखा और विजेन्द्र जी जीत के आए तो उन्होंने कहा कि भई क्या करोगे आप, बोला नहीं हम चारों तरफ से घेरेंगे, तो किसी ने कहा कि आप लोग तीन ही हो चारों तरफ से घेरोगे कैसे? तो मुझे ये लगता है कि जब हम लोग 5 साल के जो कामकाज हुए उस कामकाज की प्रशंसा न केवल सदन ने की बल्कि देश–विदेश में इसकी खूब चर्चा और खूब प्रशंसा हुई। जो शिक्षा में काम हुआ जैसे अभी अतिशी जी बता रहीं थी, जो स्वास्थ्य में काम हुआ, जो सामान्य जनता के लिए काम हुआ। आजादी के बाद जब पहली बार वोट पड़ रहा था जब वोट डालने लोग जा रहे थे तो केवल वोट नहीं डाल रहे थे साथ–साथ में वोट के साथ–साथ कोई फूल कोई बेलपत्र डाल रहा था और इस मंशा से डाल रहा था कि अब हमारे अपने नीति निर्माता मिलें। हमें अब अपने विधि विधाता मिलें ताकि हमारा अपना कानून होगा। हमारी अपनी व्यवस्था होगी और शायद हमारी भलाई के लिए होगी। कालांतर में इस तरह से राजनीति बदली कि लोगों का नेताओं से, सरकार से, अपने जनप्रतिनिधि से विश्वास खत्म हो गया। 2015 में पहली बार ऐसा लगा फिर से कि लोग उम्मीद को वोट कर रहे हैं और जब उम्मीद को वोट किया तो उसके परिणाम आपके सामने है। शिक्षा में जैसा मैंने कहा कि कमोवेश दिल्ली में भी किसी से पूछ लीजिए कि कोई कह दे कि मेरा बेटा इंजीनियरिंग किया है। कोई कह दे डॉक्टर मेडिकल किया है तो पहला सवाल क्या पूछता है अच्छा बेटा कोचिंग कहा से किया आपने। इसका मतलब है कि दिल्ली में या किसी भी प्राइवेट कोई भी स्कूल से पढ़कर आप इंजीनियर नहीं बन सकते, डॉक्टर नहीं बन सकते। तो फिर भला क्या गरीब का बच्चा इंजीनियर नहीं बनेगा क्या? कोई गरीब का बच्चा डॉक्टर नहीं बनेगा क्या? और मैं मनीष भाई को धन्यवाद करता हूं कि इन्होंने कहा

कि अगर गरीब के बच्चों में अगर वो क्षमता है तो दिल्ली सरकार ये जिम्मेदारी लेती है कि अगर वह इंजीनियरिंग करना चाहता है तो दिल्ली के महंगे से महंगे कोचिंग में एडमिशन ले दिल्ली सरकार सारा पैसा देगी और उसी का परिणाम है कि हजारों की संख्या में दिल्ली के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे इंजीनियर और डॉक्टर बने और जब वो इंजीनियर और डॉक्टर बने तो यहां से समाज निर्माण शुरू हो जाता है। चूंकि कोई बच्चा अगर वो डॉक्टर बनता है को केवल उसका अपना कैरियर नहीं बनता, वो अपने परिवार का भी समाधान करता है। जिस झुग्गी से निकलकर आया है उस झुग्गी में भी हेल्थ का समाधान देगा इससे देश का निर्माण होता है। इससे देशभक्ति होती है। तो मुझे ये लगता है कि न केवल शिक्षा में आज किसी भी इनकम बेस के लोग जो यहां बैठे हैं अगर उनको पूछिए कि आपका खर्चा कहां होता है, देखिए आप भी देखेंगे, हम भी देखेंगे बाकी लोग भी जो बैठे हैं जो सुन रहे हैं जहां तक सदन की आवाज जाती है आधा खर्चा या तो आपके घर के लोगों के इलाज कराने में या आपके बच्चों को पढ़ाने में आपकी कमाई का आधा खर्चा वहां जाता है। तो ऐसे में कोई सरकार अगर ये जिम्मेदारी ले ले कि आपके बच्चों की अच्छी शिक्षा की जिम्मेदारी सरकार की। आपके बच्चों के घर के लोगों के अच्छे स्वास्थ्य की जिम्मेदारी सरकार की, तो आपकी कमाई का आधा पैसा यूं ही बचेगा और वो कहीं लगेगा तो शायद उससे समाज निर्माण, परिवार निर्माण और देश निर्माण होगा। इसको हम देशभक्ति कहते हैं। तो अध्यक्ष महोदय मुझे ये लगता है कि आज कमोवेश जब मैं चुनाव में इस बार चुनाव के बीच में लोगों के बीच जा रहा था। दिल्ली सरकार ने तीर्थ यात्रा योजना शुरू की जिसकी बजट में चर्चा भी हुई है। तीर्थ यात्रा योजना के तहत दिल्ली के बहुत सारे बुजुर्गों को, दिल्ली के बुजुर्गों को तीथ यात्रा कराई जाती है। मैं जिस विधान सभा से आता हूं, दिल्ली का सबसे पिछड़ा और सबसे गरीब विधान सभा में से एक विधान सभा हमारा है। जब अपने यहां के बुजुर्गों को लेकर जब मैं जाता था ट्रेन तक छोड़ने के लिए तो उनकी आंखों में खुशी के आंसू होते थे और वो कहते थे कि जो काम मेरा बेटा नहीं कर पाया वो काम मेरे अरविंद केजरीवाल ने किया, आज अरविंद केजरीवाल मेरा श्रवण कुमार है, अरविंद केजरीवाल मेरा बेटा है। तो जिनके पास दिल्ली के इतने मां–बाप का, इतने बुजुर्गों का आशीर्वाद हो उनका नापाक इरादें वाले क्या बिगाड़ सकते हैं। अब उसी का परिणाम है कि जब

2021 में परिणाम आया, तमाम तरह के हेट कैंपेन के बावजूद लोगों ने अरविंद केजरीवाल को चुना। तो मैं अध्यक्ष महोदय ये कहना चाहता हूं जब मैं मुख्यमंत्री जी को सुन रहा था उन्होंने एक एतिहासिक बात सदन में अभी कही एलजी के अभिभाषण मे। उन्होंने कहा कि हम अब राम राज्य की अवधारणा की तरफ जा रहे हैं। अब उन्हीं की अवधारणा पर एक आदर्श राम राज्य की प्रतिष्ठापना के पीछे एक सिद्धान्त था उसको हम लागू करेंगे। एक बात समझिए अब मुझे लगता है कि सदन के जरिए मैं देश की जनता को भी कहना चाहता हूं कि अगर इस देश में राजनीति जाति और धर्म के नाम पर सिमट कर रह गया तो जब जाति के नाम पर आप वोट करते तो जातीय कट्टरता बढ़ती है, समाज बंटता है। अगर आप धर्म के नाम पर वोट करते हैं तो धार्मिक कट्टरता बढ़ती है, समाज बंटता है, अगर आप जाति के नाम पर वोट करते है तो जातीय कट्टरता बढ़ती है, समाज बंटता है, लेकिन अगर आप विकास के नाम पर वोट करते है जो दिल्ली के लोगों ने किया तो राम राज्य की अवधारणा आती है। अन्तिम आदमी के लिए काम होता है। तो मुझे लगता है कि देशभक्ति बजट के जरिये आज पूरे देश में आम आदमी पार्टी की सरकार, अरविंद केजरीवाल जी के नेतृत्व में ये बताया कि विकास के नाम पर वोट करने पर क्या काम हो सकता है। ये अपने आप में उदाहरण है। तो जाति, धर्म को छोड़कर अब विकास के नाम पर वोट करें हम सभी लोग। जब मैं माननीय प्रभु श्रीराम को याद करता हूं तो कई बार हमारे मन में क्या आता है कि प्रभु श्रीराम मेरा भला करें या समाज का भला करें। समाज में कुछ अच्छा हो लेकिन कुछ चन्द लोग प्रभु श्रीराम के नाम पर डराने की भी कोशिश करते हैं। ऐसे लोग जय श्रीराम चुनाव के वक्त कहते हैं। भगवान उनसे कभी खुश नहीं होंगे और बात–बात में अभी एमसीडी का रिजल्ट आया, मैं किसी चैनल में डिबेट पर था। मैंने ये समझाने की कोशिश भी की और आप लोग सदन में हमारे अपोजिशन के लोग है कि अगर आप जब कभी चुनाव का वक्त आता है तो आप धर्म की बात करते हैं। दिल्ली में हनुमान जी का मन्दिर तोड़ दिया गया। किस तरह तोड़ा। सौरभ भारद्वाज जी ने प्रेस कान्फ्रेंस कर सारी बाते बतायीं। लेकिन आरोप–प्रत्यारोप खूब चला तो जब रिजल्ट आया तो हमने कहा कि धर्म के नाम पर आपने मन्दिर तोड़ा। जब मन्दिर तोड़ा तो उसके बाद आवियस है प्रभु श्रीराम नाराज होंगे। अगर नाराज होंगे तो आपको जीरो मिलेगा। आरोप–प्रत्यारोप ओवरआल सब

जानते हैं। तो उसका ये परिणाम था कि एमसीडी में आप जीरो हो गये तो इसीलिए प्रभु श्रीराम के नाम पर कभी कोई राजनीजि नहीं कीजिएगा। ये हिदायत भी है और चेतावनी भी है। दूसरी बात देखिए, जब हम गेरूआ और भगवा ये त्याग का प्रतीक है। बड़े–बड़े ऋषि और मुनि जब भगवा वस्त्र पहनते थे तो हम मानते थे कि ये त्याग के प्रतिमूर्ति हैं या जब प्रभु श्रीराम राजसत्ता छोड़कर गये तो गेरूआ वस्त्र पहने थे। महात्मा बुद्ध जब राजसत्ता छोड़कर गये तो गेरूआ वस्त्र पहने। अब ये लोग सत्ता पाने के लिए गेरूआ वस्त्र का उपयोग करने लगे। तो कई बार जो त्याग का प्रतीक था आज वो भी बदनाम हो रहा है। भगवान, माफ कीजिएगा आप सब लोग, कम से कम उन तमाम ऋषि, मुनियों को जिन्होंने त्याग किया उनके त्याग पर सवाल न उठे ये जिम्मेदारी आपकी है। गेरूआ वस्त्र पहनकर गुण्डागर्दी बन्द कर दीजिए आप। भगवा वस्त्र पहनकर गुण्डागर्दी बन्द कर दीजिए आप।

माननीय अध्यक्ष : कन्क्लूड कीजिए अब संजीव जी।

श्री संजीव झा : तो मेरा बस इतना ही कहना है अध्यक्ष महोदय कि ये देशभक्ति बजट के जरिए जो राम राज्य की परिकल्पना की अवधारणा पर सरकार काम करने की ठानी है, मैं सैल्यूट करता हूं और मुझे लगता है कि मैं सौभाग्यशाली हूं। देखिए, हर पल के इतिहास लिखे जाते हैं। मुझे लगता है कि आज मैं जिस सरकार का हिस्सा हूं। आज अरविंद भाई या मनीष भाई के नेतृत्व में जो काम करने का अनुभव मिला है। इतिहास तो इसका लिखा जायेगा। तो मुझे लगता है कि इस ऐतिहासिक पल का भागीदार होने का मौका मुझे मिला। इसके लिए विशेष आपको धन्यवाद करता हूं और मुझे पूरा विश्वास है कि इसी तरह हर बजट में एक नया कीर्तिमान स्थापित करेंगे। मैं फिर से ढेर सारा साधुवाद, ढेर सारा आभार अरविंद केजरीवाल जी के नेतृत्व में और मनीष भाई के इस बजट के द्वारा जो दिल्ली को मिला है, उसका मैं आभार व्यक्त करता हूं। बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : बहुत–बहुत धन्यवाद संजीव जी। बहुत–बहुत धन्यवाद। श्री मदन लाल जी।

श्री मदन लाल : धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे इस वर्ष के सबसे

उत्तम बजट पर बोलने का मौका दिया। दिल्ली के लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी के नेतृत्व में हरदिल अजीज हमारे माननीय उप मुख्यमंत्री और वित्त मंत्री ने जो बजट इस सदन में पेश किया है उसकी जितनी प्रशंसा की जाये वो कम है। बीजेपी, जय श्रीराम का नारा देते हुए जब–जब संकट इन पर आया, जय श्रीराम का नारा देते हुए भगवान राम को स्मरण करते हुए बार–बार सत्ता में आने का प्रयास करती रही और पिछले दो बार से केंद्र की सत्ता में है। राजनीति, धर्मनीति हो सकती है पर राजनीति, धर्म के लिए नहीं हो सकती है। धर्म हर व्यक्ति का अपना परसनल मामला है। जब हम राजनीति की बात करते हैं तो राज्य करने की अच्छा राज्य करने की इच्छा रखते हैं। रामराज्य की कल्पना करते हुए अगर हमने श्रीराम जन्म भूमि को या मन्दिर को बनाने का संकल्प लिया था तो सबसे पहले बीजेपी ने कोशिश की थी 1993 में। ये वो समय था जब मण्डल आयोग और मैं बाबा अम्बेडकर जी को इस बारे में धन्यवाद देना चाहता हूं, प्रणाम करना चाहता हूं कि समाज में फैली हुई कुरीतियों और डिसपैरिटी को नष्ट करने के लिए उन्होंने समाज के सबसे ज्यादा अपेक्षित और प्रताणित समाज को समाज के बराबर लाने के लिए जो प्रयत्न किया था वही विश्वनाथ प्रताप सिंह जी ने एक बार फिर कोशिश की थी मण्डल आयोग के द्वारा अदर बैकवर्ड क्लासेज को उस समूह में जोड़ने के द्वारा। एक नारा हम सुनते है आजकल कि जब–जब मोदी डरता है, पुलिस को आगे करता है क्योंकि कई बार हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय उप–मुख्यमंत्री जी और मंत्रीगण और एमएलएज के खिलाफ कई बार दूषित विचारधारा के द्वारा पुलिस के एक्शन हुए हैं परन्तु बीजेपी जब–जब डरी तब–तब उन्होंने धर्म को आगे करना शुरू कर दिया है। श्रीराम का नाम लेकर मन्दिर बनाने की कवायद शुरू की है। 1993 में लालकृष्ण आडवाणी जी सोमनाथ से अयोध्या तक की यात्रा की। उस यात्रा के नाम पर, उस मन्दिर बनाने के नाम पर करोड़ो–करोड़ लोगों से लूटपाट की गयी और लोगों को वो उनका विचार अच्छा नहीं लगा और उर्दू में शेर है कि :

इन्तहाये लाबरी में जब नजर आया न वो ।

हंसकर वो कहने लगे, बिस्तर को झाड़ा चाहिए।।

उस चीज की चाह में जब वो शख्स नजर न आया तो कहा गया कि बिस्तर को झाड़ दो, नीचे कई टपक पड़ेंगे और इन्होंने लालकृष्ण आडवाणी जी को ही झाड़ दिया। वो बहुत दिन कोशिश करते रहे और इन्होंने उनसे पीछा छूटा लिया और कोशिश थी कि किसी तरह भगवान श्रीराम का मन्दिर मोदी जी के नाम लिखा जाये और ये उसमें भी फेल हो गये क्योंकि वो निर्णय सुप्रीम कोर्ट का था। महोदय, जब—जब श्रीराम के नाम पर मन्दिर बनाने की बात हुई तो उसका एक परपज होना चाहिए था कि भगवान श्रीराम के मन्दिर के नाम पर जो आप रामराज्य की स्थापना करने की बात भूल जाते हो, वो श्री अरविंद केजरीवाल जी ने किया। न आपने राम मन्दिर बनाया और न ही राम मन्दिर के नाम पर लोगों को रामराज्य दिया। आपके राज्य में भी वही हुआ जो कांग्रेस करती थी। सरकारी स्कूलों की शिक्षा को गला घोंटकर रख दिया गया। प्राइवेट स्कूलों को हमेशा प्रमोट किया गया। चाहे वो कांग्रेस का जमाना हो, चाहे बीजेपी का हो और माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा उनके नेतृत्व में जो धारणा उन्होंने रामराज्य के नाम पर इस सदन के समक्ष रखी। माननीय उप—मुख्यमंत्री जी ने जिस बात की चर्चा की कि इस राज्य में अब कोई भूखा नहीं होगा। ये रामराज्य की सही कल्पना है। जो लोग रामराज्य की बात, श्रीराम की बात करते हैं उन्होंनें कभी भी कोशिश नहीं की कि लोगों को कोई ऐसी स्कीम दें जिससे समानता का अधिकार हो। हम अपने धर्म ग्रन्थों में पढ़ते रहे हैं कि भगवान श्रीकृष्ण और गरीब सुदामा दोनों एक कक्षा में पढ़ते थे और यहां डिसपैरिटी का आलम ये था कि गरीब का बच्चा सरकारी स्कूल में जहां वो चपरासी और क्लर्क बनेगा क्योंकि शिक्षा पद्धति ऐसी थी। लार्ड मैकाले जिस शिक्षा पद्धति को यहां छोड़ गये उसी को निरन्तर आगे किया गया और एक ये बजट है जहां शिक्षा के नाम पर हर साल 25 परसेन्ट का बजट केवल शिक्षा पर जाता है क्योंकि शिक्षा को सरकार ने सबसे ज्यादा महत्व दिया है। चाहे महिलाओं की बात हो, चाहे बुजुर्गों की बात हो। हर फ्रन्ट पर ये सरकार हमेशा।

माननीय अध्यक्ष : मदन जी कन्क्लूड करिए अब प्लीज। कन्क्लूड करिए।

श्री मदन लाल : और उसी श्रृंखला में अध्यक्ष महोदय लोगों की बात सुनी जाये। इसलिए माननीय मुख्यमंत्री जी अपने यहां रोज दरबार लगाते हैं। जनता दरबार

लगाते हैं। लोगों की सुनें। लोगों की समस्याओं को पता करें। माननीय उप–मुख्यमंत्री जी के घर चले जायें। जनता दरबार लगता है। माननीय शिक्षा मंत्री जी, माननीय हेल्थ मिनिस्टर के यहां चलें जायें या किसी और मंत्री के यहां चले जायें, जनता दरबार लगता है क्योंकि जनता के लिए ये दरवाजें हमेशा खुले होते हैं। केवल इसी की वजह कि आज जनता के हित में जितने भी कार्यक्रम होने जरूरी थे वो इस बजट के द्वारा, इस सरकार के द्वारा आज घर–घर पहुंचाये जा रहे हैं और जिस तरीके से पहली बार मोहल्ला क्लीनिक्स का जाल पूरे 496 मोहल्ला क्लीनिक्स के द्वारा यहां पहुंचाया गया और महिलाओं के लिए अलग से मोहल्ला क्लीनिक की जो अवधारणा आज पेश की गयी है उसके लिए और समस्त बजट में जो भी प्रावधान हुए है उनके लिए मैं माननीय उप–मुख्यमंत्री जी और वित्त मंत्री जी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं और धन्यवाद करता हूं आपका भी कि आपने मुझे इस पर बोलने का मौका दिया। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : श्री विजेंद्र गुप्ता जी।

श्री विजेंद्र गुप्ता : आदरणीय अध्यक्ष जी, पिछले चार दिन से सदन में हम शिक्षा पर बड़े–बड़े दावे सुन रहे हैं।

बड़ा शोर सुनते थे पहलू में दिल का।

जो चीरा तो इक कतरा खून निकला।।

अभी मंत्री जी शायद अपने वक्तव्य में शिक्षा विभाग के काले कारनामों का जिक्र करना भूल गये थे। चलिए मैं उन काले कारनामों का जिक्र करूंगा तो वो जरूर जवाब देंगे। अभी पिछले दिनों अध्यक्ष जी डाइरेक्टर, एजूकेशन, दिल्ली सरकार के जिनका एक वीडियो सोशल मीडिया में काफी वायरल हुआ है और मीडिया की सुर्खियाँ भी बना है। शहर में चर्चा का विषय भी है। शिक्षा का एक नया मॉडल। डाइरेक्टर, एजूकेशन खुद क्लास–क्लास जा रहे हैं और कह रहे हैं कि यदि आप जवाब नहीं जानते हैं तो कुछ भी लिखें। उत्तर पुस्तिका में प्रश्नों को ही उत्तर की जगह लिख दें। उत्तर पुस्तिका को खाली न छोड़ें। हमने आपके शिक्षकों से बात की

है और उनसे कहा है कि वे आपको अंक देंगे बशर्ते उत्तर पुस्तिका में कुछ लिखा। आप कुछ भी लिख दीजिए। हमने सीबीएसई से भी ये कहा है कि अगर कोई बच्चा कुछ लिखता है तो उनको अंक दिया जाना चाहिए। ये हमारी सरकार की मांग है।

माननीय अध्यक्ष : चलिए, चलिए, बोलने दीजिए उनको।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अब प्रश्न ये है कि जिस सरकार का शिक्षा विभाग का मुखिया टीचर्स को कह रहा है कि सबको नम्बर देने हैं। चाहे उत्तर की जगह प्रश्न ही लिख दिये गये हो। सीबीएसई में जाकर बात कर रहा है कि सरकार चाहती है कि कुछ भी लिखा हो, नम्बर दिये जाने चाहिए और बच्चों को भी जाकर ये इन्फार्म किया जा रहा है कि सबसे बात हो गयी है आप कुछ भी लिख दो। ये है शिक्षा का नया मॉडल। अभी शिक्षा मंत्री जी ने जो वित्त मंत्री के रूप में बजट पेश किया। उससे पहले एक आउटकम बजट और कहा कि हमारे आउटकम बजट में एजूकेशन में 16 परसेंट off track indicators बता रहे हैं। अध्यक्ष जी, मैं आपके दावे से सरकार को चुनौती देता हूं कि ये off track 16 परसेंट नहीं है ये हण्ड्रेड परसेंट है। ये है आपका शिक्षा का मॉडल। आपके शिक्षा के मॉडल में आपने एक वोकेशनल स्ट्डीज B.Voc. एक कोर्स शुरू किया था, वो पूरी तरह से फ्लॉप शो सिद्ध हुआ। आपने अभी पिछले दिनों दिल्ली स्कील एंड एन्टरप्रेन्योर यूनिवर्सिटी, 10 पोलीटेक्निक उनको इस यूनिवर्सिटी में मर्ज कर दिया गया और उसका नाम रख दिया डीएसईयू। करोड़ों रुपया, सैकड़ों–करोड़ों रुपया इस डीएसईयू में खर्च किया जा रहा है सिर्फ नेम प्लेट चैंज की है। कुछ भी चैंज नहीं हुआ। कुछ भी चैंज नहीं हुआ। वही पॉलिटेक्निक है, लेकिन अब आगे सुनिये। आपने एक यूनिवर्सिटी बनाई थी। जो इंस्टि्ट्यूट था नेताजी सुभाष यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, एनएसयूटी द्वारका, जिसका हैडक्वाटर है। अध्यक्ष जी थोड़ा पानी मिल जाएगा क्या?

माननीय अध्यक्षः एक देना बोतल।

श्री विजेंद्र गुप्ताः नेताजी सुभाष यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, इसमें आपने दो कैम्पस बनाये। ईस्ट दिल्ली कैम्पस, तो ईस्ट कैम्पस जो अम्बेडकर इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस कम्युनिकेशन एंड रिसर्च, जो गीता कॉलोनी में था, उसको ईस्ट कैम्पस बता

दिया गया एनएसयूटी का और जो चौधरी ब्रह्म प्रकाश गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज, जाफरपुर नजफगढ़ में था, उसको आपने वेस्ट कैम्पस बना दिया और ये हो गया एनएसयूटी। अब एनएसयूटी जो किया गया, उसमें आपने शिक्षा का व्यवसायिकरण कर दिया क्योंकि वही सब्जेक्ट जो पहले आईपी यूनिवर्सिटी का पार्ट था ये कॉलेज और वो अम्बेडकर इंस्टिट्यूट था, उसमें 38 हजार रुपए सालाना बच्चों से फीस ली जाती थी, जो पढ़ने आते थे। 38 हजार रुपए और एनएसयूटी में मिलाने के बाद वो फीस बढ़ाकर दो लाख 11 हजार रुपए एवरेज। पहले साल में दो लाख, फिर दो लाख 20 हजार ऐसे पूरा एवरेज निकालेंगे चार पांच साल का तो 2 लाख 11 हजार रुपए हर स्टूडेंट से और जो बच्चे वहां पढ़ने आएंगे 2 लाख 11 हजार रुपए सालाना तो सरकार को देंगे, उसके बाद किताबें, कॉपी खरीदेंगे, उसके बाद कोई और, और जो दिल्ली से बाहर से आकर पढ़ रहा होगा, उसपर हॉस्टल का खर्चा होगा, रहने का खर्चा होगा, तमाम् तरह के खर्चे होंगे तो कुल मिलाकर आप सोचिए कि क्या कोई गरीब परिवार का बच्चा आपके शिक्षा मॉडल में क्या वो इस विश्वविद्यालय में शिक्षा ले सकता है, कतई नहीं ले सकता?

अध्यक्ष जी एक तरह से सरकार खुद हायर एजुकेशन का प्राइवेटाइजेशन कर रही है। अभी यहां पर एक और भ्रष्टाचार का। अध्यक्ष जी मेरे तो तीन मिनट भी नहीं हुए।

माननीय अध्यक्षः भाई साहब आठ मिनट हो गये।

श्री विजेंद्र गुप्ताः बड़ी जल्दी याद आ रही है घंटी आपको। आप बता दीजिए मैं बैठ जाता हूं वैसे ही।

माननीय अध्यक्षः मैं ऐसा नहीं कह रहा हूं।

श्री विजेंद्र गुप्ताः हां जी।

माननीय अध्यक्षः ये एक दो मिनट की वार्निंग है।

श्री विजेंद्र गुप्ताः नहीं आप मुझे टाईम बता दीजिए। मैं उतने टाईम में खत्म कर दूंगा।

माननीय अध्यक्षः अभी आठ मिनट हो चुके हैं।

श्री विजेंद्र गुप्ताः आपने सबको 10 मिनट दिये हैं। मेरे 3 मिनट, 2 मिनट साथ में और दे दीजिए।

माननीय अध्यक्षः आठ मिनट हो गये भाई साहब।

श्री विजेंद्र गुप्ताः चलो 6 मिनट और दे दीजिए। 5 मिनट और दे दीजिए।

माननीय अध्यक्षः बोलिए आप ये फिनिश करिये।

श्री विजेंद्र गुप्ताः एक बजने में 10 मिनट हैं। पांच–छः मिनट में मैं खत्म कर दूंगा।

माननीय अध्यक्षः चलिये फिनिश करिये। फिनिश करिये।

श्री विजेंद्र गुप्ताः मैं ज्यादा बोलना भी नहीं चाहता। ज्यादा बोलूंगा तो आपको ज्यादा परेशानी होगी। अब आप ये।

....व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः करने दो उनको कंक्लूड कर रहे हैं वो अभी।

श्री विजेंद्र गुप्ताः अभी वित्त मंत्री जी ने अपने भाषण में कहा कि हम दिल्ली सरकार अस्पतालों में फ्री वैक्सिनेशन करेंगे। मैं मंत्री जी को बताना चाहता हूं कि भारत की सरकार इसके लिए बजट में 35 हजार करोड़ रुपए का प्रावधान कर चुकी है और जिसके अंतर्गत वैक्सिनेशन हो रहा है। आप तो अभी बजट में पास करेंगे लेकिन उससे पहले ही वैक्सिनेशन मुफ्त में हो रहा है। ये 50 करोड़ का क्या गबन किया जा रहा है, क्या घपला इस पैसे का होगा, ये सदन जानना चाहता है, ये मैं जानना चाहता हूं, ये विपक्ष जानना चाहता है। जब वो वैक्सिनेशन फ्री ऑफ कॉस्ट वहां उपलब्ध है पूरे इन्फ्रास्ट्रक्चर के साथ तो आपने वैक्सिनेशन की खरीद के लिए 50 करोड़ रुपए क्यों रखे हैं। ये एक बड़ा प्रश्न है, ये भ्रष्टाचार की बू इस मामले में स्पष्ट रुप से आती है। क्या ये भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ेगा बसों की तरह या फिर इसपर आपका कोई जवाब है तो जरूर सदन को बतायें।

एक योजना आपने दिल्ली के फरिश्ते। इसका बड़ा गुणगान किया जा रहा है। इसमें 10 हजार लोगों को लाभ मिला है। लेकिन हाई कोर्ट क्या कहता है। "Delhi High Court on Wednesday said that the 'Farishte Delhi ke' Scheme was being hijacked by touts and steps should be taken to prevent misuse." आज दिल्ली के फरिश्ते योजना की मैं सदन के समक्ष आपके माध्यम से सरकार से मांग करता हूं कि जांच होनी चाहिए। इसमें भारी भ्रष्टाचार हो रहा है, जिसे आप दिल्ली के फरिश्ते कहकर लोगों को गुमराह कर रहे हैं। उसमें प्राईवेट अस्पतालों में मुफ्त ईलाज करने का एक जरिया लोगों ने बिना एक्सीडेंट की चोट के ये निकाला है और इससे सरकार के खजाने से सैकड़ों करोड़ रुपया व्यर्थ जा रहा है। लेकिन आपको तो मात्र प्रचार करना है। अभी प्रचार पर भी आगे आऊंगा। आपने अभी फैलोज रखे हैं। इन फैलोज की हालत क्या है। ये बेचारे युवा है। कुछ करना चाहते हैं। आप एमएलए के पास इनको भेज रहे हैं। वो उनको कहते हैं कि आप पीए की तरह काम करते हो मेरा। आपको टाईपिंग आती है क्या? आप कोई क्लर्किकल जॉब कर सकते हो तो बताओ। वो क्वालिफाइड फैलोज हैं। बातें बड़ी बड़ी की गयी, युवाओं की भागीदारी होगी सरकार में, 14 करोड़ रुपया बजट में खर्च किया जा रहा है लेकिन हो क्या रहा है। न कोई स्पेसिफिक रूल है, न कोई प्रोजेक्ट उनको दिया गया है, न एमएलए को कोई ट्रेनिंग दी गयी है कि इन फैलोज को कैसे इस्तेमाल करना है और न कोई उनकी सुनने वाला है, तो कुल मिलाकर ये भी पूरे का पूरा आपका मामला पूरी की पूरी तरह समाप्त है।

अभी इसमें लोकल बॉडीज की मैं बात करना चाहता हूं। वित्त मंत्री जी आप अपराध कर रहे हैं। दिल्ली नगर निगम से आपने इस बजट में इस वर्ष 998.5 करोड़ लोन जो है, उसको जो रि–पे करने का प्रावधान रखा है, उनसे वसूलने का प्रावधान रखा है। ये सरकारें हैं। आप भी सरकार है, वो भी म्यूनिसपल सरकार है। दोनों सरकारों का काम है लोगों के हित में काम करना। अगर आप एक सरकार को दबा रहे हैं, निचोड़ रहे हैं तो लोगों को मिलने वाली सुविधाओं पर उसका सीधा असर पड़ता है। आप चुनावी हथकंडे मत अपनाईये। चुनावी वर्ष में दिल्ली जल बोर्ड को आपने 41 हजार करोड़ रुपया लोन दिया हुआ है पिछले छः साल में और इस वर्ष

भी आप जल बोर्ड को 898 करोड़ रुपया लोन दे रहे हैं। रिकवरी के लिए एक रुपया आप इस बजट में नहीं रख रहे हैं।

माननीय अध्यक्षः विजेंद्र जी हो गया आपका।

श्री विजेंद्र गुप्ताः अब भी।

माननीय अध्यक्षः विजेंद्र जी।

श्री विजेंद्र गुप्ताः मुख्यमंत्री मुफ्त सीवर कनेक्शन योजना 110 करोड़ रुपया का बजट था घटाकर 1 करोड़ कर दिया। एमएलए हैड।

माननीय अध्यक्षः विजेन्द्र जी।

श्री विजेंद्र गुप्ताः 700 करोड़ से घटाकर 280 करोड़ दिया। अध्यक्ष जी आप तो देखो।

माननीय अध्यक्षः नहीं समय हो गया।

श्री विजेंद्र गुप्ताः 6 मिनट मैंने आपको बोला है। अध्यक्ष जी आप घड़ी आप देखिये।

माननीय अध्यक्षः मैं घड़ी देख रहा हूं।

श्री विजेंद्र गुप्ताः अभी यहां देखिये आप। इसमें टाईम वेस्ट हो रहा है।

माननीय अध्यक्षः कोई समय नहीं।

श्री विजेंद्र गुप्ताः मेरे सामने, मैं एक मिनट में खत्म कर दूंगा। आपने

माननीय अध्यक्षः 15 मिनट हो गया।

श्री विजेंद्र गुप्ताः आपने 700 करोड़ रखा है। आप कहते हैं राम राज्य में महिलाओं की सुरक्षा की बात करेंगे। आपने निर्भया फंड में 287 करोड़ रुपया था, सदस्यों को जान कर हैरानी होगी, बजट में उसको 1 लाख रुपया कर दिया गया है।

पब्लिसिटी पर आपने 30 परसेंट enhance किया है। कोविड काल में खर्च किया 356 करोड़ ये जीएडी के थ्रु। बाकी डिपार्टमेंट अलग।

माननीय अध्यक्षः नहीं अब विजेन्द्र जी अब बैठिये प्लीज।

श्री विजेंद्र गुप्ताः और अब 466.80 करोड़।

माननीय अध्यक्षः विजेन्द्र जी आप बैठिये।

श्री विजेंद्र गुप्ताः आप कहते हैं हम एमसीडी को ग्रांट दे रहे हैं ट्रांसफर ड्यूटी की। अध्यक्ष जी लास्ट, लास्ट।

माननीय अध्यक्षः नहीं नहीं, मैं डिस–अलाऊ, नहीं बिल्कुल नहीं।

श्री विजेंद्र गुप्ताः ये लास्ट है। एक मिनट में मैं खत्म दूंगा। इतना मत परेशान होईए अध्यक्ष जी। एक मिनट में खत्म हो जाएगा। ट्रांसफर ड्यूटी ये एमसीडी का टैक्स है। क्या प्रोब्लम है जी।

माननीय अध्यक्षः आप अपने सदस्यों का समय ले रहे हैं।

श्री विजेंद्र गुप्ताः आप की पोल खुल रही है इसलिए।

माननीय अध्यक्षः विजन्द्र जी।

श्री विजेंद्र गुप्ताः अरे आपको सुनने का माद्दा नहीं है। माद्दा नहीं है आपको सुनने का। सुनिये आपने झूठ बोला।

माननीय अध्यक्षः आप जितनी देर बोल रहे हैं...

.....व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः आप तो कलेक्शन एजेंट हो।

माननीय अध्यक्षः आप अपने सदस्यों का समय ले रहे हैं।

श्री विजेंद्र गुप्ताः दिल्ली सरकार कलेक्शन एजेंट है दिल्ली नगर निगम की।

चार परसेंट चार्ज करते हैं आप। DMC Act में 113 सेक्शन में ये उनका ओब्लिगेट्री टैक्स है।

माननीय अध्यक्षः विजेन्द्र जी।

.....व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः आपने कहा हमे ग्रांट दे दी।

माननीय अध्यक्षः विजेन्द्र जी बैठिये।

श्री विजेंद्र गुप्ताः बात इसपर कहते हैं ये झूठ हैं।

माननीय अध्यक्षः आप पांच मिनट से ज्यादा ले चुके हैं।

.....व्यवधान...

श्री विजेंद्र गुप्ताः आप कलेक्शन एजेंट हैं। मैं ये कहना चाहता हूं। आपने मुद्दो को

.....व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः विजेंद्र जी जो बोल रहे हैं ये कार्यवाही से निकाल दिया जाए। अब इसके बाद जो भी बोल रहे हैं, कार्यवाही से निकाल दिया जाए। आप सुन ही नहीं रहे हैं।

श्री विजेंद्र गुप्ताः xxxxxxxxxxx[8]

.....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः बैठिये, बैठिये। श्री राजेन्द्र गौतम जी। माननीय मंत्री श्री राजेन्द्र गौतम जी। नहीं कोई रिकार्ड नहीं हो रहा है ये। मैंने बोल दिया, रिकार्ड नहीं हो रहा है।

---

8 चिन्हित अंश अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से निकाले गये।

.....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः बैठिये, जून साहब बैठिये। प्लीज। गौतम जी। जून साहब वो तो ये चाहते हैं कि ये हो। वो ये चाहते हैं, ये हो। हम नहीं चाहते ये हो।

.....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः त्रिपाठी जी आप बैठिये, प्लीज त्रिपाठी जी बैठिये।

.....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः गौतम जी।

.....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः जो विधायक 20 मिनट में भी नहीं बोल सकता, वो जीवन भर नहीं बोल सकता।

माननीय समाज कल्याण मंत्री(श्री राजेंद्रपाल गौतम): धन्यवाद अध्यक्ष जी।

लोग टूट जाते हैं, एक घर बनाने में,

लोग टूट जाते हैं, एक घर बनाने में,

किंतु कुछ लोग तरस नहीं खाते बस्तियाँ जलाने में।

आज मनीष जी ने आदरणीय अरविंद केजरीवाल जी के नेतृत्व में जो राष्ट्रभक्ति से सराबोर बजट का निर्माण किया है और उसमें स्कूलों के अंदर राष्ट्रभक्ति बच्चों के अंदर पैदा हो, देश के प्रति जिम्मेदारी का एहसास हो, देश से प्यार की भावना बढ़े, बच्चों में समता, मैत्री, भाईचारे का और न्याय का संचार हो, उसके लिए यह जो देशभक्ति से सराबोर बजट माननीय अरविंद केजरीवाल जी के नेतृत्व में माननीय उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया जी लेकर आए हैं सबसे पहले मैं उनका धन्यवाद करता हूं। ये ऐतिहासिक बजट है और मैं समझता हूं कि केवल दिल्ली के लिए नहीं पूरे देश के लिए आने वाले समय में जब सरकारों में चर्चा होगी कि देश का बेहतरीन

बजट कौन—सा रहा, तो मैं समझता हूं 2021—22 का दिल्ली की विधान सभा में जो बजट पेश किया गया है उसकी चर्चा जरूर होगी। मुझे याद है जब रामस्वरूप वर्मा जी उत्तर प्रदेश के वित्त मंत्री थे। तो देश का पहला ऐसा बजट था जो कृषि को केंद्रित करके बनया गया था और वो फायदे का बजट था, वो घाटे का बजट नहीं था। देश में पहली बार ऐसा हुआ था और उसके बाद ये दिल्ली का बजट है जो फायदे का बजट है। इसके लिए मैं माननीय उप मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद करता हूं और साथ ही साथ मैं चाहता हूं कि इस बजट में जो उन्होंने राष्ट्रभक्ति का जो करिकुलम जोड़ा है उसका इतना असर तो निश्चित तौर पर जरूर होगा कि अभी पिछले दिनों एक सप्ताह पहले गुजरात के अंदर एक अनुसूचित जाति के युवा की शादी थी। शादी घोड़े पर निकालने के लिए उसको पुलिस की मदद लेनी पड़ी, कानून का सहारा लेकर लड़ना पड़ा। अनफोरच्यूनेटली उस शादी में कई सौ जवान पुलिस के लगे तब कहीं जाकर घोड़े पर वो बारात निकल पाई। आखिर कैसे भारत का निर्माण हम लोग कर रहे हैं जो भारत के आजादी के मतवाले थे, जो स्वतंत्रता सेनानी थे जो भारत के संविधान निर्माता थे, उन्होंने कौन से भारत का सपना देखा था। शहीद भगत सिंह जो इतनी कम उम्र में जिन्होंने हंसते हुए मुस्कराते हुए फांसी के फंदे को चूम लिया, अपने प्राणों की देश के लिए आहूति दे दी। आप कभी उनकी किताबों को पढ़िए जब वो जेल के अंदर बन्द थे तो वो किस तरह के समाजवादी भारत के निर्माण की परिकल्पना करते थे। वो जाति के विरूद्ध और पाखंडवाद के विरूद्ध जो उनकी तीव्र सोच थी उस सोच के भारत का वो सपना देखते थे। उन्होंने कभी शायद ऐसा नहीं सोचा होगा कि भारत आजाद होगा और भारत के अंदर किसी की जाति और धर्म पूछकर उसकी हत्या की जाएगी। ऐसा सपना उन्होंने नहीं देखा था। आजकल देश के अंदर एक ऐसी पार्टी है जो फर्जी राष्ट्रवाद की बात तो करती है लेकिन दिलों में जहर घोलती है। लोगों के सपनों को चकनाचूर करती है, जाति और धर्म की राजनीति करती है और इस हद तक इस तरह की राजनीति पिछले 6 सालों में 7 सालों में देश में बढ़ी है जिसमें इस तरह के दृष्टांत देखने को मिलते हैं जहां जाति पूछकर धर्म पूछकर लोगों की हत्याएं की गई। तो ऐसे भारत का सपना स्वतंत्रता सेनानियों ने नहीं देखा था। मुझे दुख होता है जब मैं एक घटना पढ़ता हूं। महाराष्ट्र पुलिस के एक सब—इंस्पेक्टर ने बारिश से बचने के लिए हनुमान मंदिर की

सीढ़ियों पर वो खड़ा हो गया। तो उसको लोगों ने पत्थरों से उस सब–इंस्पेक्टर को सिर्फ इसलिए मार दिया चूंकि वो अनुसूचित जाति का था। तो आज भी इस तरह की अस्पर्शस्यता जारी है। 20 मार्च, 1927 को महार तालाब आंदोलन डाक्टर बाबा साहब अम्बेडकर जी ने किया। वो इसलिए किया चूंकि उन तालाबों में जिनमें जानवर घुसकर मल–मूत्र कर सकते थे, उस तालाब को भी कोई शूद्र या अछुत उस पानी को अगर टच कर देता तो इसी बात पर उसकी हत्या कर दी जाती थी। तो अंग्रेजों से उन्होंने मांग की कि हम तो पहले से ही हजारों साल से गुलाम रहे, आपके आने का हमें क्या फायदा हुआ। आज आपका शासन है तब भी हमारे साथ वो ही व्यवहार है। तो उनकी आंखें खोलने के लिए और लोगों में समता का व्यवहार हो और आने वाले कानून इस तरीके से बने कि लोगों को समता केवल पेपर पर न हो बल्कि व्यवहार में समता हो। इसके लिए उन्होंने 19–20 मार्च, 1927 को महार तालाब आंदोलन किया। वो जानते थे कि उस पानी को पीकर वो कोई अमर नहीं हो जाएंगे और दूसरा 1930 के अंदर उन्होंने कालाराम मंदिर आंदोलन किया, मंदिर प्रवेश का आंदोलन किया। वो इसलिए किया ताकि लोगों को ये अहसास हो कि हम भी इंसान है आपने हजारों साल तक हमें मंदिर के अंदर नहीं घुसने दिया। लेकिन उसमें उनके ऊपर हमला हुआ। उस मंदिर के दरवाजे बन्द करके और ऊपर पूरी फोर्स लगवा दी गई वहां प्रवेश नहीं करने दिया। तो ये जो राष्ट्रभक्ति का जो बजट माननीय उप मुख्यमंत्री जी लेकर आए हैं और मुख्यमंत्री जी का इस बजट को तैयार करने में बहुत बड़ा सहयोग रहा है मुझे इसकी जानकारी है। इन दोनों ने मिलकर एक नए भारत के निर्माण की परिकल्पना की है और उसकी शुरूआत दिल्ली से की है। इसके लिए मैं इनका धन्यवाद करता हूं ताकि लोगों में ये भाव तो पैदा हो कि हम सब इंसान है। इंसान–इंसान सब बराबर है किसी को जाति या धर्म के आधार पर उत्पीड़ित करना उचित नहीं है। इससे कभी भारत एक मजबूत भारत, सशक्त भारत नहीं बन सकता। जो एक सशक्त भारत बनने का सपना हम देखते थे वो सपना ऐसे बजट से पूरा नहीं हो सकता जहां टोटल बजट का केवल 5–6 परसेंट एजुकेशन को दिया जाए। जो लोग आज इस बजट की विपक्ष के साथी आलोचना कर रहे हैं कभी वो इस बजट को विस्तारपूर्वक पढ़े। उत्तर प्रदेश के अंदर टोटल 24 करोड़ जनसंख्या है और लगभग साढ़े पांच लाख करोड़ बजट है। दिल्ली की जनसंख्या उत्तर प्रदेश

की तुलना में केवल 10 परसेंट है लगभग 2 करोड़ 40 लाख और वहां साढ़े पांच लाख करोड़ के बजट में से एजुकेशन के ऊपर केवल मात्र लगभग 18 हजार एक सौ कुछ करोड़ का बजट रखा गया है और दिल्ली की जनसंख्या उसका 10 परसेंट है 2 करोड़ 40 लाख जहां टोटल बजट 69 हजार करोड़ रखा गया है और यहां भी एजुकेशन का जो बजट है वो 16 हजार एक सौ कुछ करोड़ है। इससे नीयत का पता चलता है कि ये सरकार है जिसकी नीयत है हम गरीब से गरीब के बच्चे को क्वालिटी एजुकेशन देंगे और ऐसे भारत का निर्माण करेंगे जहां लोग जातिवाद को मानना बन्द करे। जाति और धर्म की नफरत को बन्द करे और अगर आप इस बजट को और भी विस्तार से पढ़ना चाहते हैं तो ये दिल्ली का बजट है जिसे हैल्थ के ऊपर 14 परसेंट का बजट रखा गया है। उत्तर प्रदेश का देख लीजिए, हिमाचल का देख लीजिए, राजस्थान का देख लीजिए, मध्यप्रदेश का देख लीजिए, हरियाणा का देख लीजिए पूरे देश के अंदर दिल्ली की सरकार पहली सरकार है जिसने हैल्थ के ऊपर 14 परसेंट एजुकेशन के ऊपर 24 परसेंट ट्रांसपोर्ट के ऊपर 14 परसेंट इतना बजट रखकर दिल्ली के लोगों के सपनों की दिल्ली बनाने के लिए और भारत को गौरवान्वित करने के लिए जो बजट के अंदर प्रोविजन किया है। मैं धन्यवाद करूंगा अपनी सरकार को कि हमने कोई किसी के साथ पक्षपात नहीं किया। बजट रखा और जो योजनाएं बनाई अब जैसे जय भीम मुख्यमंत्री प्रतिभा विकास योजना की बात कर सकते हैं। उस योजना के तहत जो बच्चे 12वीं कर रहे होते हैं, जो डाक्टर बनना चाहते हैं, जो इंजीनियर बनना चाहते हैं, जो ग्रेजुएशन करते हैं, जो सिविल सर्विसिज में जाना चाहते हैं, जो लॉ करते हैं, जो ज्यूडिशियल आफिसर्स बनना चाहते हैं। आजकल एग्जाम ऐसे डिजाइन होता है जो बच्चे कोचिंग करते हैं केवल वो बच्चे उसमें सफल हो सकते हैं। पूरे देश के अंदर ये ऐतिहासिक स्कीम मैं धन्यवाद करूंगा माननीय मुख्यमंत्री जी का और उप मुख्यमंत्री जी का जिन्होंने उसके ऊपर डेढ़ सौ करोड़ का बजट देकर दिल्ली के 15 हजार बच्चों को और बिना किसी जातिवाद के सभी बच्चों को एससी/एसटी/ओबीसी/माइनोरिटी और जनरल कैटिगरी के, ईडब्ल्यूएस के बच्चों को अपने सपनों को साकार करने का जो मौका दिया है। आज दिल्ली के बच्चे इस योजना के लाभ लेकर जज बन रहे हैं, डाक्टर बन रहे हैं, इंजीनियर बन रहे हैं। तो ये सपना हमने कर दिखाया लेकिन इसकी जरूरत पूरे देश

के बच्चों को है। सभी सरकारों को इसका अनुकरण करना चाहिए। इसके लिए मैं अपनी सरकार का धन्यवाद करता हूं मनीष जी का, अरविंद जी का धन्यवाद करता हूं। साथ ही साथ आज हम देख रहे हैं कि चारों तरफ एक ऐसा वातावरण है जो उम्मीद से लोग शाम को जब अपने आफिस से घर जाते हैं तो टीवी खोलकर बैठते हैं कि आज के समाचार सुन ले। लेकिन जब टीवी चैनल पर वो समाचार सुनने के लिए कोई चैनल लगाते हैं तो ऐसा लगता है जैसे वो जो एंकर है उस चैनल पर वो किसी पार्टी का प्रवक्ता है और विपक्ष के लोगों को ऐसे धमकाता है जैसे कोई गुंडा हो। क्या ऐसे भारत का सपना देखा था, मुझे लगता है इस पर विचार करना चाहिए। सरकारें आती रहेंगी और जाती रहेंगी, आज दिल्ली में हम है केन्द्र में आप है कल को कोई और हो सकता है। लेकिन अगर आप प्रजातंत्र के गले को घोंटने का काम करेंगे, अगर आप देश के मीडिया के मुख को बन्द करने का काम करेंगे, तो आप कहीं न कहीं भारत की आजादी को खतरा पैदा कर रहे हैं और इस बात पर भी चर्चा होनी चाहिए। मैं तो निवेदन करूंगा आदरणीय उप मुख्यमंत्री जी से जो ये एजुकेशन में जो आप काम कर रहे हैं ऐतिहासिक काम कर रहे हैं। इसमें एक और अध्याय जोड़ दीजिए, जब पूरे देश के हमारे स्वतंत्रता सेनानी भारत की आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे, ऐसी कौन सी पार्टियां और कौन से संगठन थे जो उस वक्त अंग्रेजों के साथ खड़े थे जिन्होंने आजादी की आंदोलन में अपनी भूमिका न निभाकर अंग्रेजों का साथ दिया। इसको भी हमें स्कूल के अपने पाठ्यक्रम में लगाना चाहिऐ, सच सामने आना चाहिए। पता तो लगे देशभक्त कौन है और देश के दुश्मन कौन है। ये नकली राष्ट्रभक्ति से काम चलने वाला नहीं है आपको सच का सामना करना पड़ेगा। हम लोग अगर भारत को एक गौरवशाली राष्ट्र बनाना चाहते हैं तो सच के साथ आइए और जाति तोड़ने का आंदोलन आज तक देश के अंदर नहीं हुआ है। मैं आप सबसे आह्वान करता हूं जातियों को खत्म करने का समय आ गया। मुझे जब बहुत बुरा लगता है जब कोई कहता है कि मैं पांडे जी हूं लेकिन मैं जातिवाद नहीं मानता। आप तो जाति पहले बता रहे हो। जातियों को खत्म करने का समय आ गया है। अगर पूरी दुनिया के अंदर कहीं जातियां नहीं है केवल भारत और भारत के सब–कांटिनेंट में जातियां है और इस जाति का दंश हम लोगों ने झेला है। हजारों साल तक हमारे पढ़ने लिखने पर बंदिश लगाकर रखी गई, हजारों साल तक हमारे

व्यापार करने पर बंदिश लगाकर रखी गई। हजारों साल से हम लोग लगातार उत्पीड़न का शिकार है। आज जैस–तैसे भारत के संविधान को जो डाक्टर बाबा साहब अम्बेडकर ने लिखकर सबको जाति धर्म से ऊपर उठकर सबको समान रूप से आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया। पढ़ने–लिखने के रास्ते खोल दिए, नौकरी के रास्ते खोल दिए। लेकिन क्या हुआ उसके बाद एक ऐसी शिक्षा नीति ले आई गई मैं धन्यवाद करूंगा मनीष जी का और अरविंद जी का। इन्होंने कम से कम दिल्ली के अंदर तो उस अंधकार के वातावरण में जब पूरे देश के अंदर प्राइवेट स्कूल खुलते जा रहे थे, प्राइवेट कालेज खुलते जा रहे थे, गरीबों के सपने खत्म हो रहे थे, गरीबों के बच्चे पब्लिक स्कूल का खर्चा नहीं उठा सकते थे, ऐसे में अगर आशा की किरण निकलकर आई तो दिल्ली से अरविंद केजरीवाल के रूप में निकलकर आई। जिन्होंने सरकार स्कूलों के स्तर को इतना बेहतरीन कर दिया कि आज प्राइवेट स्कूलों से बच्चे नाम कटाकर सरकारी स्कूलों के अंदर आ रहे हैं। माननीय अध्यक्ष जी, आप मुझे सिर्फ दो मिनट का समय और दीजिए और आप अगर कहेंगे अभी बंद कर दो तो मैं कर देता हूं।

माननीय अध्यक्षः नहीं गौतम जी कंक्लूड कर दीजिए प्लीज।

माननीय समाज कल्याण मंत्रीः मैं अनुशासन को पसंद करता हूं।

माननीय अध्यक्षः नहीं आप बहुत अच्छा बोल रहे हैं।

माननीय समाज कल्याण मंत्रीः अगर आप दो मिनट और दे सकते हैं तो ठीक है वर्ना मैं अपनी वाणी को यहीं विराम देता हूं।

माननीय अध्यक्षः बोलिए–बोलिए।

माननीय समाज कल्याण मंत्रीः माननीय अध्यक्ष जी, मैं धन्यवाद करूंगा मनीष जी का उन्होंने सोशल सिक्योरिटिज पर काफी ध्यान दिया और अब हम ट्रांसजेंडर्स के लिए अलग से एक बोर्ड बनाने जा रहे हैं। हमने दिव्यांगता के लिए एडवाइजरी बोर्ड का गठन कर दिया है। हम हाई सपोर्ट नीड के लिए हमने एक स्पेशल बजट रखा है और दिव्यांगों को रिहेब्लिटेट करने के लिए जिनके अंग कट जाते हैं उनको

आर्टिफिशियल अंग देने के लिए एक हमने स्पेशल बजट रखा है। तो अगर आप देखेंगे और दिल्ली में तमाम तरह के बच्चों के लिए खासतौर पर एससी, एसटी, ओबीसी, माइनोरिटिज के लिए हम लोगों ने नौवीं–दसवीं में एक 5000 रुपये का अलग से वजीफे की एक स्कीम इस बार हमने पास की है कैबिनेट के अंदर और ग्यारहवीं–बारहवीं के बच्चों के लिए 10000 की हमने स्कीम पास की है। तो मैं धन्यवाद करूंगा माननीय उप मुख्यमंत्री जी का और साथ में चूंकि बिना अरविंद केजरीवाल जी के विजन के हम एक कदम आगे नहीं बढ़ सकते। उन्होंने जो विजन दिया उस विजन को लेके पूरी की पूरी कैबिनेट रात–दिन मेहनत कर रही है। इसके लिए मैं अपनी पूरी सरकार को बधाई देता हूं और अन्त में एक निवेदन और करता हूं और उसे एक उम्मीद भरी नजरों से मैं देखता हूं। जो अभी हमारे साथी गुप्ता जी बोल रहे थे, गुप्ता जी सच से थोड़े परे थे। लेकिन ये भी सच है कि हमने हायर एजुकेशन के अंदर बहुत सारे कॉलेजिज के अंदर लोग आईआईटी के अंदर आते हैं, इंजीनियरिंग में आते हैं, मेडिकल में आते हैं। जहां कई–कई लाख रुपये एकदम से फीस जमा करनी होती है और उसमें सबसे बड़ी जो दिक्कत आती है गरीब बच्चों को आती है और गरीब किसी एक जाति में नहीं है। किसी एक जाति में ज्यादा हो सकते हैं लेकिन हर जाति में हर धर्म में गरीब बच्चे हैं तब मन दुखता है। जब उसका नंबर आ गया आईआईटी के अंदर, इंजीनियरिंग के अंदर, मेडिकल के अंदर उसको अचानक दो लाख रुपये जमा करने है और दो लाख का इंतजाम न हो पाने की वजह से जब उसका एडमिशन कैंसिल होता है तो दिल दुखता है। तो मैं ये उम्मीद जरूर करता हूं कि इस दिशा में हम काम भी कर रहे हैं। 10 लाख तक का हमने लोन की जो व्यवस्था की है फिर भी कुछ टैक्नीकल प्रोब्लम्स आ रही है। हम कोशिश करेंगे आने वाले समय में पैसों के अभाव में कम से कम किसी बच्चे का दाखिला कैंसिल न हो चूंकि ये प्रतिभाएं हैं। हम सुना करते थे बच्चे देश का भविष्य होते हैं। तो जो प्रतिभाशाली बच्चे हैं उनके भविष्य को हम अच्छा बनाएंगे तो देश का भविष्य अच्छा बनेगा। इन्हीं शब्दों के साथ पुनः अपनी सरकार का धन्यवाद करते हुए विशेष रूप से माननीय मुख्यमंत्री जी का और उप मुख्यमंत्री जी का धन्यवाद करते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूं। और आपने मुझे 2 मिनट और दिए इसके लिए आपका भी मैं धन्यवाद करता हूं बहुत–बहुत धन्यवाद जय भीम, जय भारत।

माननीय अध्यक्ष महोदयः बहुत अच्छा बोले, ठीक बढ़िया। आदरणीय गोपाल राय जी माननीय मंत्री जी।

माननीय श्रम एवं रोजगार मंत्री(श्री गोपाल राय): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, कल से यह सदन दिल्ली सरकार के बजट की चर्चा कर रहा है। दिल्ली के अंदर जब से सरकारें बन रही हैं हर साल बजट प्रस्तुत होते हैं। हमारी सरकार जबसे बनी है माननीय मनीष सिसोदिया जी के नेतृत्व में हर साल बजट इस सदन के समक्ष प्रस्तुत होता है। सरकार का मैं मंत्री हूं, मैं तारीफ करूं तो कोई बड़ी बात नहीं। सत्तापक्ष के माननीय विधायक तारीफ करें कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन हर साल जब बजट प्रस्तुत होता है तो लोगों को दिल्ली के लोगों को और देश के उन तमाम लोगों को जो दिल्ली की तरफ देखते हैं उनको लगता है कि ये तो सबसे बेहतरीन बजट है अगली बार इससे अच्छा और क्या होगा। पिछले 1 साल के कार्यकाल में जिस तरह से महामारी के दौर में रहे संकट का सामना सरकार ने किया दिल्ली के लोगों के मन में भी था कि बजट सत्र आ रहा है सरकार कैसा बजट लेकर आएगी। हमारे विधायक भी सोच रहे थे कि एक साल तो आर्थिक संकट से दिल्ली जूझती रही, सरकार जूझती रही तो इस बार कैसा बजट आएगा लेकिन मैं माननीय वित्त मंत्री जी को और मुख्यमंत्री जी को और पूरी सरकार को तहेदिल से बधाई देना चाहता हूं कि इस सदन में जब जिस तरह से बजट का एक–एक प्रस्ताव माननीय उप–मुख्यमंत्री जी रखते गए टीवी चैनल पर बैठकर के देखने वाले दिल्ली की जनता का सीना गदगद होता गया कि हमने एक ऐसी सरकार चुनी जिस सरकार के अंदर न सिर्फ प्रबंधन की क्षमता है, ईमानदारी की क्षमता है बल्कि हर साल नये विजन के साथ दिल्ली को आगे बढ़ाने की काबिलियत भी है। अध्यक्ष महोदय, देशभक्ति बजट इस बार पेश किया गया, आखिर जरूरत क्या पड़ी, क्यों देशभक्ति बजट पेश किया गया? 75 साल बाद इस देश के अंदर एक नया संकट पैदा हो गया है। अभी राजेन्द्र पाल गौतम जी कह रहे थे आज पूरे देश के अंदर राष्ट्रवाद को लेकर के चर्चाएं हैं। देशभक्ति के नये–नये सार्टीफिकेट बांटने वाले ठेकेदार गली कूंचों में घूम रहे हैं। लोगों को समझा रहे हैं देशभक्ति क्या होती है राष्ट्रवाद क्या होता है। अध्यक्ष महोदय, इस देश के अंदर राष्ट्रवाद की बुनियाद 1857 की जंगे आजादी में

रखी गई। कौन सा राष्ट्रवाद था। आज नफरत के सौदागर राष्ट्रवाद का सार्टीफिकेट बांट रहे हैं। अध्यक्ष महोदय मैं इस सदन के माध्यम से कहना चाहता हूं इस देश के अंदर 1857 की जंगे आजादी को याद करो जब एक तरफ बहादुरशाह जफर अपनी कुर्बानी दे रहे थे दूसरे तरफ नाना साहब अपनी कुर्बानी दे रहे थे। एक तरफ बेगम हजरत महल अपनी कुर्बानी दे रही थी दूसरी तरफ लक्ष्मीबाई अपनी कुर्बानी दे रही थी। एक तरफ अजीमुल्ला खां अपनी कुर्बानी दे रहे थे दूसरी तरफ इस देश के अंदर हंसते–हंसते तांत्या टोपे अपनी कुर्बानी दे रहे थे। एक तरफ वीर कंवर सिंह अपनी कुर्बानी दे रहे थे दूसरी तरफ अगीगर बाई अपनी कुर्बानी दे रही थी। वो कौन सा राष्ट्रवाद था जो बेगम हजरत महल को भी कुर्बानी देने के लिए प्रेरणा देता था। जो इस देश के अंदर लक्ष्मीबाई को भी प्रेरणा देता था वो कौन सा राष्ट्रवाद था जो बहादुरशाह जफर को भी कुर्बानी देने के लिए प्रेरणा था जो नाना साहब को भी प्रेरित करता था वो राष्ट्रवाद था इस मादरे वतन के अंदर मोहब्बत से पैदा हुआ राष्ट्रवाद, सकारात्मक राष्ट्रवाद जो आज भी देश को प्रेरणा दे रहा है। कल भी हम मोहब्बत के आधार पर इस देश को अंग्रेजों से मुक्त कराए थे और आज भी नये भारत का निर्माण मोहब्बत के राष्ट्रवाद के दम पर ही हो सकता है। आज 75 वीं वर्षगांठ के अवसर पर देश के अंदर एक नई शुरुआत करने का संकल्प लिया है। सरकार का काम नाली बनाना भी है। सरकार का काम सड़क बनाना भी है। सरकार का काम पानी पिलाना भी है। सरकार का काम बिजली भी देना है लेकिन इस सरकार का किसी भी सरकार का काम इस देश के लिए सर्वोच्चतम समर्पित करने वाली नई पीढ़ी के नौजवानों को पैदा करना है क्योंकि जब राष्ट्र अपने शहीदों को याद करना भूल जाता है अपने स्वतंत्रता सेनानियों के पथ पर चलना भूल जाता है वो समाज, वो कौम, वो व्यक्ति और वो राष्ट्र एक न एक दिन मिट जाता है। अध्यक्ष महोदय इस देश को एक नकारात्मक राष्ट्रवाद की अंधी गली में फंसाने की जो कोशिश हो रही है हम बधाई देना चाहते हैं इस सरकार को कि आज सरकार ने ये संकल्प लिया कि केवल इस देश के अंदर पाठ्यक्रम परीक्षाएं पास करने के लिए नहीं होंगे। इस देश के अंदर शिक्षा के केन्द्र केवल डिग्रियां हासिल करने के लिए नहीं होंगे। घर चलाने के लिए पैसा जरूरी है, परिवार चलाने के लिए पैसा जरूरी है, तरक्की के लिए पैसा जरूरी है लेकिन देश चलाने के लिए सच्ची देशभक्ति जरूरी है उसके बगैर देश

आगे नहीं बढ़ सकता। इसकी जरूरत नहीं थी। जब इस देश के अंदर बंगभंग का आंदोलन चल रहा था देशभक्ति के पाठ्यक्रम की जरूरत नहीं थी। इस देश के अंदर जब अंग्रेजों भारत छोड़ो का आंदोलन चल रहा था देशभक्ति के पाठ्यक्रम की जरूरत नहीं थी। जब आजाद हिन्द फौज बनी देशभक्ति के पाठ्यक्रम की जरूरत नहीं थी लेकिन जब आज सच्ची देशभक्ति के सामने एक नकली मुखौटा खड़ा करके स्वार्थ सिद्धी का अभियान चला है तो जो सच्चे देशभक्त हैं उनको जरूरत है कि नई पीढ़ी के सामने दूध का दूध और पानी का पानी होना चाहिए और इसके लिए मैं कहना चाहता हूं कि देश के अंदर आज दिल्ली सरकार ने जो शुरुआत की है वो न सिर्फ शहीदे आजम भगतसिंह, न सिर्फ बटुकेश्वर दत्त, न सिर्फ इस देश के तमाम उन हजारों हजार शहीदों के सपनों को आगे बनाने की जो परिकल्पना है उसको बनाने का काम है बल्कि एक नये भारत के लिए नये देशभक्तों को पैदा करने का भी काम है जिससे वो खुले दिमाग से नये भारत की रचना कर सकें क्योंकि ये बात सोचने की जरूरत है। 1947 में ये देश आजाद हुआ पार्टियों की सरकार किसी की रही हो नाम लेने से कोई फर्क नहीं पड़ता। हुकुमत रही है इस देश के केन्द्र के अंदर भी रही है दिल्ली के अंदर भी रही है। सरकारें बदलती रहीं बनती रहीं, पार्टियां आती रहीं जाती रहीं लेकिन ये बात सोचने की जरूरत है कि जब इस मादरे वतन के अंदर सबकुछ है तो फिर ये देश विकसित राष्ट्र क्यों नहीं बना आज तक। उस पायदान पर हम क्यों नहीं पहुंच सके। अध्यक्ष महोदय इस सदन के समक्ष मैं रखना चाहता हूं। भारत के अंदर जितनी उपजाऊ जमीन है दुनिया के कम देशों के पास है। भारत में जितनी नदियां बहती हैं दुनिया के कम देशों के पास है। भारत के अंदर जितना खनिज पदार्थ है दुनिया के कम देशों के पास है। भारत के पास जितनी श्रम शक्ति है दुनिया के कम देशों के पास है। भारत के पास जितना दिमाग दिया है कुदरत ने आज दुनिया के 17 मुल्कों में जाकर भारत के बेटे—बेटियां वहां की टेक्नोलॉजी को संचालित कर रहे हैं पर्दे के पीछे बैठकर। अरे जब सबकुछ दिया मां भारती ने इस देश को तो आखिर वो कौन सी वजह है कि दुनिया के अंदर कहते हैं

''कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,

सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा''।

चीन की सभ्यता, मेसोपोटेमिया की सभ्यता, मिश्र की सभ्यता जब युरोप अंधकार में था भारत की सभ्यता पैदा हुई। सिन्धु घाटी की सभ्यता से लेकर आज तक हमने तमाम उतार–चढ़ाव के बावजूद अपने रास्ते को तय किया है। कुदरत ने क्षमता दी है लेकिन आजादी के बाद भी अगर आज हम यहां खड़े हैं इसकी कुछ तो वजह होगी उस वजह को ठीक करने के लिए सबसे पहले जरूरी है कि इस देश के बेटे–बेटियों के दिलों में सच्ची देशभक्ति को पैदा किया जाए और इस जनता के प्रति समानता का भाव पैदा किया जाए। राष्ट्र का विकास राष्ट्र के लोगों की सहभागिता के बगैर नहीं हो सकता। अगर इस सदन के अंदर 70 विधायक चुनकर के आए अगर 1 विधायक भी दुखी है तो ये सदन खुश नहीं रह सकता। आज देश के अंदर कौन किस जाति में पैदा हुआ किस धर्म में पैदा हुआ किस क्षेत्र में पैदा हुआ किस भाषा को बोलने वाला है हम तय नहीं करते अध्यक्ष महोदय। हम किस मां की औलाद बनेंगे हमें नहीं पता होता है। हम जहां पैदा होते हैं वही हमारी जाति हो जाती है, वही हमारा धर्म हो जाता है, वही हमारा क्षेत्र हो जाता है, वही हमारी भाषा हो जाती है। अध्यक्ष महोदय दुनिया के अंदर पैदा होने के दो ही सिद्धांत हैं एक अध्यात्म का सिद्धांत है जो कहता है कि सबको ऊपर वाले ने पैदा किया है भगवान ने पैदा किया। दूसरा विज्ञान का सिद्धांत है जो कहता है ब्लैक होल से धीरे, धीरे, धीरे उद्विकास हुआ। दोनो थ्यौरी एक ही बात कहती है कि सबका एक ही है। अगर सबका एक है, इंसान में भी भेद पैदा किया तो इंसान इस विभेद को खत्म कर सकता है। इस बार का बजट उस दिशा में एक सकारात्मक पहल है इसलिए हम इस विभेद को गैर–बराबरी को ऊंच–नीच की भावना को नफरत की भावना को खत्म कर सकें क्योंकि नफरत जब तक रहेगी राष्ट्र मजबूत नहीं हो सकता है। राष्ट्र की मजबूती का बुनियादी सिद्धांत है विभेद को खत्म करो, नफरत को खत्म करो। कुदरत ने पैदा किया स्त्री को स्त्री के रूप में, पुरुष को पुरुष के रूप में लेकिन दोनों साथी बनकर के रह सकते हैं नफरत के बिना। कौन किस जाति में पैदा हुआ किस धर्म में पैदा हुआ कहां पैदा हुआ वो हमारे हाथ में नहीं है तो हमें उसकी प्रताड़ना नहीं मिलनी चाहिए और इसलिए अध्यक्ष महोदय ये कहना चाहता हूं कि ये बजट इसलिए ऐतिहासिक है कि इस बजट ने देशभक्ति की भावना को जाग्रत करने का संकल्प लिया है और साथ ही साथ अपने कार्य योजना और नीतियों के माध्यम से समाज के अंदर समानता कैसे विकसित हो

उस दिशा में संकल्प लिया है। अध्यक्ष महोदय मैं आखिर में केवल एक ही बात कहना चाहता हूं दिल्ली देश की राजधानी है। दिल्ली से नकारात्मक विचार जब पैदा होते हैं, कोई व्यक्ति पैदा करता है या कोई सरकार पैदा करती है तो उसका प्रभाव पूरे देश में होता है। दिल्ली के अंदर से अगर सकारात्मक विचार पैदा होते हैं कोई भी व्यक्ति हो और कोई भी सरकार हो प्रभाव पूरे देश में होता है। हम दिल्ली के विधायक बाद में हैं इस मादरे वतन का बेटा—बेटी पहले हैं इसलिए इस देश के लिए सोचना और उसके लिए शुरुआत करना हमारी जिम्मेदारी है और इसलिए मैं इस सरकार को बधाई देना चाहता हूं माननीय मुख्यमंत्री और उप—मुख्यमंत्री जी को बधाई देना चाहता हूं उन्होंने नये हौसले के साथ नये संकट के दौर में नई ऊंचाईयों को छूने के लिए हिम्मत की है और नये तरह से बजट को डिजाइन किया है मुझे भरोसा है कि सभी लोग मिलकर के उस लक्ष्य को हासिल करेंगे नया इंसान भी बनाएंगे और नया हिन्दुस्तान भी बनाएंगे बहुत—बहुत शुक्रिया जयहिन्द जय भारत।

माननीय अध्यक्ष महोदयः बहुत—बहुत धन्यवाद गोपाल जी। सवा दो बजे तक के लिए हम लंच के लिए स्थगित करते हैं ठीक सवा दो बजे उसमें लेट न करें। चलिए बहुत—बहुत धन्यवाद।

(सदन की कार्यवाही अपराहन 2:15 बजे तक के लिए स्थगित की गई)

सदन अपराह्न 2.21 बजे पुनः समवेत हुआ।

माननीय उपाध्यक्षा (सुश्री राखी बिरला) पीठासीन हुईं।

माननीय अध्यक्षाः अब्दुल रहमान जी।

श्री अब्दुल रहमानः धन्यवाद अध्यक्ष जी। अध्यक्ष जी, इस क्रांतिकारी और ऐतिहासिक बजट पर आपने मुझे बोलने का मौका दिया, मैं आपका शुक्रगुजार हूं, धन्यवाद करता हूं और यहां शेरों—शायरी की एक वो चल रही है तो मैं भी एक शेर के साथ अपनी बात शुरू कर रहा हूं कि—

'दीया हूं और दीये का फर्ज पूरा कर रहा हूं मैं,

अंधेरों से कहो रोको, उजाला कर रहा हूं मैं।'

अध्यक्ष महोदया, इस क्रांतिकारी बजट में जो 1,000 बसें दिल्ली की सरकार, दिल्ली की सड़कों पर इलेक्ट्रिक बसें लेकर आ रही हैं वो एक बहुत बड़ा और बहुत शानदार कदम है जिससे दिल्ली के पॉल्यूशन में बहुत कमी आयेगी और दिल्ली का वातावरण शुद्ध होगा। अध्यक्ष महोदया, दिल्ली की सड़कों की बात करें तो पिछले 6 सालों पूर्व जो दिल्ली की सड़कों की हालत थी उसको देखते हुए आज की सड़कें अपने आप में ऐसी हैं, ऐसी हैं, मैं अगर आपको उसकी व्याख्या दूं तो मैडम आप एक बार मॉरिशस का सीन देख लें और दिल्ली की सड़कें देख लें तो आपको तुलना में बराबर जैसी मिलेंगी आज।

...व्यवधान...

देख रखा है, देख रखा है। आपको भी देख रखा है, आपका भी बताता हूं, सब्र करें। अध्यक्ष महोदया, अभी कुछ समय पूर्व एक फ्लाईओवर बनता हुआ देखा हमने और मैं एमसीडी में काउंसलर था उस वक्त, रानी झांसी फ्लाईओवर, लगभग 11 सालों में बनकर तैयार हुआ और उसकी लागत 718 करोड़ रुपये, जो नॉर्थ एमसीडी द्वारा बनाया गया। आज उस पर गाड़ी लेके अगर आप चले तो उसकी हालत देखें कि आदमी उछलता कूदता, उसको प्रतीत होगा कि वो किसी फ्लाईओवर पर गाड़ी में बैठकर नहीं जा रहा बल्कि किसी हिंडोले पर बैठकर झूल रहा है। उसके बाद एक फ्लाईओवर शास्त्री पार्क, सीलमपुर, धर्मपुरा की रेड लाइट पर बना, लम्बाई में उससे 50 मीटर ज्यादा और मैडम उसका उद्घाटन हुआ 19 फरवरी, 2019 में और वो मुकम्मल हुआ 23 अक्टूबर, 2020 में, यानी कि डेढ़ साल में बनकर तैयार और उसका टेंडर हुआ 305 करोड़ रुपये में और वो बनकर के तैयार हुआ, कितने में, 252 करोड़ रुपये में मात्र। तो 53 करोड़ रुपये बचाने के बाद आज उस फ्लाईओवर की फोटो, अगर आप उसको विडियोग्राफी ऊपर से करें तो आपको लगेगा ही नहीं कि आप भारत में या दिल्ली के अंदर खड़े हैं, आपको लगेगा किसी विदेश के अंदर, किसी बड़े शहर में, आप टोक्यो में, जापान में कहीं खड़े हुए हैं। तो ये इनका फ्लाईओवर था कि जो 11 साल में बनकर तैयार हुआ, 50 मीटर कम और एक आम आदमी पार्टी की सरकार का बनाया हुआ फ्लाईओवर जो 50 मीटर ज्यादा और एक तिहाई कीमत में बनाकर के तैयार कर दिया और उसमें बैठकर आप सफर करेंगे तो मैं यकीन

दिलाता हूं और अपने भाजपा के साथियों को भी ये बताना चाहता हूं कि आप पानी का गिलास भरकर गाड़ी में रखकर बैठिये और सीलमपुर से चलिए, जब आप आई. एस.बी.टी फ्लाईओवर से उतरेंगे शास्त्री पार्क के बाद अगर आपका पानी छलक गया तो आप हमें आकर पकड़ लीजियेगा, ऐसा फ्लाईओवर। अध्यक्ष महोदया, मैं एक छोटा सा किस्सा यहां सुनाना चाहता हूं। इनकी गलती नहीं है, साथी हैं हमारे। लेकिन कहीं न कहीं उनकी मजबूरी है, उन्हें अपनी पार्टी को भी दिखाना होता है, कई बार उन्हें बताना होता है कि हमने कुछ किया, नकारा साबित न कर दिये जाएं। तो होता क्या है कि एक विपक्ष होता है और एक सरकार होती है। अब विपक्ष के एक साथी कहते है कि साहब बिहार में बाढ़ आ गई और राजस्थान में सूखा पड़ गया, वो सरकार के मंत्री वहां कब जायेंगे। उसने कहा भई वो 4 दिन बाद वहां मंत्री जी जायेंगे, अगर 4 दिन बाद मंत्री जी जायेंगे तो तुम लिखो अपने पी.ए से कहा, तो उसने कहा साहब क्या लिखूं, उसने कहा अगर मंत्री जी वहां गये बिहार बाढ़ में, तो तुम ये लिखो कि मंत्री जी को ये डर था कि कहीं सूखे में प्यासे न मर जाए इसलिए मंत्री जी बाढ़ से ग्रस्त इलाके में गये। कहने लगा पी.ए, साहब अगर वो राजस्थान गये तो, तो लिखो कि मंत्री जी को ये डर था कहीं पानी में न डूब जाए इसलिए जो है पहले राजस्थान गये। उसने कहा साहब अगर वो ट्रेन से गये, कि अगर ट्रेन से जाएं, तो तुम लिखो कि वहां तो जनता मर रही है और ये देखो ट्रेनों से सफर कर रहे हैं, क्या जहाज से नहीं जा सकते थे। कि साहब अगर जहाज से गये, कि अगर जहाज से गये तो तुम ये लिखो कि एक तो जनता वैसे ही मर रही है और जनता का पैसा जहाजों में बर्बाद कर रहे हैं, ट्रेन से नहीं जा सकते थे। तो इन्हें तो किसी पल चैन नहीं। आप अच्छा करिये, आप कुछ भी करिये, आप देश बदल दीजिये, दिल्ली बदल दीजिये, जिनको विरोध करना है, जिनका काम सिर्फ और सिर्फ अच्छाई में बुराई को तलाश करना है, वो करें, हमारी सरकार का काम अच्छा करना है, अच्छा कर रही है। रही इलेक्ट्रिकल्स कार की बात, ये भी एक क्रांतिकारी कदम है। दिल्ली के अंदर कई लोग कह रहे थे दे सब्सिडी रहे हो, नहीं दे रहे हो। सिर्फ एक कार पर रोकी गई, बाकि कारों पर बदस्तूर जारी है और ये एक बड़ा कदम है। दिल्ली में जब इलेक्ट्रोनिक कारें चलेंगी तो मैडम बहुत फायदा होगा और पॉल्यूशन में बहुत गिरावट आयेगी। मैं आपका बहुत–बहुत धन्यवाद करता हूं आपने मुझे बोलने का मौका दिया। बहुत–बहुत शुक्रिया।

माननीय अध्यक्षाः प्रमिला टोकस जी।

श्रीमती प्रमिला धीरज टोकसः धन्यवाद अध्यक्ष जी। मैं माननीय मुख्यमंत्री, वित मंत्री का बहुत—बहुत धन्यवाद करना चाहती हूं। भारत की आजादी के 75 वे वर्ष में 7 वें बेमिसाल देशभक्ति बजट करने के लिए मैं अपने वित्त मंत्री का बहुत—बहुत धन्यवाद करती हूं। और जब ये देशभक्ति का नाम आता है तब हमारे भाजपा के साथियों का मुंह उतर जाता है क्योंकि देशभक्ति तो उनके पास है। राम—राज्य की बात करते हैं वो। कल बड़ी राम—राज्य की बात की थी उन्होंने कि हम ही देशभक्त हैं, हम ही हिंदुत्व हैं। अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से बताना चाहती हूं जहां पे ये राम—राज्य की बात करते हैं, हिंदुत्व की बात करते हैं, राष्ट्रवाद की बात करते हैं, हाथरस के उस कांड को भूल गये क्या, क्या यही हिंदुत्व था? क्या यही राम—राज्य था? जो उस बेटी को, आधी रात में उसका अंतिम संस्कार किया गया, क्या यही राम—राज्य था? क्या ये हिंदुत्व था? हमारे हिंदुत्व में कहते हैं अध्यक्ष जी आधी रात में क्या, हमारे देशी भाषा में बोलते हैं कि दिन छिप जाता है तो तब अंतिम संस्कार नहीं होता है। तो ऐसी क्या मजबूरी थी? क्या यही थी देशभक्त? देशभक्ति की बड़ी—बड़ी बाते करते हैं। मैं देश को बिकने नहीं दूंगा, अध्यक्ष जी, ये बहुत फेमस था जब तक कमल है, जब तक फूल है, तब तक नामुमकिन है। तो मैं अध्यक्ष जी, आपके माध्यम से ये बताना चाहती हूं कि हाथ तो, वो तो फ्रैक्चर हो गया है, वो तो अब उठने वाला है नहीं और ये फूल है, फूल मुरझाता जरूर है, इनको ये नहीं पता। पता नहीं कौन इनको एडवाइज करता है, कौन इनका सलाहकार है। एक दिन मुरझाना है फूल को। और अध्यक्ष जी, झाड़ू जितनी घिसेगी, जितनी चलेगी वो उतनी मजबूत बनती रहेगी। उतनी ही मजबूत बनेगी झाड़ू जितनी वो चलेगी। बात करते हैं आयुष्मान लागू नहीं होने देते, दिल्ली में आयुष्मान लागू नहीं होने देते। अध्यक्ष जी, जब दिल्ली सरकार, हमारी केजरीवाल की सरकार जब पूरा खर्च उठाती है। जो भी बीमार होता है उसका पूरा खर्च देने के लिए तैयार है तो आयुष्मान की क्या जरूरत है? कौन इनको सलाह देता है ऐसी? समझ में नहीं आता कौन सलाहकार है? नमन करना पड़ेगा उस सलाहकार को और पिछली बार, पानी की ये बहुत बातें करते हैं, गंदा पानी—गंदा पानी, पिछली बार मीडिया में क्या थू—थू करी थी इनकी।

मीडिया ने ही इनको बेइज्जत करा था कि कैसा पानी है, वो उसी के घर में जाकर उनको बताया कि पानी कैसा था, अच्छा था या गंदा था। पता नहीं कौन सलाहकार है? आत्मनिर्भर देश को बनाना चाहते हैं। कहते हैं कि हमने 10 हजार रुपये दे दिये और देश आत्मनिर्भर हो गया। कौन सलाहकार है ऐसा, 10 हजार रुपये में देश आत्मनिर्भर बन जाता है? कमाल के सलाहकार हैं आपके। आत्मनिर्भर देश ऐसे नहीं बनता, उसके लिए काम करना पड़ता है। आत्मनिर्भर देश, जैसे हमारे शिक्षा मंत्री ने अपने देश, अपनी दिल्ली के भविष्य के ऊपर खर्च किया है 25 प्रतिशत, तब बनेगा भारत, अपना दिल्ली, हमारा दिल्ली बनेगा आत्मनिर्भर, जो हमने अपने देश के भविष्य के लिए लगाये हैं। तो कौन सलाहकार है जो कुल ढ़ाई प्रतिशत शिक्षा पर लगाकर वो देश को आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं? कमाल के सलाहकार हैं। स्वास्थ्य, अभी मैंने जिक्र किया कि ये आयुष्मान का बहुत जिक्र करते हैं, कल भी बहुत जिक्र किया, लागू नहीं होने देते, लागू नहीं होने देते, लागू नहीं होने देते। इनको ये नहीं पता जब दिल्ली सरकार पूरा खर्च कर रही है, आप 5 लाख में क्या कर लोगे? और वो भी मिलेंगे या नहीं, वो पता नहीं क्या इन्हीं को मिलेंगे, क्यों इतना जोर दे रहे हैं, पता नहीं कुछ समझ में नहीं आ रहा। जब दिल्ली सरकार कहती है हम फ्री वैक्सीन देंगे तो उनको उसमें भी प्रॉब्लम होती है कि दिल्ली कहां से लेकर आयेगी। सरकार ने बोल दिया कि हम अपने दिल्लीवालों को, हमें चिंता है उनकी, जो आपके अपने राज्य हैं आप उनकी चिंता कीजिये। जब ये चुनाव थे, उस चुनाव से पहले अध्यक्ष जी जो इनके, भाजपा के अध्यक्ष थे दिल्ली के, उन्होंने कहा कि हम जो दिल्ली सरकार कर रही है, जो केजरीवाल जी की सरकार कर रही है उससे 5 गुणा हम फायदा दिल्लीवासियों को देंगे। तो जो वो दिल्लीवासियों को देना चाहते हैं अपने राज्य में दीजिये। तो एक बच्ची ने बड़ी झंड की उसकी नेशनल टीवी पर, बड़ी झंड की। हां बड़ी झंड की अध्यक्ष जी, उन्होंने पूछा जीरो से ज्यादा आप क्या देंगे? जीरो से ज्यादा आप क्या देंगे? ये जुमले, वायदे ये सुनिए आप। ये जुमलों की सरकार नहीं है, ये काम करके दिखाती है। आपने कहानी नहीं सुनी वो एक आप जैसा था वो कह रहा देखो जनता को कि आएगी कि नहीं आएगी? उन्होंने कहा कि शेर आ गया, शेर आ गया। तो गांव की जनता थी वो चली गयी कि भई शेर आ गया होगा। तो कोई शेर नहीं आया था। उन्होंने दोबारा आजमाया उसी को, उसी जनता को दोबारा आजमाया

कि शेर आ गया, शेर आ गया। फिर बेचारी जनता फिर गयी। लेकिन तीसरी बार तो उनको ऐसा दौड़ा–दौड़ा कर मारेगी न, फिर झंड कर दी। और अभी कल भाई ने वो अधूरा sentence छोड़ दिया उन्होंने। कैलाश भाई ने कल कहा कि ये पुराने जमाने के जेलर हैं। मूवी में ये एक ये डायलॉग हैं तो अध्यक्ष जी मैं बताना चाहती हूं वो जो जेलर था न उसने कहा आधे इधर जाइए और आधे उधर जाइए, बाकी मेरे पीछे आइए। उसको सलाहकार को ये नहीं पता कि आधे इधर गए, आधे उधर गए पीछे देखा तो अकेला ही खड़ा था। कमाल के ये सलाहकार हैं। क्या बात करते हैं? बड़ी बड़ी बातें करते हैं, अध्यक्ष जी, मैं देश बिकने नहीं दूंगा, ये बड़ा नारा था। हर हर मोदी, घर घर मोदी। ये बड़ा नारा था इनका। और मैं तो अपने वित्त मंत्री को एक विनम्र निवेदन करना चाहती हूं कि ये जो भाजपा के हैं, जो भाजपाई हैं उनको राम मंदिर के दर्शन जरूर कराना। बोलने से राम मंदिर का या राम के राज्य का या उसके सिद्धांतों पर चलने का नहीं होता, उनको जरा वहां पर लेकर जाइए। मेरा तो आपसे विनम्र निवेदन है जितने भी भाजपा के कार्यकर्त्ता, भाजपा के लोग हैं उनको एक बार जरूर वो राम मंदिर दिखाएं ताकि वो उनके सिद्धांतों पर चल सकें। यहां बोलने से उनके सिद्धांतों पर नहीं चला जाएगा। जिस प्रकार से मैंने अभी बताया कि किस प्रकार से, वो उनकी फितरत है पैसे इकट्ठे करना।

माननीय अध्यक्षाः प्रमिला जी, कंप्लीट करिए।

श्रीमती प्रमिला धीरज टोकसः अध्यक्ष जी, मैं देश नहीं बिकने दूंगा। लालकिला बेच दिया, एयरपोर्ट – आज प्राइवेट हाथों को सौंप दिया अध्यक्ष जी। अब बेशर्मी की तो हद कर दी, झंड हो गयी इनकी फिर। अपने बजट में बता रहे हैं क्या, क्या बेचेंगे अभी, प्रमुख बंदरगाह बेचेंगे। फिर इनकी झंड होगी वहां पर। सीपीएससी जहां केन्द्र सरकार की 51 प्रतिशत भागीदारी होती है और जिसमें करीब 3500 कंपनियां हैं और पब्लिक सर्विस बैंक, सब सेल पर है जैसे कि भारतीय पेट्रोलियम। ये तो मैं थोड़े से नाम दे रही हूं अध्यक्ष जी। ये तो कुछ गिने चुने हैं बस। एयर इंडिया, एयरपोर्ट अथॉरिटी आफ इंडिया, इंदौर, अमृतसर, रायपुर और यहां तक कि वाराणसी का भी एयरपोर्ट, ये 6 एयरपोर्ट हैं जिसको बेचने जा रहे हैं। शिपिंग कॉरपोरेशन आफ इंडिया, कंटेनर कॉरपोरेशन आफ इंडिया, भारत अर्थ मूवर्स लि., पवन हंस लि., नीलांचल

इस्पात निगम लि., भारत इलेक्ट्रोनिक्स लि., भेल, कोल इंडिया, स्टील अथॉरिटी आफ इंडिया, आईडीबीआई बैंक के साथ साथ दो और बैंक, एलआईसी आदि जो बसें चलती थीं उनको भी 20 हजार को ये बेचने जा रहे हैं। और कहते थे हम देश नहीं बिकने देंगे। और क्या बेचेंगे, और क्या रह गया, उसको भी बता दो? और कहते हैं अध्यक्ष जी, एक बहुत।

माननीय अध्यक्षा: प्रमिला जी, दो मिनट में कंप्लीट कीजिए।

श्रीमती प्रमिला धीरज टोकस: अध्यक्ष जी, बस दो मिनट लूंगी। अभी बिहार में जब चुनाव थे मैं ये सोच रही कि हमारे जो स्कूल हैं या हमारे स्वास्थ्य विभाग के जितने भी हमारे मोहल्ला क्लिनिक हैं, हॉस्पिटल हैं, बाहर से लोग देखने क्यों आ रहे हैं? मैं ये सोच में रही थी हमारे वित मंत्री तो बाहर जाते नहीं हैं तो ये प्रचार कौन करता हैं? कौन बताता है उनको भई कि दिल्ली में इतने अच्छे स्कूल हैं? मुझे तो बिहार में जब चुनाव थे न तो मोदी जी कह रहे कि आप चिंता मत कीजिए, आपका बेटा दिल्ली में बैठा है। कमाल की बात है। केजरीवाल जी को कहते हैं हमारे माननीय प्रधान मंत्री जी मैं तो उनको सलाम करती हूं, कह रहे हैं कि आप चिंता मत कीजिए, आपका बेटा दिल्ली में बैठा है।

माननीय अध्यक्ष: कंप्लीट कीजिए प्रमिला जी।

श्रीमती प्रमिला धीरज टोकस: वो बाहर स्कूल देखने जाते हैं मैं कहती हूं हमारे शिक्षा मंत्री ने तो अपने टीचरों को भेजा था आप तो खुद नहीं गए। तो ये कैसे पता चला। हमें क्या पता मोदी जी वहां पर जाकर प्रचार करेंगे कि हमारा स्कूल देखिए, दिल्ली के क्या शानदार स्कूल हैं। देखा था न अमरीका के राष्ट्रपति और उनकी वाईफ आए थे, दोनों दिल्ली के स्कूलों को देखने के लिए सलाम है क्योंकि चर्चे तो हमारे ही हो रहे हैं न। कर मोदी रहे हैं पर चर्चे तो हमारे ही हो रहे हैं।

माननीय अध्यक्षा: चलिए, धन्यवाद।

श्रीमती प्रमिला धीरज टोकस: केजरीवाल जी के ही चर्चे हो रहे हैं।

माननीय अध्यक्षा: धन्यवाद, धन्यवाद। एस.के. बग्गा जी।

श्री एस.के. बग्गा: अध्यक्ष महोदया, आपने मुझे देशभक्ति बजट पर चर्चा में भाग लेने का मौका दिया इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं। 21—22 वर्ष के लिए 69 हजार करोड़ का बजट माननीय मनीष सिसोदिया जी ने विधान सभा में पेश किया तो सारी डायरेक्शन अरविंद केजरीवाल जी के संदर्भ में उनका एक विजन था कि जो ये बजट आया है महिलाओं के लिए सौ मोहल्ला क्लिनिक बनाना एक वर्ल्ड में मिसाल है। दिल्ली सरकार व दिल्ली के निवासी मिल कर राज्य के 75 वर्ष मना रहे हैं इसका मैं स्वागत करता हूं। 500 झंडे भी दिल्ली में लग रहे हैं इसका भी स्वागत करता हूं। शिक्षा पर बजट का 24 परसेंट खर्च करना एक ऐसा ऐतिहासिक कदम है। पूरे देश में सबसे ज्यादा शिक्षा का बजट दिल्ली ने दिया इसके लिए मैं डिप्टी सीएम का धन्यवाद करता हूं। अभी ये कल मेरे मि. अभय वर्मा जी बात कर रहे थे कापी की। तो मैं बताता हूं आपको, हमारे शिक्षा मंत्री स्कूल में जाते हैं, बच्चों के साथ बैठते हैं, बात भी करते हैं बच्चों के साथ। अभी उनका एक वीडियो वायरल हुआ योगी साहब का किसी स्टूडियो में बैठकर उसका प्रचार कर रहे हैं कि मैं बच्चों को मिला हूं, न डेस्क है, खाली कुर्सी थीं। तो ऐसे ही झूठी शान से क्या बनेगा

सच्चाई छिप नहीं सकती बनावट के उसूलों से

खुश्बू आ नहीं सकती कागज के फूलों से

काम करके दिखाइए आप, लोगों को पता लगे कि आपने देश के लिए काम किया है। बिना काम किए आप यश चाहते हैं ऐसा पब्लिक नहीं चाहती। 200 यूनिट फ्री बिजली देना, पानी फ्री देना, महिलाओं के लिए फ्री बस यात्रा, सीसीटीवी कैमरे लगाना और स्कूल में कमरे बनवाना, ये भी एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया सरकार ने। मैं इस बजट का धन्यवाद करता हूं और चीफ मिनिस्टर, डिप्टी सीएम का धन्यवाद करता हूं। जय हिन्द।

माननीय अध्यक्षा: देखिए सभी बग्गा जी की तरह अपने समय का सदुपयोग करें और दो से 5 मिनट के अंदर अपने वक्तव्य को समाप्त करें। श्री मदन लाल जी। हो गया आपका? जितेंद्र महाजन जी।

श्री जितेंद्र महाजनः अध्यक्ष जी, मोहन चंद शर्मा की शहाद्दत पर सवाल उठाने वाले, सर्जिकल स्ट्राइक के सुबूत मांगने वाले, पुलवामा आतंकी हमले पर राजनीति करने वाले, सिटिजन अमेंडमेंट एक्ट पर देश को बांटने वाले और जिनके फाउंडर मेंबर रोहिंग्या लोगों को, घुसपैठियों को बाहर निकालने की पीआईएल डालने वाले आज राष्ट्रवाद की बात यहां कर रहे हैं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षाः एक मिनट।

...व्यवधान...

श्री जितेंद्र महाजनः ये वीडियो है, वीडियो। और ये लिखा है, कहा गया है और..

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षाः देखिए विषयवस्तु जो है वो बजट है, बजट पर ही बोलें।

श्री जितेंद्र महाजनः करोड़ों लोगों के अराध्य थे, सभी जातियों के अराध्य थे, सभी धर्मों के अराध्य थे।

माननीय अध्यक्षाः बजट पर ही अपना वक्तव्य रखें। बजट पर ही अपना।

श्री जितेंद्र महाजनः भगवान श्रीराम की जन्मभूमि पर मंदिर बनाने की बजाए स्कूल और हॉस्पिटल बनाने वाले आज जो है राम राज्य की बात कर रहे हैं। ये आज राम राज्य की बात कर रहे हैं।

माननीय अध्यक्षाः राजेश ऋषि जी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षाः आप सब लोग, आप सब लोग।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः रोहित मेहरोलिया जी और सत्ता पक्ष के साथियों से मेरा, राजेश ऋषि जी उनको बोलने दीजिए।

...व्यवधान...

श्री जितेंद्र महाजनः ये राम राज्य की बात करने वाले।

माननीय अध्यक्षः बोलने दीजिए, आप लोग शांत रहिए।

...व्यवधान...

श्री जितेंद्र महाजनः आप ये देखिए, ये राम राज्य की बात करने वाले दिल्ली के बजट में 7 करोड़ 20 लाख रूपये इस बात के दे रहे हैं कि हम नशामुक्ति करेंगे, हम नशे को रोकेंगे और 6 हजार करोड़ रूपये नशे को बढ़ावा दे कर दिल्ली में ठेके खोल कर 6 हजार करोड़ रूपये ये लोग इकट्ठे कर रहे हैं। और जो जो इनके राजस्व का 14 परसेंट है। पिछले 6 सालों में।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः राजेश ऋषि जी।

श्री जितेंद्र महाजनः दिल्ली में जितने शराब के ठेके बढ़े हैं।

माननीय अध्यक्षः इनको बोलने दीजिए।

श्री जितेंद्र महाजनः वो किसी सरकार में आज तक नहीं बढ़े हैं। महिलाओं के लिए।

माननीय अध्यक्षः वो जहां भी देख कर बोल रहे हैं, उन्हें बोलने दीजिए।

श्री जितेंद्र महाजनः महिलाओं के लिए।

माननीय अध्यक्षः जितेंद्र महाजन जी, जितेंद्र महाजन जी।

श्री जितेंद्र महाजनः शराब का ठेका, ये इन लोगों ने खोला है।

माननीय अध्यक्षाः जितेंद्र महाजन जी, आप किसी की तरफ आप उंगली न करें और आप इधर चेयर को देखकर अपनी बात को बोलिए।

श्री जितेंद्र महाजनः ठीक है।

माननीय अध्यक्षाः और सत्ता पक्ष के साथी शांत रहें, अभी मंत्री जी जवाब देंगे, मंत्री जी जवाब देंगे उनको उनकी बातों का जवाब मिल जाएगा। आप बैठिए।

श्री जितेंद्र महाजनः ये बजट में एक्साइज का बजट में।

माननीय अध्यक्षाः आप बैठ जाइए, आप बैठिए, आप बैठ जाइए।

श्री जितेंद्र महाजनः सरकार 6 हजार करोड़ रूपये इकट्ठा करेगी। शराब की दुकानें खोल कर करेगी, दिल्ली में शराब को बढ़ावा देगी, शराब की पॉलिसी में बदलाव करेगी, ये बजट के अंदर है इनके। ये राम राज्य का बजट है। ये इनका राम राज्य है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षाः सोमनाथ भारती जी।

...व्यवधान...

श्री जितेंद्र महाजनः माननीय अध्यक्ष जी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षाः देखिए, सत्ता पक्ष के साथियों से मेरी प्रार्थना है आप चुप रहिए, शांत रहिए, आप नहीं बोलेंगे ऋतुराज जी, ये डायरेक्शन आप नहीं देंगे, आप शांति बनाए रखिए। आप शांति बनाए रखिए।

श्री जितेंद्र महाजनः ये शराब के ठेकेदार, ये शराब बेचने वालों के ठेकेदार, शराब कंपनियों के दलाल, ये 6 हजार करोड़ रूपये दिल्ली को शराब बेचकर कमाएंगे। शेम शेम शेम। माननीय अध्यक्ष जी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षा: आप उन्हें बोलने क्यों नहीं दे रहे हैं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षा: जब आप सुनने देंगे ही नहीं, जब आप लोग सुनने देंगे नहीं तो मुझे समझ ही नहीं आएगा वो क्या बोल रहे हैं और क्या नहीं बोल रहे, कौन सी संसदीय भाषा है, कौन सी असंसदीय भाषा है, आप लोग शांति से सुनिए। अगर उनका कोई भी शब्द असंसदीय लगता है तो मैं स्वयं इसको रिकार्ड से निकलवाउंगी। ये तभी संभव होगा जब सत्ता पक्ष के साथी शांति से उनकी बात को सुनने देंगे और समझेंगे। नहीं तो वो शोर में कुछ भी कह जाएंगे। आप शांति से सुनिए उनको। संजीव जी, आप बैठिए। आप बैठिए। आप बैठिए। आप एक बार बैठिए। आप एक बार पहले बैठिए। नहीं पहले आप बैठिए तभी मैं आपको सुनूंगी।

श्री संजीव झा: नहीं इन्होंने दलाल शब्द का प्रयोग किया है।

माननीय अध्यक्षा: आप एक बार बैठिए जब तक आप नहीं। हॉ पहले आप बैठिए न। और जितेंद्र महाजन जी, जितेंद्र महाजन जी मैं आपसे बात कर रही हूं। आप संसदीय शब्दों का प्रयोग करें, आप अपने वक्तव्य को सीमित समय में रखें और बहुत ही सम्मानित शब्दों के साथ में।

श्री जितेंद्र महाजन: माननीय अध्यक्ष जी बोलने देंगे तो बोलूंगा ना।

माननीय अध्यक्षा: तभी आपकी बात भी समझ आएगी न सदन में।

श्री जितेंद्र महाजन: धन्यवाद जी।

माननीय अध्यक्षा: और किसी की ओर इशारा करके बात न करें आप। आप सीधा चेयर को सम्बोधित करें।

श्री जितेंद्र महाजन: माननीय अध्यक्षा जी, माननीय मुख्यमंत्री जी ने अपनी सरकार के 10 बिन्दु बताए जिसमें उन्होंने कहा कि दिल्ली के अंदर रामराज्य स्थापित करने

के लिए हम इन 10 बिन्दुओं पर काम करेंगे। दिल्ली का बजट इन 10 बिन्दुओं पर आधारित है, उन्होंने पहली बात कही कि दिल्ली के अंदर कोई भूखा नहीं सोना चाहिए। मेरा सवाल ये है इस सरकार ने 2016 से लेकर आज तक दिल्ली में किसी गरीब आदमी का राशन कार्ड नहीं बनाया। 2016 से लेकर लाखों लोग राशन कार्ड की वेटिंग में हैं। अगर गरीब आदमी को राशन कार्ड नहीं मिलेगा तो उस गरीब आदमी का पेट कहां भरेगा। ये कौन से रामराज्य की कल्पना है जिसमें गरीब आदमी भूखा रहेगा। इस सरकार ने कहा, हर बच्चे को शिक्षा मिलनी चाहिए, माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा, डिप्टी सीएम साहब ने कहा 16,377 करोड़ रुपए हम शिक्षा पर खर्च कर रहे है। बस बजट के अंदर ये नहीं मालूम है कि कितना पैसा कैपिटल हैड पर खर्च किया जाएगा और कितना पैसा जो है वो शिक्षकों को तनखा देने में खर्च किया जाएगा। 17 जनवरी को इंडियन एक्सप्रेस में एक खबर छपी कि दिल्ली के सरकार स्कूलों में नोवीं क्लास में 2,71,400 बच्चे पढ़ते थे, इनमें से 42 प्रतिशत बच्चे यानि की 1,13,988 बच्चे फेल कर दिए गए और ये किस बात की शिक्षा की गारंटी है और इस बार का दिल्ली सरकार स्कूलों का 98 प्रसैंट रिजल्ट होने का दावा करती है और मजेदार बात ये है कि इनमें से 42 परसैंट बच्चों को ओपन स्कूल में भी एडमिशन नहीं मिला और ऐसे बच्चों का भविष्य खराब हो गया। क्या ये झूठा रिजल्ट दिखाने के लिए।

माननीय अध्यक्षाः खत्म कीजिए, खत्म कीजिए।

श्री जितेंद्र महाजनः अभी तो मैडम शुरू किया है।

माननीय अध्यक्षाः खत्म कीजिए।

श्री जितेंद्र महाजनः मैं ये जानना चाहता हूं कि दिल्ली के अंदर कितने क्लास रूम बनाए गए। ये दिल्ली सरकार है जिसमें 22 हजार शिक्षकों के पद खाली हैं, 20 हजार कमरे बनाने की बात है, कमरे बनाए जा रहे हैं, मगर टीचरों की भर्ती नहीं की जा रही है, कितने बड़े जादूगर हैं कि कमरे जो हैं वो बच्चों को पढ़ा रहे है, वाह।

माननीय अध्यक्षाः बस खत्म कीजिए।

श्री जितेंद्र महाजनः 2013–14 में दिल्ली के सरकारी स्कूलों में 16,10,405 बच्चे पढ़ते थे, जोकि घटकर साल 2019–20 में 15,04,722 रह गए, यानी की 22 हजार कमरों से पहले दिल्ली के सरकारी स्कूलों में आज से ज्यादा बच्चे पढ़ते थे। माननीय उप मुख्यमंत्री दिल्ली की अर्थव्यवस्था को दुगना और दिल्ली की जनसंख्या बढ़ने की बात करते हैं फिर सरकारी स्कूलों से लगभग 1,10,000 बच्चे कम कैसे हो गए इस बात का जवाब इस सरकार के पास कोई नहीं है।

माननीय अध्यक्षाः धन्यवाद, धन्यवाद महाजन जी।

श्री जितेंद्र महाजनः माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा।

माननीय अध्यक्षाः धन्यवाद महाजन जी, बहुत–बहुत धन्यवाद।

श्री जितेंद्र महाजनः अभी कहॉ से मैडम जी, 2 मिनट।

माननीय अध्यक्षाः अनिल बाजपेयी जी। जब आप लोगों को समय मिलता है तो आप चीखने, चिल्लाने में और लड़ाई–झगड़ों में निकाल देते हैं और मुझे सबको बराबर समय देना होता है, अनिल बाजपेयी जी, अनिल बाजपेयी जी शुरू करें या मैं किसी ओर को दूं? अनिल बाजपेयी जी आप शुरू करें, मैं किसी ओर को बुलवाऊं?

............व्यवधान......

माननीय अध्यक्षाः आप ही की पार्टी के व्यक्ति बोल रहे हैं ना? आपकी पार्टी का व्यक्ति बोल रहा है ना?

............व्यवधान......

माननीय अध्यक्षाः शुरू करें। शांति बनाए रखें, शुरू करें अनिल बाजपेयी जी।

............व्यवधान......

माननीय अध्यक्षाः अनिल बाजपेयी जी। हो गया, हो गया, धन्यवाद, धन्यवाद। बाजपेयी जी आपको 4 मिनट से ज्यादा का समय नहीं है आप उस समय में आप बहस कर लीजिएगा या अपने वक्तव्य को रख लीजिएगा फैसला आपका है, 52 हो रहे हैं मैं 56 पर आपको बैठा दूंगी, शुरू कीजिए।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी: सबसे कम लूंगा मैं। माननीय अध्यक्ष महोदय मैं आपका तहे दिल से धन्यवाद करना चाहूंगा कि आज देशभक्ति बजट पर मुझे आपने बोलने का सुअवसर दिया। देशभक्ति बजट में।

माननीय अध्यक्षा: ऋतुराज जी और अखिलेश पति त्रिपाठी जी।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी: हम विपक्ष के अंदर हैं लेकिन अच्छे कामों की तारीफ हमारे दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी भी करते है। मैं विपक्ष में हूं अच्छे काम की प्रशंसा विपक्ष के लोग भी करेंगे। देशभक्ति बजट के अंदर जो राष्ट्रीय ध्वज को पूरी दिल्ली पर उसको लहराता हुआ देखना ये एक अच्छा कदम है और हम इसका समर्थन करते हैं। लेकिन माननीय अध्यक्ष जी एक बात पर मैं ध्यान ओर दिलाना चाहता हूं कि 500 जगह ये ध्वज लहराए जाएंगे, 70 विधान सभाएं है जब। पूरी दिल्ली के अंदर 500 ध्वज फहराए जाएंगे, 70 विधान सभाओं में। तो मेरा आपसे अनुरोध है कि अनुपातिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए सारी विधान सभाओं में बराबर—बराबर संख्या के झंड़े फहराए जाएं। जितना माननीय मुख्यमंत्री जी यहां हो, उतना भाई सतेन्द्र जैन जी के यहां हो, जितना माननीय।

माननीय अध्यक्षा: अनिल जी आप इस तरफ बात करें।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी: वही बोल रहा हूं।

माननीय अध्यक्षा: आप इस तरफ बात करिए, कैसे बात कर रहे हैं आप। आप चेयर से बात करें।

श्री अनिल कुमार बाजपेयी: चलिए, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी का ये भी धन्यवाद करना चाहूंगा, देर आए सवेर आए, रामराज्य की कल्पना को उन्होंने अपनाने का काम किया है। लेकिन रामचरित मानस की दो चौपाई है उनको भी ध्यान से सुन लीजिएगा कि रघुकुलरीत सदा चली आई और प्राण जाए पर वचन न जाई। जो सदन में माननीय मुख्यमंत्री जी ने रामराज को अपनाने का संकल्प किया है। तो ये इस चौपाई को भी जरूर ध्यान में रखें। और दूसरी चौपाई एक ओर है जब धनुष यज्ञ में भगवान परशुराम जी ने रामजी से भी पूछा था और एक चौपाई थी, कि 'राम रमापति करधन

लेहु और खैंचोचाव मिटैयी संदेहू'। तो माननीय मुख्यमंत्री जी को ये भी ध्यान रखना चाहिए कि उनको अग्नि परीक्षा से, रामराज्य को लाने के लिए कहीं न कहीं गुजरना होगा। लेकिन अच्छी बात है रामराज्य को अपनाया उन्होंने, लेकिन कुछ मुद्‌दों पर मैं 5 मिनट में अपनी बात खत्म करना चाहता हूं। जो बजट हमारे माननीय डिप्टी सीएम साहब ने रखा है उस बजट में जो खामियाँ हैं मैं उसकी ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं। आज हमारे दिव्यांग भाई है, मैं खुद आई एम आल्सो डिसेबल्ड पर्सन। लेकिन पहले भी मैंने ये मांग रखी थी, माननीय अध्यक्षा जी ये बड़ा गम्भीर सुझाव है मेरा कि दिल्ली के अंदर अगर इस बजट के अंदर जो हमारे दिव्यांग लोग है उनको अगर दिल्ली की मैट्रो में, अगर कनसेशन दिया जाता और इस बजट में रखा जाता, तो ये एक बहुत बड़ा काम होता। मैं माननीय मंत्रीजी से अनुरोध करूंगा कि अगर इसमें कुछ जोड़ सकें तो इसको जरूर जोड़ लें। एक बात मैं ओर कह देना चाहता हूं, पूरे कोरोना के पीरियड में सब लोगों ने सफर किया, लेकिन दिल्ली में जो हमारे मंदिर थे और उन मंदिरों में जो हमारे ब्राह्मण, पुजारी थे उनकी तरफ किसी का ध्यान नहीं दिया गया। मैं खुले तौर पर कहना चाहता हूं हमारे नेता प्रतिपक्ष यहां बैठे हुए हैं, ओमप्रकाश शर्मा जी सदन से चले गए। इन्होंने 5100–5100 रुपया हर मंदिर के पुजारियों को दिया है। जब एक ओर दिल्ली सरकार मस्जिद के इमामों को और उनके मुतावल्लियों को जब पैसा देती है तो माननीय अध्यक्ष जी मंदिर के पुजारियों को भी, बौद्धविक मंदिर के पुजारियों को भी, जो हमारे गुरूद्वारे हैं उनके ग्रंथियों को भी कम से कम उनको पैसा मिलना चाहिए।

माननीय अध्यक्षाः चलिए धन्यवाद।

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः ऐसा मेरा सुझाव है।

माननीय अध्यक्षाः धन्यवाद, धन्यवाद।

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः आखिरी बात, प्लीज। और इसके लिए मैं ये जरूर कहूंगा अध्यक्ष महोदय कि कम से कम जब सबके लिए गठन की बात होती है तो भगवान राम ने भी रामचरित मानस में उत्तरकांड में कहा कि ब्राह्मणों का आदर करना सबका कर्तव्य होता है। तो कम से कम सदन अगर एक विप्र आयोग का गठन करेगा।

माननीय अध्यक्षाः चलिए बहुत–बहुत धन्यवाद बाजपेयी जी, बहुत–बहुत धन्यवाद। रामवीर बिधूड़ी जी नेता प्रतिपक्ष, विधूड़ी जी।

श्री अनिल कुमार बाजपेयीः धन्यवाद जो आपने मुझे बोलने का मौका दिया।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी (माननीय नेता प्रतिपक्ष): आदरणीय उपाध्यक्ष महोदया, दिल्ली के ऑनरेबल डिप्टी चीफ मिनिस्टर ने इस सदन में सातवॉ बजट प्रस्तुत किया है उसपर बोलने का अवसर आपने मुझे भी दिया बहुत मैं आपका आभारी हूं। उपाध्यक्ष महोदया, प्रभू राम की चर्चा इस हाउस में हो रही है हम तो ये जरूर चाहेंगे कि देश के प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी जिनकी उपस्थिति में भगवान राम जी के भव्य मंदिर के निर्माण का कार्य शुरू हुआ, जब वह पूरा हो जाएगा तो मैं रूलिंग पार्टी के सभी ऑनरेबल मैंबर्स को आमंत्रित करना चाहूंगा कि वो हम लोगों के साथ अयोध्या चलेंगे और हम ये चाहेंगे कि हम सब लोग परिवार के साथ चलें । और रेलवे में बुकिंग करानी होगी तो बढ़िया बुकिंग भी कराई जाएगी सारी व्यवस्था भी भाजपा विधायक दल की ओर से होगी, उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से होगी और जब हम लोग ट्रेन में बैठेंगे तो बहुत अच्छा लगेगा, जब हम बोलेंगे जय, जय श्रीराम, हर–हर मोदी घर–घर मोदी, बहुत अच्छा लगेगा जब ये उद्घोष होगा।

.....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षाः शांत, सोमनाथ भारती जी बोलने दीजिए उनको, बोलने दीजिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी, नेताः उपाध्यक्ष महोदया, देशभक्ति की बात हो रही है।

.....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षाः बंदना जी।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अरे भई उधर से बहनजी ने बोला था ना, हमारी बहन टोकस जी कह रही थी। उपाध्यक्ष महोदया, देश भक्ति का पाठ भी हमारे बच्चों को पढाया जाएगा ऐसा डिप्टी सीएम साहब श्री अरविंद केजरीवाल जी के नेतृत्व में यह

पहल करने के लिए जा रहे हैं। लेकिन मैं भाजपा विधायक दल की ओर से आप से इतना जरूर आग्रह करूंगा कि जब पुलवामा में पाकिस्तानियों ने हमारे चालीस जवानों को शहीद कर दिया और उसके बाद हमारी फौज ने हमारी फौज ने......

......व्यवधान......

माननीय अध्यक्षा: सोम नाथ भारती जी अभी उप–मुख्यमंत्री और मुख्यमंत्री जी को बोलना है आप इनको इनका वक्तव्य खत्म कर लेने दीजिए।

......व्यवधान......

माननीय अध्यक्षा: सोमनाथ भारती जी और सत्ता पक्ष के साथियों को मैं यह कहना चाहती हूं कि अभी उप–मुख्यमंत्री जी और मुख्यमंत्री जी को बोलना है। नेता प्रतिपक्ष को अपनी बात खत्म कर लेने दीजिए। समय की बहुत कमी है हमारे पास। बोलिये बिधुडी जी। आप सब लोग शान्ति बना कर रखे। आपका जो प्वाइंट ऑफ आर्डर है आप लिखकर दे दीजिए माननीय उप–मुख्यमंत्री जी को वो अपने वक्तव्य में रख देंगे उसको।

श्री रामवीर सिंह बिधूडी: ये भी आप जरूर बताएं बच्चों को कि हमारी इस फोर्स ने, हमारी इस फौज ने पाकिस्तान में घुस कर जिस तरह से आतंकवादियों के अड्डों का सफाया किया। हजारों आतंकवादियों को मौत के घाट उतार दिया एयर स्ट्राइक की ये सदन एयर फोर्स को और भारतीय आर्मी को और भारत के प्रधान मंत्री आदरण ीय मोदी जी को बहुत–बहुत बधाई देना चाहता है। आदरणीय उपाध्यक्ष महोदया, 1962 में चाईना के साथ युद्ध हुआा था।

माननीय अध्यक्षा: आप बजट पर बोलें।

श्री रामवीर सिंह बिधूडी: भारत का दुनिया भर में जो कुछ हमें सेटबैक लगा अभी चाईना बार्डर पर जब तनाव पैदा हुआ। भारतीय सेना ने चीन के चालीस फौजियों को मौत के घाट उतार दिया और देश के प्रधान मंत्री मिलिट्री की वर्दी पहनकर अपने जवानों के साथ खड़े हो गए और जब बब्बर शेर दहाड मारता है और इस भारत माता के सपूत ने कहा कि एक इंच पर कब्जा नहीं होने देंगे और चाईन

की फौज बार्डर छोड़कर भाग गई। हम नरेन्द्र मोदी जी को बधाई देना चाहते है इस भारत माता के सपूत को। हमने 1962 के अपमान का बदला लिया।

माननीय अध्यक्षाः बजट पर बोलिए। बजट पर।

श्री रामवीर सिंह बिधूडी : मैं देश भक्ति पर बोल रहा हूं।

माननीय अध्यक्षाः बजट पर बोलिए। बजट पर बोलिए बिधूडी जी। बिधूडी जी बजट पर बोलिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूडी : आदरणीय उपाध्यक्ष महोदया, बजट की बात कर रही हैं आप।

माननीय अध्यक्षाः बजट पर बोलिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूडी : हम लोग। अब देखिए अच्छा नहीं लगता है। हम कभी किसी को disturb करते नहीं। लेकिन नहीं अच्छा लगता उपाध्यक्ष महोदया।

माननीय अध्यक्षाः आप बोलने दीजिए। सत्ता पक्ष के साथियों से निवेदन है उन्हें अपना वक्तव्य रखने दीजिए। जहां मुझे लग रहा है मैं खुद ही टोक दूंगी।

श्री रामवीर सिंह बिधूडी : उपाध्यक्ष महोदया।

माननीय अध्यक्षाः आप शान्ति बनाए रखिए। यादव जी शान्ति बनाए। सच्चाई सबको पता है। सच्चाई सब को पता है।

श्री रामवीर सिंह बिधूडीः सिंगापुर की बात हो रही है। सामान सौ बरस का पल की खबर नहीं। 2047 में चले गए। कहते हैं उम्रे दराज मांग कर लाए थे चार दिन दो आरजू में बीत गए दो इंतजार में। आदरणीय डिप्टी सीएम साहब पहले पांच साल तो आपके दिल्ली को लंदन और पैरिस बनाते हुए निकल गए। अब आप सिंगापुर बनाने चले हैं। मेरी उम्र तो 69 साल है आप जवान है मुख्यमंत्री भी जवान हैं। हम तो 2047 तक हम तो इस संसार में कम से कम नहीं होंगे लेकिन हमें जब ये सिंगापुर से जो आज बराबरी करने की बात कर रहे हैं कि दिल्ली के नागरिकों की वार्षिक

आय सिंगापुर से ज्यादा होगी कम नहीं होगी तो हम को भी व्हटसअप तो जरूर करवा देना। इतना तो करना। डिप्टी सीएम साहब इतना तो जरूर करना। आदरणीय अध्यक्ष जी एक बात कहीं जा रही है कि बजट में बड़ी भारी बढ़ोतरी हो गई। ऑनरेबल डिप्टी चीफ मिनिस्टर साहब बैठे हैं हो सकता है मेरी जानकारी गलत हो। मुझे वो करेक्ट कर दें। मैं यह कह सकता हूं कि आम आदमी पाटी की सरकार आने से पहले हर साल बजट का जो ग्रोथ रेट था वो 55 परसेंट था और आम आदमी पार्टी की सरकार बनने के बाद सात साल का जो ग्रोथ रेट है वो बारह परसेंट है। इस पर मैं जरूर डिप्टी सीएम साहब से क्लेरिफिकेशन चाहूंगा। आदरणीय उपाध्यक्ष महोदया, मैं यह जानकारी भी जरूर चाहूंगा ऑनरेबल डिप्टी चीफ मिनिस्टर साहब से कि पिछली बार आपने ग्रामीण विकास बोर्ड के लिए 400 करोड रूपये रखे थे। इस बार कहीं उसकी चर्चा नहीं है। यमुना विकास बोर्ड के लिए आप की सरकार भी उससे पहले भी जो सरकारें होती थी बड़ी धन राशि देती थी। इस बार यमुना पार विकास बोर्ड की भी कोई चर्चा नहीं है। जो हमारी वे बस्तियां जहां हमारे अनुसूचित जाति के लोग बड़ी संख्या में रहते हैं उनके लिए भी कहीं बजट में मुझे दिखाई जगह दिखाई नहीं दे रही है। हो सकता है मुझे गलती लग रही हो तो ऑनरेबल डिप्टी चीफ मिनिस्टर उसको ठीक करेंगे। हमारे माननीय डा0 सत्येन्द्र जैन साहब बैठे हैं, वो योग की क्लासे शुरू कर रहे हैं। पार्को में भी योग की शिक्षा दी जाएगी। परीक्षण दिया जाएगा उसके लिए उनको बहुत–बहुत बधाई। लेकिन उपाध्यक्ष महोदया एक बात तो हमें कहनी चाहिए कि अगर आज अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है तो देश के प्रधान मंत्री आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी का बड़ा भारी योगदान है। हमें जरूर उनका आभार व्यक्त करना चाहिए। उपाध्यक्ष महोदया, मैं बहुत आभारी हूं देश के वैज्ञानिकों का जिन्होंने भारत के प्रधान मंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी के मार्ग दर्शन में दो वैक्सीन कोरोना महामारी को रोकने के लिए विकसित की है और कोरोना योद्धाओं को....

माननीय अध्यक्षाः खत्म करें।

श्री रामवीर सिंह बिधूडीः मुफ्त टीका लगाया गया। मैं अभी खड़ा हुआ हूं। टाइम मेरा बहन जी तय कर लीजिए। एक लीडर ऑफ ओपोजिशन को बीस मिनट का टाइम जो है स्पीकर साहब यहां नहीं है। अभी पहले तो मुझे बोलने नहीं दिया जा रहा है अब मुझे कह रहे है...

माननीय अध्यक्षाः अच्छा चलिए अब आप बोलिए–बोलिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूडीः जी। कोरोना योद्धाओं को मुफ्त टीके की व्यवस्था की गई। दिल्ली की सरकार कह रही है कि दिल्ली सरकार के अस्पतालों में मुफ्त टीका लगवाऐंगे। ऑनरेबल डिप्टी सीएम साहब दिल्ली सरकार के हॉस्पिटलस में लोग जाते कहां है। आप देख लीजिए अभी कितने लोग गए टीका लगवाने के लिए। जहां तक आयुष्मान भारत योजना की बात है वो हमारी बहन टोकस जी ने भी उसकी चर्चा की। हम जरूर डिप्टी सीएम साहब को ये याद दिलाऐंगे कि आपने इस सदन में ये कमीटमेंट की थी कि हम आयुष्मान भारत योजना को लागू करेंगें। दलगत राजनीति से ऊपर उठकर। इसको लागू करें। गरीब आदमी बीमार हो जाएगा तो पांच लाख रूपये तक उसके मुफ्त इलाज की व्यवस्था है। इसको जरूर इस अपनी कमीटमेंट को आपको पूरा करना चाहिए। मैं अपने सभी विधायकों की ओर से यह आग्रह करना चाहता हूं।

......व्यवधान......

माननीय अध्यक्षाः प्रमिला जी।

श्री रामवीर सिंह बिधूडीः आदरणीय उपाध्यक्ष महोदया, हमारे ऑनरेबल हैल्थ मिनिस्टर यहां बैठे हुए हैं। एक घोषणा उनकी ओर से की गई थी कि दिल्ली की जो गलियां है वो बहुत संकरी हैं। एम्बूलेंस जा नहीं सकती। हम बाईक एम्बूलेंस चलाऐंगे। तो मुझे भी दिल्ली में कहीं बाईक एम्बूलेंस चलती हुई दिखाई नहीं दे रही है। सरकार इस पर जरूर ध्यान देगी ऐसा मैं सरकार से आग्रह करना चाहता हूं। आदरणीय उपाध्यक्ष महोदया, हमारे साथी विजेन्द्र जैन जी ने, विजेन्द्र गुप्ता जी ने सॉरी माफी चाहता हूं जी। उन्होंने डायरेक्टर एजूकेशन ने किस तरह की बात क्लास

रूम में कही है, उसकी चर्चा की है। देखिए इसको हमें गम्भीरता से लेना चाहिए। मैं इतना पूछना चाहता हूं आपके माध्यम से ऑनरेबल डिप्टी सीएम से यदि किसी छात्र से ये सवाल किया जाएगा प्रश्न किया जाएगा कि दिल्ली का मुख्यमंत्री कौन है तो जवाब होना चाहिए श्री अरविंद केजरीवाल। यदि वो अपने जवाब में ये ही लिख दे कि दिल्ली का मुख्यमंत्री कौन है और क्या कहा है डायरेक्टर एजूकेशन ने मैं बिल्कुल वो ही शब्द न उसमें कोई कम करना चाहता हूं न ज्यादा करना चाहता हूं और मैं जरूर चाहूंगा कि डिप्टी सीएम इस मामले में जरूर कुछ न कुछ कार्रवाही करें। क्या कहा आखिर उन्होंने। अगर कोई सवाल नहीं आ रहा तो क्या करेंगे। बच्चों ने कहा मैम से पूछ लेंगे। पेपर में आपको नहीं आ रहा तो क्या करेंगे। कोई सवाल का आन्सर ब्लैंक नहीं छोडेंगे। आप कुछ भी जो भी याद है समझ में आ रहा हो। कुछ भी नहीं आ रहा हो तो सवाल ही लिख दें हमने मैम से बात कर ली है। मैम कह रही है कि अगर कुछ भी लिखा है तो हम नम्बर दे देंगे। इस तरह की डायरेक्टर एजूकेशन के पार्ट पर इतनी बड़ी लापरवाही इतना बड़ा ब्लंडर मैं समझता हूं बिल्कुल नहीं होना चाहिए और इस हाउस को सर्व सम्मिति से ये फैसला करना चाहिए और दिल्ली के लैफ्टिनेंट गवर्नर से आग्रह करें कि डायरेक्टर ऐजूकेशन को इमिडिएटली संस्पेंड किया जाए। ये मैं इस सदन में मांग करना चाहता हूं। आखिर आप शिक्षा में क्रांति की बात कर रहे हैं तो कैसे इस तरह से क्रांति आएगी क्या? तो ये मैं जरूर मांग कर रहा हूं।

माननीय अध्यक्षाः चलिए धन्यवाद बिधूड़ी जी।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः आदरणीय उपाध्यक्ष महोदया, शिक्षा के।

माननीय अध्यक्षाः बिधूड़ी जी धन्यवाद।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः शिक्षा के मामले में 20 हजार टीचर्स की आज कमी है। दस हजार पहले थी, पांच हजार हमने गैस्ट टीचर निकाल दिए। पांच हजार जो हमारे re-employed टीचर थे उनको हमने निकाल दिया। बारह कालेजों के टीचिंग स्टाफ को और नॉन टीचिंग स्टाफ को हम सैलरी नहीं दे पा रहे हैं और एक बात कही हमारे ओनरेबल चीफ मिनिस्टर ने कल कि हम उत्तर प्रदेश के स्कूल देखना

चाहते थे हमारे डिप्टी सीएम साहब। डिप्टी सीएम साहब बवाना में और कैर में जो कभी मदन लाल खुराना जी ने साहिब सिंह वर्मा जी ने जो कालेज खोले थे छात्राओं के लिए जरा उनको चलिए आप मेरे साथ। मैं आपको दिखाना चाहता हूं आप वो स्कूल आज शैड्स में चल रहे हैं। वहां पर टायलेटस नहीं हैं। आप छह साल में कालेज खोलने की बात छोड़िये, आप एक बिल्डिंग नहीं बना पाए जरा उनकी हालत भी चलकर मेरे साथ देख लीजिए। मैं आपसे आग्रह करना चाहता हूं कि आप जरूर चलिए। तो आपको मालूम हो जाएगा कि उनकी हालत क्या है। उपाध्यक्ष महोदय, ये चर्चा भी हुई कि 2048 में ओलंपिक खेल दिल्ली में हों। ये मालूम होना चाहिए दिल्ली सरकार को भी और हमारे डिप्टी सीएम साहब को कि इंडियन ओलंपिक एसोसिएशन है 2032 या 2036 में ओलंपिक खेल दिल्ली में आयोजित किए जाएं इसके लिए पहले से आग्रह किया हुआ है। आप 2048 में कहां चले गए। ये आपको मालूम होना चााहिए। आप पूछें, इंडियन ओलंपिक एसोसिएशन को आदरणीय डिप्टी सीएम साहब। और फिर आपने खेलों के ऊपर इस बार जो है पिछली बार जो बजट था वो 284 करोड़ था और इस बार आपने 166 करोड़ कर दिया। एक तरफ दिल्ली में ओलंपिक खेल आयोजित करने की बात कर रहे हैं दूसरी तरफ आप खेलों के लिए जो बजट है उसमें कटौती कर रहे हैं। इसमें contradiction दिखाई दे रहा है। आदणीय उपाध्यक्ष महोदया।

माननीय अध्यक्षाः बिधूड़ी जी जल्दी खत्म कीजए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः जहां तक जलापूर्ति की बात है।

माननीय अध्यक्षाः खत्म कीजिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः मैं इतना कहना चाहता हूं कि आज हमारे आदरणीय सत्येन्द्र जैन साहब बैठे हुए हैं 1200 एमजीडी पानी की आवश्यकता है। आपके आंकड़े ये कहते हैं कि हमारे पास 900 एमजीडी पानी उपलब्ध है। कहा गया था कि अब ये 25 फीसदी पानी की कमी है, हम बरसाती पानी को रोक कर गढढे बनाएंगे उस पर उसको स्टोर करेंगे उसको ट्रीट करके लोगों को सप्लाई करेंगे। हिमाचल से पानी लेकर आएंगे rainy well लगाएंगे। आखिर आप बताएं कि आपने छह साल में ये जो

पानी की जो शार्टेज है दिल्ली में जो आप 24 घंटे पीने का पानी देने की बात कर रहे हैं क्या कदम उठाया है? ये जरूर आज डिप्टी सीएम साहब को बताना चाहिए। एक बात मैं और कहना चाहता हूं ये सभी से संबंधित है।

माननीय अध्यक्षा: बस एक। लास्ट।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी: आप सुन लीजिए। मैडम आप।

माननीय अध्यक्षा: जी करिये कंप्लीट कीजिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी: देखिए, दिल्ली के अंदर आप एक तरफ कह रहे हैं कि हम 20 हजार लीटर पानी मुफ्त दे रहे हैं और दिल्ली में यदि अब कोई व्यक्ति अपना घर बनाएगा, आप उसको अगर उसका प्लॉट 200 गज तक का है। उससे ज्यादा का है तो उसको कम से कम दो लाख से लेकर ढाई लाख रूपया डेवलपमेंट चार्ज देना होगा। आपने तो डेवलपमेंट चार्ज खत्म कर दिया था। ये दोबारा से डेवलपमेंट चार्ज क्यों लगा दिया है। हमारी पार्टी मांग करती है इस डेवलपमेंट चार्ज को आप वापिस लें। ये हमारी मांग है।

माननीय अध्यक्षा: चलिए धन्यवाद। धन्यवाद जी।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी: आदरणीय अध्यक्षा महोदया, प्रदूषण और इन्वायरमेंट के बारे में मैं ज्यादा नहीं बोलना चाहता क्योंकि मैं एलजी ऐडरेस पर बोल लिया हूं। लेकिन मैं इतना जरूर कहूंगा कि एंटी स्मोक गन जो है वो कनॉट प्लेस में लगाने की बात है। अन्य बहुत सारे क्षेत्र हैं जहां बहुत ज्यादा प्रदूषण है। वहां भी लगनी चाहिए। बजट में ये भी कहा है कि हम तीन सौ इलैक्ट्रिक बसें खरीदेंगे। मैं सरकार से आग्रह करूंगा कि दिसंबर तक कम से कम एक हजार इलैक्ट्रिक बसें जरूर आनी चाहिए। यदि आप प्रदूषण को कम करना चाहते हैं।

माननीय अध्यक्षा: बस बस।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी: और PM 2.5 और पीएम 10 ये डस्ट से धूल से बहुत ज्यादा जनरेट होता है। हमारी सड़के टूटी हुई हैं उनको आप ठीक कराइए और जैसे

ओनरेबल चीफ मिनिस्टर ने वायदा किया था कि हम मेकेनिकल स्वीपिंग मशीनों से दिल्ली की सड़कों की सफाई करवाएंगे। इसकी व्यवस्था जरूर होनी चाहिए। और जो फोर्थ फेज है मैट्रो का उसको जल्दी से जल्दी आप पूरा करवाएं। हमारा जब तक पब्लिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम ठीक नहीं होगा प्रदूषण कम नहीं होगा। मैं आपकी जानकारी के लिए बताना चाहता हूं कि केन्द्र सरकार ने दिल्ली में इंडस्ट्रिल एरियाज में अब केवल केवल नॉन पॉल्यूटिंग इंडस्ट्रीज चलाने की ही अनुमति दी है। इसके साथ साथ।

माननीय अध्यक्षाः धन्यवाद बिधूड़ी जी अब, धन्यवाद।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः इसके साथ साथ दिल्ली के अंदर।

माननीय अध्यक्षाः आपका समय हो गया।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः डीडीए का धन्यवाद देना चाहिए पुरी साहब का धन्यवाद देना चाहिए कि हम 12 बायो डायवर्सिटी पार्क बना रहे हैं जिसमें 25 तरह के पौधे लगेंगे बदरपुर में 885 एकड़ जमीन पर इको पार्क बन रहा है। दिल्ली में जो ट्रक्स आते थे पेरिफिरियल रोड बना कर हमने हजारों ट्रकों की एंटरी को खत्म कर के जब मुख्यमंत्री जी कहते थे कि इनसे 46 परसेंट पॉल्यूशन होता है दिल्ली में, वो समाप्त कर दिया है। मैं मोदी जी को, नितिन गडगरी साहब को बहुत बहुत इस कार्य के लिए बधाई देना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्षाः अब आप बैठ जाइए, बहुत हो गया, बस धन्यवाद आपका। समय हो गया, आपका समय हो गया देखिए, पहले आप इतिहास पर चले गए जब आपको समय मिला, आधा समय आपने इतिहास बताने में खो दिया।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः उपाध्यक्ष महोदया, देखिए बिजली के बारे में मेरे दो प्वाईंट रह गए हैं। बिजली के मामले में, पहले मेरा समय, मुझे डिस्टर्ब किया गया, बिजली के मामले में।

माननीय अध्यक्षाः नहीं, पूरा 20 मिनट का समय दिया आप प्लीज बैठ जाइए बिधूड़ी जी, आप बहुत समझदार और सीनियर नेता हैं आप प्लीज बैठ जाइए। धन्यवाद।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः बिजली के मामले में सरकार fixed चार्जिज को कम करे ये मैं मांग करना चाहता हूं। उपाध्यक्ष महोदया, मुझे ये बताइए कि दिल्ली में जब बिजली के जो कर्मचारी हैं उनको जो पेंशन दी जाती है, उनको 700 यूनिट उनके कर्मचारियों और अधिकारियों को जो बिजली मुफ्त दी जाती है वो बिजली उपभोक्ताओं से वो पैसा लिया जाता है। क्या ये उचित है, क्या इसको बंद करना चाहिए नहीं करना चाहिए? क्या हमे दिल्ली के बिजली उपभोक्ताओं के साथ न्याय करना चाहिए, नहीं करना चाहिए?

माननीय अध्यक्षाः आप खत्म कीजिए, धन्यवाद।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः आदरणीय उपाध्यक्ष महोदया, मैं क्यूंकि अपनी बात को खत्म कर रहा हूं। देखिए एक्साइज पॉलिसी के बारे में हमारे एक ऑनरेबल मेंबर ने जिक्र किया है। देखिए जो नई एक्साइज पॉलिसी है वो ये कह रही है कि हम दिल्ली में और 200 शराब के नए ठेके खोलेंगे जिससे कि हमारी महिलाओं को और हमारे युवाओं को शराब सुलभ हो सके और उससे दिल्ली सरकार को लगभग ढाई हजार करोड़ रूपया रेवेन्यू आएगा। अरे देशभक्ति की बात करने वालों ये शराब की कहां से बात कर रहे हो, आप ये दिल्ली में शराब के ठेके खोलने बंद करो, मैं आपसे आग्रह करना चाहता हूं और यदि आप रेवेन्यू में जो आप कुछ अगर आपके पास कम पैसा आ रहा है तो आप कम से कम ये जो प्रचार के उपर जो पैसा उड़ा रहे हो, ये इस पर उड़ाना बंद करो, इस दिल्ली को शराब की नगरी मत बनाओ।

माननीय अध्यक्षाः चलिए, धन्यवाद बिधूड़ी जी, बहुत बहुत धन्यवाद आपका।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः मैं मांग करना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्षाः हो गया बस, हो गया, हो गया।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः और साथ में एक आधे मिनट में, 20 हजार रूपया ऑनरेबल उपाध्यक्ष महोदया, सरकार ने कहा था कि हम खोखा पटरी वालों को देंगे। वो नहीं दिया गया है, वो दिया जाना चाहिए। यह भी कहा गया था कि अनऑथोराइज्ड कालोनी में जो सेप्टिक टैंक हैं उनकी सफाई दिल्ली सरकार करवाएगी, वह नहीं हो

रहा है। सेप्टिक टैंक की सफाई दिल्ली सरकार को अपनी कमिटमेंट के मुताबिक करवानी चाहिए, दिल्ली सरकार की यह कमिटमेंट भी थी मुख्यमंत्री जी की, उनका वीडियो मेरे पास है कि दिल्ली में हम गेहूं और धान का भाव 2700 रूपये और 2600 रूपये पर क्विंटल देंगे और 200 करोड़ रूपया हम अलग से देंगे तो ये कमिटमेंट जो मुख्यमंत्री जी की थी उसको जरूर पूरा करना चाहिए।

माननीय अध्यक्षाः बस बस। धन्यवाद बिधूड़ी जी, बहुत बहुत धन्यवाद।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः और इस बार जो 10वीं और 12वीं क्लास के बच्चे थे चुनाव से पहले आपने लगभग 48 करोड़ रूपया उनकी जो रजिस्ट्रेशन फीस थी वो दी, लेकिन इस बार आपने 10वीं और 12वीं के बच्चों को रजिस्ट्रेशन फीस का पैसा नहीं दिया। मैं आपके माध्यम से ऑनरेबल डिप्टी चीफ मिनिस्टर से मांग करना चाहता हूं कि ये जो 10वीं और 12वीं के बच्चे हैं उनकी जो रजिस्ट्रेशन फीस है वो सरकार की ओर से दी जानी चाहिए क्योंकि पिछली बार आपने व्यवस्था की थी और आगे के लिए भी आपने वायदा किया था। इन्हीं शब्दों के साथ मैं ऑनरेबल हमारी डिप्टी स्पीकर साहिबा का बहुत आभारी हूं कि उन्होंने मुझे बीच में थोड़ा थोड़ा इशारा भी सरकार की तरफ से ऐसा ही होता है, तो आपने भी अपना धर्म निभाया, आपने मुझे बोलने का समय दिया, बहुत बहुत धन्यवाद। और मैं आपके माध्यम से जरूर ऑनरेबल डिप्टी सीएम से ये आग्रह करना चाहूंगा कि हमारी ओर से जो सुझाव आए हैं।

माननीय अध्यक्षाः धन्यवाद।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः उन पर वो गंभीरता से विचार करेंगे। कोई न कोई रास्ता निकालेंगे, यही मेरी आपके माध्यम से ऑनरेबल डिप्टी सीएम से यही मेरी प्रार्थना है, यही मेरा आग्रह है। बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षाः धन्यवाद। मेरा माननीय विधायकों से एक सेकिंड एक सेकिंड अजेश यादव जी। मैं विधायक साथियों से निवेदन है भूमिका न बनाएं सीधा अपने जो है विषय पर आकर अपनी बात रखें। सौरभ भारद्वाज जी सात मिनट के अंदर अपनी बात रखें।

सौरभ भारद्वाज जी। सौरभ भारद्वाज जी, शुरू कीजिए।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षा: शुरू कीजिए।

...व्यवधान...

श्री सौरभ भारद्वाज: बहुत बहुत धन्यवाद। डिप्टी स्पीकर महोदया, कि आपने मुझे समय दिया और मैं अपने विधायक साथियों से जरूर कहूंगा कि जब..

माननीय अध्यक्षा: बैठ जाइए बिजेन्द्र गुप्ता जी। बैठ जाइए गुप्ता जी। बैठ जाइए। बैठ जाइए। धन्यवाद, धन्यवाद आप बैठ जाइए। सौरभ जी शुरू करें।

श्री सौरभ भारद्वाज: अच्छा ओनरेबल।

...व्यवधान...

श्री सौरभ भारद्वाज: ठीक है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षा: धन्यवाद। धन्यवाद।

...व्यवधान...

श्री सौरभ भारद्वाज: राखी जी को बहुत बहुत धन्यवाद। ओनरेबल स्पीकर राखी जी को कि उन्होंने और बधाई की उन्होंने मुझे मौका दिया ।

माननीय अध्यक्षा: भूमिका न बनाकर सीधा विषय पर आ जाएं। समय का ध्यान रखें। अभी डिप्टी सीएम साहब को भी बोलना है। सीएम को भी बोलना है।

श्री सौरभ भारद्वाज: एक फर्क जो मैं देखता हूं कि अब जब से माननीय रामवीर बिधूड़ी जी लीडर ऑफ ओपोजीशन बने हैं मैं पूरी भाजपा के अपने मित्रों को बधाई दूंगा कि हाऊस के अंदर बैठने में मजा आता है। पहले क्या है बिना बात में लड़ाई–झगड़ा, अंट शंट ये सब होता था, न हमारा कोई फायदा न इनका कोई

फायदा। समय व्यर्थ होता था। कोई टेबल पर चढ़ रहा है, कोई कुछ कर रहा है। अलग लैवल का माहौल था और क्या है कि आपस में अन्यथा जो है वो फ्रिक्शन बढती थी। चर्चा नहीं होती थी तो मैं अपने विधायक साथियों से ये भी कहूंगा कि जब बिधूड़ी जी बोले या बाकी कोई भी बोले, जब बिधूड़ी जी बोलें तो उन्हें बोलने दें। भई वो बड़ा अच्छा बोलते हैं और बहुत अच्छा बोलते हैं और प्यार से बोलते हैं। उनको बोलने देना चाहिए। ये मेरी भी जो है इच्छा है सब साथी जो हैं उनका पूरा सम्मान करें और बिधूड़ी जी सबसे मजेदार बात ये है कि बजट जो है, बजट एक ही है मगर हमारे जो साथी हैं जो पक्ष के हैं उसको अलग तरीके से देख रहे हैं, विपक्ष अलग तरीके से देख रहा है। डिप्टी सीएम साहब ने एक बड़ी अच्छी एनाऊंसमेंट की कि जितने भी दिल्ली के बुजुर्ग हैं और उनके अंदर एक प्रबल इच्छा भी है कि जैसे ही अयोध्या में भगवान राम का मंदिर बनकर तैयार हो जाए तो उसके अंदर दर्शन के लिए दिल्ली सरकार उन सब बुजुर्गों को मुफ्त यात्रा कराए और सभी नागरिकों को कराए। बुजुर्गों को पहले कराए। आप वैसे बुजुर्ग में आते हो तो आप जा सकते हो। तो कराए और उसके अंदर क्या है कि उसके अंदर कोई मुझे लगता है कि कोई खराब बात नहीं है कि उसके अंदर भी कोई आदमी अगर दुर्भावना से देखे तो दुख होता है अध्यक्षा महोदया। और भगवान राम का जिक्र छिड़ा है तो हमने जो भगवान राम के बारे में जितना पढ़ा ज्यादातर, वो रामचरितमानस से पढ़ा। गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखी रामचरितमानस और एक ही चीज को अलग—अलग देखने का तरीका जो है उन्होंने लिखा, जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी। तो हम बजट को अलग देख रहे हैं। ये बजट को अलग देख रहे हैं। हम बुजुर्गों को तीर्थ यात्रा कराने की बात कर रहे हैं ये उसको अलग चश्मे से देख रहे हैं। तो ये जो है अध्यक्षा महोदय ये बड़ी अजीब बात है और जब रामवीर बिधूड़ी जी कई ड्रेसों का जिक्र कर रहे थे तो मुझे एक बचपन में एक फिल्म देखी थी राजा बाबू उसमें गोविन्दा ओर करिश्मा कपूर थे। तो क्या है कि गोविन्दा उसके अन्दर जो थे वो कभी स्कूल वगैरह नहीं गए थे? मगर शौक उनको सारे थे, उनको मन करता था कभी में इंस्पेक्टर दिखूं, कभी मैं डॉक्टर दिखूं, कभी गिरफतार फिल्म आई तो उन्होंने कहा कि नहीं मैं वकील दिखूं। मतलब जो फिल्म सुपरहिट हो उसका जो केरेक्टर हो तो उस केरेक्टर में वो उसके कपड़े पहनकर वो एक फोटो जो है अपने ड्राइंगरूम में

चिपकाकर रखते थे। देखी है आपने फिल्म, नहीं देखी। राजा बाबू, राजा बाबू ही थी। तो क्या जब उनका रिश्ता हुआ और रिश्ते वाले आए तो उन्होंने सारी फोटो देखी एक में गोविन्दा इंस्पेक्टर में थे, एक में डॉक्टर थे, एक में वैज्ञानिक थे, एक में जो वो क्या कहते हैं वो एडवोकेट थे। तो ये शोक होता है ऐसे आदमी का जैसे अब मैं इंजीनियर हूं। अध्यक्षा महोदया आपको मेरे घर में एक भी फोटो नहीं दिखेगी जिसमें मैं इंजीनियर के कपड़े में हूं या मैंने वकालत की हुई है तो आपको वकील के कपड़ो में मेरी कोई फोटो नहीं दिखेगी क्योंकि मैं हूं वकील, मैं हूं इंजीनियर तो मुझे किसी को क्या दिखाने कि जरूरत है। जैसे मैं एमएलए हूं तो मेरे यहां ऐसी कोई फोटो नहीं है जिसके अन्दर मैंने जो है कोई ऐसी चीज लगा रखी हो या लिख रखा हो कि मैं एमएलए हूं भई। ये क्या होता है कि inferiority complex होता है आदमी के अन्दर। जिसके अन्दर प्रबल भावना हो इच्छा हो कुछ बनने की मगर पढ़ाई न करने के कारण वो कुछ नहीं बन पाया। तो वो ऐसे ही नई–नई तरीके जो है वो आजमाता है कि आज मैं चलो फौजियों की ड्रेस पहन लूं, आज मैं साइंटिस्ट बन जाऊं। आज मैं क्या मतलब सब काम मैं ही कर रहा हूं। तो इसके अन्दर क्या है एक अलग और अध्यक्षा महोदय इसके अन्दर कोई बुरी बात नहीं है। ये एक तरीके की मनोवैज्ञानिक विकृति है जिसका आजकल जो हैं मनोवैज्ञानिक तौर पर उसका समाधान संभव है। समाधान होंगे अगर डॉक्टर नहीं करेंगे तो जनता करेगी। मगर समाधान, समाधान जो है वो होगा।

माननीय अध्यक्षाः सौरभ जी समय का ध्यान रखें।

श्री सौरभ भारद्वाजः अध्यक्षा महोदय अब मैं जरा जो है।

माननीय अध्यक्षाः समय का ध्यान रखें।

श्री सौरभ भारद्वाजः बिल्कुल गंभीर मामले पर आता हूं अध्यक्षा महोदय तो मुझे जो इस पूरे के पूरे बजट के अन्दर जो दिल को छूई चीज वो ये छूई कि भगवान राम के राम राज्य को अनुसरण करते हुए मुख्यमंत्री जी ने और उप–मुख्यमंत्री जी ने बजट के अन्दर जो बातें रखी और बड़े तरीके से उन्होंने जैसे समझाया कि दिल्ली सरकार पिछले 6 सालों से जो काम करती आ रही है दरअसल राम राज्य के जो 10 सिद्धांत हैं जिनको आप corner stones कह सकते हैं राम राज्य के उन सिद्धांतों

का अनुकरण करते हुए आपको उसके अन्दर दिख जाता है। तो अध्यक्षा महोदय जैसे कि हम सबके लिए बाल्मीकि जी ने रामायण लिखी और उसके बाद आसान भाषा के अन्दर अवधी के अन्दर गोस्वामी तुलसीदास ने जो है 16वीं शताब्दी के अन्दर रामायण लिखी और उस रामायण के अन्दर 7 चैप्टर्स हैं जिनको हम कांड कहते हैं बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरणयकाण्ड, किश्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड और आखिरी के अन्दर जो है जब श्रीराम जो हैं अपनी पत्नी और भाई के साथ वापिस आते हैं तो उसको कहते हैं उत्तरकाण्ड। तो उत्तरकाण्ड के अन्दर गोस्वामी तुलसीदास जी ने बताया कि जब भगवान श्रीराम वापिस अयोध्या में आए, पुष्पक विमान में पत्नी तथा छोटे भाई सहित आए। तो उन्होंने अयोध्या वासियों को बताया कि कैसे राम राज्य होता है। क्या है जो एक आइडियल गवर्नेंस है और एक चीज अध्यक्षा महोदय मैं आपको बताऊंगा जो अलग है जो रामायण को अन्य ग्रंथों से बहुत ज्यादा अलग करती है वो ये है कि रामायण के अन्दर जो मुख्य पात्र हैं भगवान श्री राम वो बहुत कम बोल रहे हैं इसके अन्दर। आप देखेंगे कि उनकी तरफ से बोली हुई बातें बहुत कम हैं और शायद उस समय ये करने की कोशिश थी कि बोलने वाले की ज्यादा जरूरत नहीं है करने वाले की ज्यादा जरूरत है। भगवान राम ने जो ज्यादातर किया उन्होंने करके दिखाया और उन्होंने कहा कि ये मैं कह रहा हूं और इसका अनुसरण जो है अगर समाज करेगा तो इससे सबका मंगल होगा। मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवहु सुदसरथ अजिर बिहारी। मंगल ही मंगल है इसके अन्दर अमंगल ढूंढने वाले जो लोग हैं जो राम के नाम में भी कहीं अमंगल ढूंढने के चक्कर में रहते हैं। राम के नाम पे भी कहीं लड़ाई झगड़ा कराने के चक्कर में रहते हैं। राम की उन लोगों में बिल्कुल दिलचस्पी नहीं है। तो अध्यक्षा महोदय राम को देखने के भी दो चश्मे हैं एक वो चश्मा है जो हमारे मित्रों के पास है जिसके अन्दर राम जो है किसी–न–किसी का संहार करते हुए दिखते हैं और एक वो चश्मा है जिसके अन्दर राम दयालु हैं, कृपालु हैं, हर एक के ऊपर दया करने वाले हैं। आप देखिए राम की जो स्तूति है अगर आप उसको शुरू से देखेंगे श्रीरामचन्द्र कृपालु भजमन हरण भव भय दारुणम्।

माननीय अध्यक्षाः खत्म कीजिए सौरभ जी। सौरभ जी दो मिनट में अपनी बात खत्म कीजिए। विजेन्द्र जी आप शांत रहिए। सौरभ जी दो मिनट में अपनी बात खत्म कीजिए।

श्री सौरभ भारद्वाजः देखिए, दखिए जो। अब अध्यक्षा जी ये देखिए कि विजेन्द्र गुप्ता जी की तारीफ नहीं की मैंने तो अब वो मुझे बार—बार डिस्टर्ब कर रहे हैं। अब इसके अन्दर ऐसा नहीं है कि मैं कहूंगा कि ये बेहतर अध्यक्ष थे। बेहतर जो आपके वो क्या कहते हैं लीडर ऑफ अपोजिशन वो रामवीर बिधूड़ी जी हैं।

माननीय अध्यक्षाः सौरभ जी आप अपने विषय पर रहिए अभी उप—मुख्यमंत्री जी को भी बोलना है, मंत्री जी को भी बोलना है समय को आप ध्यान में रखें।

श्री सौरभ भारद्वाजः अध्यक्षा महोदय मैं तुलसीदास जी की ही चौपाई से कुछ शब्द पढ़ूंगा और जिससे आपको पता चलेगा कि ये जो सरकार 6 साल से चल रही है वो हूबहू राम राज्य के मॉडल पे चल रही है। मैं आपके लिए पढ़ रहा हूं दैहिक दैविक भौतिक तापा, रामराज नहिं काहुही ब्यापा। मतलब रामराज का वर्णन गोस्वामी तुलसी दास जी करते हुए कह रहे हैं कि रामराज के अन्दर कोई ताप नहीं था कोई कष्ट नहीं था। न दैहिक, न दैविक, न भौतिक। मतलब जो दैविक कह सकते हैं एक्ट ऑफ गोड मतलब राम राज्य इतना अच्छा था। इतना अच्छा था लोग इतने सुखी थे, लोग इतना भय मुक्त थे इतनी ज्यादा दुखों से मुक्ति थी कि देवी देवताओं के जो ताप होते थे बाढ़ आ जाना, कोरोना आ जाना ये सारी चीजें भी बिल्कुल जो है दूर रहती थी। ''भौतिक, दैवीक सारे, सब नर करही परस्पर प्रीति, चले सो धर्म निरत श्रुत नीति''। ये अध्यक्षा महोदय बहुत ध्यान देने वाली बात है।

माननीय अध्यक्षाः खत्म कीजिए।

श्री सौरभ भारद्वाजः कि सब लोगों के अन्दर परस्पर प्रीति थी। मतलब कुछ लोग ऐसे सोचते हैं कि राम राज्य का मतलब ये है कि दो समुदायों के अन्दर दुश्मनी हो, दो जातियों के अन्दर दुश्मनी हो, नफरत हो। मगर गोस्वामी तुलसीदास ने उस समय ही लिख दिया उत्तरकाण्ड में ये जो है ये बहुत बड़ी बात है कि राम राज्य के बारे में जो हमारे मित्र सोचते हैं और राम राज्य की जो असली कल्पना गोस्वामी तुलसीदास जी ने की है उसके अन्दर बड़ा फर्क है। ''सब नर करहिं परस्पर प्रीति, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति''। और अध्यक्षा महोदय एक चीज और एक और आज मुझे।

माननीय अध्यक्षाः बस खत्म कीजिए। एक मिनट में।

श्री सौरभ भारद्वाजः एक और आप मुझे एक बस।

माननीय अध्यक्षाः एक मिनट में।

श्री सौरभ भारद्वाजः चार लाइन और आप मेरे को प्लीज जो है वो पढ़ने दीजिए। चार चार एक चौपाई और पढ़ दूंगा उससे ये साफ हो जाएगा कि आपकी सरकार के अन्दर जो कुछ हो रहा है वो 16वीं शताब्दी में गोस्वामी तुलसीदास ने कहा था राम राज्य में होना चाहिए। ''अल्प मृत्यु नहि कबनिहूँ पीरा''। मतलब कोई अल्प मृत्यु में नहीं मरता। किसी को कोई पीड़ा नहीं होती। ''सब सुन्दर सब बिरज शरीरा''। सबके सुन्दर शरीर और बिना रोग मुक्त रोगों से मुक्त शरीर रहते थे। ''नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना, नहिं कोउ अबुध लच्छन हिना''। उस राम राज्य की कल्पना करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है कि ऐसा राम राज्य होगा जिसके अन्दर कोई दीन नहीं होगा, कोई दुखी नहीं होगा।

माननीय अध्यक्षाः धन्यवाद सौरभ जी।

श्री सौरभ भारद्वाजः कोई दरिद्र नहीं होगा। कोई अबुध नहीं होगा मतलब कोई अशिक्षित नहीं होगा। कोई लच्छन हीना नहीं होगा। मतलब वो सारी की सारी चीजें जो हमारे मित्र की पार्टी सिखाती है वो कोई भी चीज ऐसी नहीं है जो राम राज्य की कल्पना के अन्दर कभी कही गई हो।

माननीय अध्यक्षाः धन्यवाद, धन्यवाद बैठिए।

श्री सौरभ भारद्वाजः तो अध्यक्षा महोदय मैं बिल्कुल आखिरी लाइन।

माननीय अध्यक्षाः माननीय मंत्री श्री सत्येन्द्र जैन जी। मंत्री जी। बैठिए सौरभ जी बैठिए, बैठिए।

माननीय उर्जा मंत्री (श्री सत्येन्द्र जैन): आदरणीय अध्यक्षा महोदय सबसे पहले तो नेता प्रतिपक्ष ने अभी अपने वक्तव्य में बोला कि केजरीवाल सरकार बनने से पहले जो बजट की ग्रोथ थी वो 55 परसेंट थी और केजरीवाल सरकार में 12 परसेंट है।

एक्चुअली में थोड़ा मेथमेटिक्स कमजोर रह गया मैंने भी बैठे–बैठे हिसाब लगाया वो 5.5 परसेंट थी एक्चुअली में प्वाइंट लगाना भूल गए। तो वो गलती थोड़ी सी हो गई थी मैं करेक्ट कर देता हूं। वैसे मैं आपको बता देता हूं अगर 55 परसेंट होती तो अभी तक दिल्ली का बजट 20 लाख करोड़ से भी क्रॉस कर गया होता। क्योंकि अभी भी 60 हजार करोड़ पहुंचा है इसलिए थोड़ी सी करेक्शन करना जरूरी था। दूसरा नेता प्रतिपक्ष ने दिल्ली के सभी विधायकों को अयोध्या यात्रा के लिए इंवाइट किया है। मैं इनको याद दिला देता हूं कि मुख्यमंत्री जी ने पहले ही कहा है कि जितने भी 60 साल से ऊपर हैं सबको पूरी दिल्ली को लेकर जाएंगे। आप चिंता मत करिए पूरी दिल्ली को हम अयोध्या दर्शन कराएंगे सिर्फ विधायकों को नहीं। अध्यक्ष महोदय ओनरेबल फाइनेंस मिनिस्टर ने जो इस बारी बजट पेश किया उसके अन्दर हेल्थ को 9,934 करोड़ रुपये दिए जिसके लिए मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं। देश के अन्दर किसी भी राज्य के द्वारा अपने बजट का 14 परसेंट हिस्सा दिए जाने का ये पहला उदाहरण है, इससे पहले कभी भी 14 परसेंट हेल्थ के लिए खर्च नहीं किया। इसी बजट के अन्दर महिला मोहल्ला क्लिनिक सौ महिला मोहल्ला क्लिनिक खोलने का विचार रखा गया है और उसको आगे भी बढ़ाया जाएगा जैसे एक हजार मोहल्ला क्लिनिक खोले जा रहे हैं। इस तरह से इसको 100 मोहल्ला क्लिनिक से स्टार्ट करेंगे इसको आगे भी बढ़ाया जाएगा। वैक्सीनेशन के लिए आम आदमी फ्री वैक्सीनेशन योजना के तहत 50 करोड़ रखे गए हैं और हमारे अभी विपक्ष के साथी कह रहे थे कि अब ये तो फ्री है। उसमें अभी भी फ्री नहीं है कुछ के लिए फ्री है कुछ के लिए नहीं है। तो फाइनेंस मिनिस्टर साहब ने कहा है कि भई जैसे–जैसे इसके लिए अलाऊ किया जाएगा केन्द्र सरकार के द्वारा और कैटेगरिज को तो दिल्ली सरकार इसको फ्री रखेगी। दिल्ली के अन्दर अस्पतालों में जो बहुत बड़ा कार्य चल रहा है बहुत सारी बिल्डिंगें बन रही हैं सिरस पुर में बन रही है, मादी पुर में बन रही है कई जगह हमारी नई बिल्डिंगें बन रही हैं लाल बाहदुर शास्त्री हॉस्पिटल बन रहा है, एलएनजेपी में बन रही है। तो उसके लिए 1293 करोड़ का प्रोविजन किया गया है उसके लिए मैं बहुत–बहुत धन्यवाद देता हूं। बहुत तेजी से काम होगा और साथ–ही–साथ बहुत ही जो हमारी महत्वकांक्षी योजना है दिल्ली के सभी नागरिकों का हेल्थ कार्ड बनाना। तो दिल्ली में रहने वाले हर निवासी का हेल्थ कार्ड बनाया

जाएगा और हेल्थ कार्ड के साथ—साथ हेल्थ मैनेजमेंट इंफोर्मेशन सिस्टम मतलब जिसको जो मेडिकल रिकॉर्ड है उसको अपना मेडिकल रिकॉर्ड बार—बार ले जाने की आवश्यकता नहीं है। मोहल्ला क्लिनिक में जाए, पॉलीक्लिनिक में जाए, डिस्पैंसरी में जाए, अस्पताल में जाए कहीं भी जाए सिर्फ अपना कार्ड लेकर चले जाइएगा आपको पुराने रिकॉर्ड की आवश्यकता नहीं है और जैसे कोरोना की महामारी आई थी उस टाइम पर भी डाटा एनालिसिस का बहुत बड़ा फायदा होता। अब इसके ऊपर भी पैसा दिया गया है और ये इस साल के अन्दर ही दोनों कामों को जल्द पूरा किया जाएगा उसके लिए मैं उनका धन्यवाद करता हूं। पावर के अन्दर 400 यूनिट तक बिजली के आधे रेट और 200 यूनिट फ्री बिजली इस कोरोना के काल में भी जिसके अन्दर बहुत ही ज्यादा फइानेंसिस के ऊपर बर्डन रहा। मैं बहुत इसके लिए शुक्रगुजार हूं कि उन्होंने 3223 करोड़ रूपये का प्रोविजन रखा है बजट के अन्दर और फ्री बिजली भी और 400 यूनिट आधा रेट भी बदस्तूर जारी रहेगा। साथ ही साथ किसानों के लिए भी जो हम बिजली में सब्सिडी देते हैं वो भी जारी रखी जायेगी। अर्बन डवलपमेन्ट के अन्दर जो जितने भी हमारे अनॉथराइज कालोनीज के अन्दर काम करने हैं, वाटर स्कीम है जितने भी स्कीम है उसके लिए 5328 करोड़ रूपये का प्रोविजन किया है उसके लिए मैं बहुत धन्यवाद देता हूं। साथ ही साथ पानी के सेक्टर में 3274 करोड़ रूपये का जो प्रोविजन किया है वो अपने आप में काबिलेतारीफ है। दिल्ली के अन्दर वाइ—फाई के अन्दर 7000 प्वाइन्ट्स लगाये जा चुके हैं, 4000 और प्वाइन्ट्स लगाने के लिए और साथ ही साथ हम चाह रहे हैं 7000 प्वाइन्ट्स को भी आगे बढ़ाने के लिए भी पैसे का प्रोविजन किया गया है। सीसीटीवी कैमरे 1 लाख 32 हजार लग चुके हैं। दो सौ करोड़ रूपये का प्रोविजन सीसीटीवी कैमरे के लिए किया गया है। उसके लिए मैं बहुत—बहुत धन्यवाद करता हूं। अनॉथराइज कालोनीज के अन्दर दो हिस्से हैं सड़कें बनाना, नालियॉ बनाना और दूसरा सीवरेज और पानी का इन्तजाम करना। सीवरेज एण्ड वाटर का मैंने पहले बता दिया सिर्फ सड़कें बनाने के लिए उसके लिए 800 करोड़ का प्रोविजन किया है तो सभी साथी खुश होंगे कि 800 करोड़ वो हैं। कुल मिलाकर 1800 करोड़ का प्रोविजन किया गया है। उसके लिए मैं धन्यवाद देता हूं। एक सी0एम0 लोकल एरिया डवलपमेन्ट फण्ड 400 करोड़ रूपया दिया गया है जिससे कि बहुत जरूरी कार्य कराये जा सकें। कोरोना काल के बावजूद

भी एमएलए लैड फण्ड 280 करोड़ का प्रोविजन किया गया है। सांसद फण्ड अभी तक स्टार्ट नहीं हुआ है। मैं उसके लिए खासतौर से बधाई दूंगा कि उन्होंने कैसे–कैसे फण्ड्स को अपने पास फ्रीज करके एमएलए डवलपमेन्ट फण्ड के लिए 280 करोड़ दिये हैं। साथ ही साथ डूसिब को 131 करोड़ रूपये झुग्गी–झोपड़ियों में छोटे–छोटे काम करने के लिए दिये हैं। हमारे एक विपक्षी साथी ने बोला था कि भई दिल्ली के अन्दर झुग्गियों में टॉयलेट बनाने की केन्द्र की स्कीम को हमने मंजूरी नहीं दी है। मैं बता देना चाहता हूं कि पूरी दिल्ली open defecation free Central Government ने declare की है और पूरी दिल्ली clear है और मैं ये भी बता देता हूं कि झुग्गियों के अन्दर दिल्ली के अन्दर क्योंकि बहुत छोटी–छोटी जगह थी। उनके घर में अन्दर जगह नहीं थी टायलेट बनाने की तो दिल्ली में सरकार ने अपने पैसे से 20 हजार से भी ज्यादा टायलेट बनाकर दीं जो दिल्ली में चल रही हैं और इसीलिए दिल्ली पूरी तरह open defecation free हुआ है। मैं इस बजट के अन्दर फिर से अपने साथी और फाइनेन्स मिनिस्टर श्री मनीष सिसोदिया जी का बहुत–बहुत धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने इतना अच्छा बजट पेश किया और ये काबिलेतारीफ है। एक चीज और जो 500 नेशनल फ्लैग्स लगाने के लिए काम दिया गया है। मैं उनसे कहना चाहूंगा कि इस साल 15 अगस्त तक लगाने की कोशिश करेंगे। पूरे लगा देंगे। धन्यवाद। जय हिन्द।

माननीय अध्यक्षा : धन्यवाद मंत्री जी। माननीय उप–मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी।

माननीय उप–मुख्यमंत्री : धन्यवाद अध्यक्षा महोदय, मैंनें 9 मार्च को सदन में देशभक्ति बजट प्रस्तुत किया था। उसके बाद से सदन में काफी जुनून है। जनता में भी बहुत जुनून है। जनता में भी बहुत जोश है इस बात को लेकर कि अभी तक जो बजट होते थे वो तरक्की का बजट, प्रगति का बजट पहली बार सुनने को मिला देशभक्ति का बजट। तो लोगों में भी उत्साह है। सदन में भी उत्साह है। मैं पिछले तीन दिन से देख रहा हूं सत्ता पक्ष के विधायकों में भी उत्साह है। विपक्ष के विधायकों में भी उत्साह है कि देशभक्ति पर बात हुई। प्रभु राम की चर्चा हुई। मुझे भी अच्छा लगा। इस सदन में खूब चर्चा हुई। बजट के बहाने हुई। माननीय मुख्यमंत्री जी ने

जो एक खाका रखा सरकार के काम करने के तरीके का। उसके बहाने हुई। कई साथियों ने बोला पर अभी तक रामचन्द्र जी के ठेकेदार बने हुए लोगों से मैं ये कहना चाहता हूं कि ध्यान रखना। इस बार जो पार्टी भगवान राम की बात कर रही है न, वो पार्टी ऐसी नहीं है कि मुंह में राम रखती है और बगल में छुरी रखकर चलती है आपकी तरह। उस पार्टी के मुंह में भी राम है और दिल में भी राम है और बगल में संविधान है। ये मुंह में राम बगल में छुरी वाली पार्टी नहीं है। हम जब राम की बात करते हैं तो बगल में छुरी नहीं संविधान दिखाकर चलते हैं और दिल में राम लेकर चलते हैं और मुंह में तो हैं ही। तो इसलिए ध्यान रखना इसका। इस बार वास्ता ऐसी पार्टी से है आपका। अध्यक्ष महोदया, कई बातें हुई। मैं सभी माननीय सदस्यों का बहुत आभार करना चाहता हूं जिन्होंने इस चर्चा में भाग लिया। जिनको अवसर नहीं मिला, निश्चित रूप से जैसे—जैसे काम आगे बढ़ेगा मैं उनकी भी फीड बैक लगातार लेता रहूंगा और यहॉ हुई चर्चा में जितने बिन्दू उठाये गये, जो सुझाव दिये गये, जाहिर है लोकतंत्र में चर्चा करना है तो इसीलिए है क्योंकि जितने बिन्दू आये हैं उनमें कहीं न कहीं हमे अपने कार्यक्रमों को और सुदृढ़ करने का अवसर मिलेगा। उनको और मजबूती से लागू करने का अवसर मिलेगा। मैं यहां पर देख रहा था कि देशभक्ति पर खूब चर्चा हुई। विपक्ष के साथियों ने भी कहा कि भई अच्छा लगा देशभक्ति पर बात की। विपक्ष के कुछ साथियों ने कहा कि अच्छा हुआ आप हमारी राह पर आये। बढ़िया बात है। हमारे लिए तो अध्यक्ष महोदय दिल्ली की तरक्की ही देशभक्ति है। हमारे लिए तो दिल्ली वालों की तरक्की ही देशभक्ति है। हर दिल्ली वाले की तरक्की हमारे लिए देशभक्ति है। पहली बार हम अपने बजट में देशभक्ति का इस तरह का पूरा ब्यौरा लेकर आये हैं काम तो उसी पर कर रहे है पिछले 6 साल से। लोग कह रहे हैं कि ये देशभक्तों की पार्टी और इनके नेता देशभक्त अरविंद केजरीवाल जी के होते ही ये विजन सम्भव था वरना तो मुश्किल था। माननीय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी के विजन में पढ़ना देशभक्ति हैं और पढ़ाना देशभक्ति है। स्कूल खुलवाना देशभक्ति है, कालेज खुलवाना देशभक्ति है, अच्छे सरकारी अस्पताल बनवाना देशभक्ति है, मोहल्ला क्लीनिक बनवाना देशभक्ति है, महिलाओं के लिए मोहल्ला क्लीनिक बनवाना देशभक्ति है, अरविंद केजरीवाल जी के मिशन में देश में तिरंगा, दिल्ली में तिरंगा लहराना भी देशभक्ति है और उस तिरंगे

के नीचे खड़े हुए एक—एक आदमी को मान—सम्मान देना भी देशभक्ति है। हर भारतीय को, भारत देश के हर नागरिक को जो तिरंगे के साये में खड़ा है उसको बराबर का मान—सम्मान देना हमारे लिए देशभक्ति है और तिरंगा फहराना भी हमारे लिए देशभक्ति है। किसी को छोटा—बड़ा समझना हमारे लिए देशभक्ति नहीं है, सबको बराबर समझना हमारे लिए देशभक्ति है। सबको अच्छा बिजली, पानी मिले, सबसे सस्ता बिजली, पानी मिले, ये हमारे लिए देशभक्ति है। बुजुर्गो को तीर्थ यात्रा पर लेकर जायें, ये भी हमारे लिए देशभक्ति है। हम अपने बच्चों को खूब पढ़ायें, महिलाओं के स्वास्थ्य का सबका ध्यान रखें और दिल्ली की सड़कों को साफ रखें, ये भी हमारे लिए देशभक्ति है। हमारे लिए दिल्ली का व्यापारी फले—फूले, ये भी देशभक्ति है। दिल्ली के युवाओं को रोजगार मिले, ये भी हमारे लिए देशभक्ति है। हमारे लिए ये भी देशभक्ति है कि हमारे कलाकारों को सम्मान मिले और मुख्यमंत्री जी हैं बार—बार कहते कि जिनको कुदरत से कम मिला हो उनको कानून ज्यादा दे दे, ये भी हमारे लिए देशभक्ति है। अध्यक्ष महोदया, विधान सभा में चर्चा हुई। मुझे खुशी है कि देशभक्ति के इस विजन पर हमारे विपक्ष के साथियों ने भी प्रतिक्रियायें दी। कल इन्होंने कहा कि बड़ा अच्छा किया हमारे रास्ते पर आये। नहीं—नहीं साहब, हम तो हाथ जोड़कर कहते हैं आपका रास्ता बड़ा खतरनाक है, हम आपके रास्ते पर नहीं चल सकते। बहुत खतरनाक रास्ता है। बेहद खतरनाक, देश के लिए खतरनाक रास्ता है। आप देशभक्ति की बात तो करते हो, जिस रास्ते पर आप चल रहे हो, उस रास्ते पर चलते हुए आप देशभक्ति की बात तो करते हो लेकिन पूरे देश की राजधानी को पिछले 15 साल में आपको चलाने का मौका मिला है एमसीडी की सत्ता, आप बात तो देशभक्ति की करते हो लेकिन व्यवस्था कूड़ा—कूड़ा चलाते हो। हम आपके रास्ते पर नहीं चलना चाहते हैं। हम आपके रास्ते पर नहीं चलना चाहते। पिछले 15 साल में दिल्ली में जितना कूड़ा फैलाया है हम उस रास्ते पर नहीं चलना चाहते। हमको दिल्ली की जनता ने जिस काम को करने के लिए मौका दिया है हम उसमें ईमानदारी से काम करना चाहते हैं और कुछ करके दिखाना चाहते हैं। यह हमारी देशभक्ति है। हम कूड़ा फैलाने की देशभक्ति नहीं करते। अध्यक्ष महोदय, ये बात तो देशभक्ति की करते हैं लेकिन पिछले 15 साल में दिल्ली नगर निगम में एक भी नगर निगम का ऐसा स्कूल नहीं है, एक भी जिसके बारे में ये दावे से कह सकें कि हमारे

नगर निगम के फलाने स्कूल में पॉचवीं क्लास में पढ़ने वाला बच्चा दूसरी क्लास की भी टेक्सट बुक ठीक से पढ़ सकता है। ये इनकी देशभक्ति है। पॉचवीं क्लास के बच्चे के पॉच साल खा जाते हैं एक बच्चे के और पॉचवीं क्लास में जब बच्चा पढ़ते—पढ़ते पहुंचता है प्रमोट होकर तो उसको दूसरी क्लास की टेक्सट बुक नहीं आती। ये आपका रास्ता है। ये आपको मुबारक हो। हमें ये रास्ता नहीं चाहिए। हमारी देशभक्ति ऐसी नहीं है। हम ऐसी ड्यूअल देशभक्ति नहीं करना चाहते हैं अध्यक्ष महोदय। हमारी देशभक्ति तो बच्चों को क्वालिटी एजूकेशन देने की देशभक्ति है। हमारी देशभक्ति तो उस बात की देशभक्ति है। हम तो उस रास्ते पर चलना चाहते हैं जिसमें देश के एक—एक बच्चे को क्वालिटी एजूकेशन मिले। सारे नेता अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूल में पढ़ा लेते हैं। गरीब बच्चे को नगर निगम में पढ़ाते हैं और कहते हैं कि इनका क्या ये पढ़ जायेंगे तो ये सवाल पूछने लगेंगे। इनका रास्ता ये हैं, हम इस रास्ते पर नहीं चलेंगे अध्यक्ष महोदय। इन्होंने कहा था आप देशभक्ति की बात करते हो। आप सिर्फ बात करते हो। उस भारत माता का एक बेटा जिसके भारत माता की जय आप कह कर कहते हो कि हम देशभक्त हैं। जोर से भारत माता की जय का नारा लगाकर आप कहते हो कि हम देशभक्त हो गये हैं, उस भारत माता का बेटा किसान अगर आपसे दिल्ली की सत्ता में कुछ कहने आता है तो आप उसको दिल्ली की सत्ता में पहुंचने से पहले बार्डर पर कीलें ठोकवा देते हो उसके रास्ते में और कहते हो हम देशभक्त हैं। आप किसानों का रास्ता रोकने के लिये ऐसी नुकीली कीलें खड़ा करते हो और उसकी फोटो खिंचवाकर दहशत फैलाते हो। ऐसा लगता है जैसे किसान मिलने नहीं आ रहा है दुश्मन देश चढ़ाई करने आ रहा है। आप किसानों से मिलने से रोकने के लिए, किसानों के सवालों से बचने के लिए उनके रास्ते में कीलें ठोकवाते हो और आप कहते हो देशभक्त हो। आपको ऐसा रास्ता मुबारक हो। हमको नहीं चाहिए ऐसा रास्ता। आपने कहा, आप अपने शब्दों को करेक्ट कर लीजिएगा। हम आपके रास्ते पर नहीं आ रहे हैं। हमको नहीं चाहिए कि किसान को देशद्रोही कहा जाये जिस किसान का बेटा बार्डर पर जवान बनकर बैठा हुआ है। आप देशभक्ति की बात तो करते हैं, ये कहते तो हैं कि मोदी जी फौजी की ड्रेस पहनकर पहुंच गये थे तो चीन पीछे हट गया। मोदी जी ने ये कर दिया था। मोदी जी ने वो कर दिया था। कहते तो है उस जवान की शहादत का, उस जवान की

बहादुरी का क्रेडिट तो लेते हैं लेकिन वो बेटा उस किसान का, वो जवान बेटा अगर खड़ा होकर वर्दी पहनकर ये कह दे कि मुझे फौज में जो दाल मिल रही है उस दाल में पानी ज्यादा है और दाल कम हैं तो उसे पागल करार देते हैं और उसको नौकरी से निकाल देते हैं ये लोग। ऐसी देशभक्ति आपको मुबारक हो। हमें, हमारे देश को ऐसी देशभक्ति नहीं चाहिए। देशभक्त कहते हो अपने आप को। जवानों के काम का क्रेडिट लेते हो, शर्म नहीं आती। जिस जवान ने ये कहा कि मुझे दाल नहीं मिल रही है, दाल के बदले पीने का पानी मिल रहा है उसको पागल करार दे दिया इन लोगों ने और उसको नौकरी से निकाल दिया इन लोगों ने। उसका क्रेडिट लेते हैं और कहते हैं हमारी राह पर चल रहे हो। ऐसी राह आपको मुबारक हो जहां हम अपने जवानों को पागल कहते हैं। अगर वो हमारा जवान खाना खाने को मॉगे और कहे कि दाल तो ठीक से दे दो यार। ऐसी राह आपको मुबारक हो। हमको वो रास्ता नहीं चाहिए, अध्यक्ष महोदय। आप देशभक्ति की बात करते हो। आपको जहां भी पूरे देश मे, अध्यक्ष महोदय, इन मिलावटी देशभक्तों को जहां भी सरकार चलाने का मौका मिला है, जिस राज्य में भी सरकार चलाने का मौका मिला है इन्होंने बिजली कम्पनियों से पैसा खा–खाके, खा–खाकर, खा–खाकर वहां आम आदमी के बिल इतने महंगे कर दिये हैं कि वो खून के ऑसू रोने पर मजबूर है। इसको ये अपना रास्ता कहते हैं। ये इनकी देशभक्ति है। आज हम जिस बात की बात कर रहे हैं, हमारा रास्ता ये है कि दिल्ली के हर आदमी को वो चाहे कितना भी गरीब हो, उसके घर में कम से कम एक चिराग तो रोशन हो सके, एक बल्ब तो जल सके। ये हमारी देशभक्ति है। एक आदमी अपने घर में बल्ब जलाने के लिए दो दो हजार, चार चार हजार रुपए का मासिक बिल चुकाये, ये आपका रास्ता है आपको मुबारक हो, हमको नहीं चाहिए ये रास्ता? हम नहीं चलेंगे ऐसे रास्ते पर।

....व्यवधान.....

माननीय अध्यक्ष महोदय (श्री राम निवास गोयल) पीठासीन हूए।

माननीय उप–मुख्यमंत्री : अध्यक्ष महोदय, बड़ी देश भक्ति की बात करते हैं। हमें तो खुशी है, अरे आप भी देश भक्ति करो, हम भी देश भक्ति की बात करें, कांग्रेस

जहां सत्ता में बैठी है, बंगाल में जो पार्टी बैठी है, सारे देश भक्ति की बात करें, देश का कल्याण होगा। लेकिन कम से कम देश भक्ति की बात तो करो। देश भक्ति का मतलब क्या हुआ, उसको तो बात करो। आप नारे जोर से लगाते हो और बगल में छुरी रखते हो और अपने आप को देश भक्त कहते हो?

श्री विजेंद्र गुप्ताः दीदी की बात करो।

माननीय उप–मुख्यमंत्रीः रूक जाइये, रूक जाइये। दीदी अपने आप खुद निपट लेगी आपसे चिंता मत करो, सक्षम हैं। खेला कर देगी वो।

....व्यवधान....

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः हमने बहुत patience के साथ सुना है।

मननीय उप–मुख्यमंत्रीः एक मिनट सुन लीजिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः और बहुत से स्टेट्स का अभी चुनाव है, आपको और जो आपके सहयोगी हैं, उनको भी हैसियत और औकात का पता चल जाएगा।

.....व्यवधान.....

माननीय उप–मुख्यमंत्रीः बैठ जाइए, बैठिए। सुनिए, सुनिए। अध्यक्ष महोदय

....व्यवधान....

माननीय उप–मुख्यमंत्रीः एक मिनट बैठिए, बैठिए राखी राखी, राखी...

....व्यवधान....

माननीय उप–मुख्यमंत्रीः अध्यक्ष महोदय।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः क्या कहा उन्होंने।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः क्या कहा। अरे आपने तो क्या। आप तो पाकिस्तानी बोलते हो। अरे मुझे, मुझे पाकिस्तानी बोला गया, मुझे पाकिस्तानी बोला गया। आप लोग तो

मुझे भी पाकिस्तानी बोलते हो।

...व्यवधान....

माननीय उप–मुख्यमंत्रीः क्या देश भक्ति की बात करेंगे। अध्यक्ष महोदय।

.....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः बिधूड़ी जी।

.....व्यवधान.....

माननीय उप–मुख्यमंत्रीः अध्यक्ष महोदय। राखी, राखी, राखी। नहीं छोड़ दीजिए।

.....व्यवधान.....

माननीय अध्यक्षः पढ़ लेंगे अपने आप।

माननीय उप–मुख्यमंत्रीः अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्षः अच्छी तरह से जानते हैं।

माननीय उप–मुख्यमंत्रीः हम अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा को देश भक्ति कहते हैं। अध्यक्ष महोदय, हम अपने बच्चों को।

.....व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः बिधूड़ी जी ये तो गलत बात है। बिधूड़ी जी, बिधूड़ी जी ये गलत बात है। ये तरीका गलत है। बैठिये प्लीज। बिधूड़ी जी आज आप भी बैठिये, बैठिये, बैठिये। बैठ जाइये, बैठ जाइये। प्लीज बैठिये। महाजन जी बैठिये।

माननीय उप–मुख्यमंत्रीः अध्यक्ष महोदय, हम अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने और अच्छी शिक्षा देने वालों को।

.....व्यवधान.....

माननीय अध्यक्षः करिये, करिये, करिये।

.....व्यवधान.....

माननीय उप—मुख्यमंत्रीः होगा, तभी मैंने कहा था।

.....व्यवधान.....

(सत्तापक्ष द्वारा भारत माता की जय एवं अन्य नारे लगाये गये।)

.....व्यवधान.....

माननीय उप—मुख्यमंत्रीः अध्यक्ष महोदय, इसीलिए मैंने कहा था कि इस बार इनका मुकाबला उनसे नहीं है, जो मुंह में राम और बगल में छूरी लेकर धूमते हैं। इस बार उनका मुकाबला उनसे है जो मुंह में भी राम रखते हैं और दिल में भी राम रखते हैं। टिक नहीं पाएंगे उनके सामने। टिक नहीं सकते?

अध्यक्ष महोदय ये बात करते हैं। ये बात करते हैं कि हम अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देंगे। ये तो खैर क्या करते हैं, शिक्षा पर बात ही नहीं करते। हम कहते हैं कि शिक्षा देना देश भक्ति है। मुख्यमंत्री जी कहते हैं और अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने वाले टीचर्स का सम्मान देना हमारे लिए देश भक्ति है। हम अपने अच्छे टीचर्स को देश और दुनिया की बढ़िया ट्रेनिंग कराते हैं। फिनलैंड भेजते हैं उनको, हारवर्ड भेजते हैं, उनको, कैम्ब्रीज भेज कर उनको प्रशिक्षिण दिलाते हैं। ये कहते हैं हमारे रास्ते पर आ गये। हमारा रास्ता शिक्षकों की मजबूती का रास्ता है और इनका रास्ता शिक्षकों की मजबूरी का रास्ता है।

आपने सुना होगा थोड़े दिन पहले, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी। एक दिन आठ बजे बरेली पहुंचना था, मैंने खबर पढ़ी। आठ बजे उनको बरेली पहुंचना था तो उत्तर प्रदेश में बरेली जनपद के शिक्षकों के नाम फरमान जारी किया गया। उसमें महिला शिक्षक भी थीं कि चार बजे एयरपोर्ट पर पहुंच जाना माननीय मुख्यमंत्री के स्वागत में रंगोली बनानी है और जो नहीं पहुंचेगा वो अक्षम्य होगा। देश भक्ति अपने टीचर्स को, अपने बच्चों को अच्छा पढ़ाने वाले टीचर्स को हाडवर्ड में ट्रेनिंग दिलवाने में हैं, कैम्ब्रीज में ट्रेनिंग दिलवाने में हैं, आईएमएम में ट्रेनिंग दिलवाने में हैं। उनको माननीय मुख्यमंत्री के स्वागत में, अरे बुला लीजिए कोई ऐसा नहीं है,

टीचर्स को रंगोली भी आता है, लेकिन ये लिखना 'अगर आप समय पर नहीं पहुंचे आठ बजे मुख्यमंत्री जी आएंगे, आप चार बजे नहीं पहुंचे तो अक्षम्य होगा', टीचर्स के अपमान में आपका रास्ता है, टीचर्स के सम्मान में हमारा रास्ता है। हम आपके रास्ते पर नहीं चलेंगे।

अध्यक्ष महोदय, इसी उत्तर प्रदेश में मैंने शिक्षा के लिए लिखा था। उत्तर प्रदेश में एक पत्रकार लिखता है। वो जाता है किसी गांव में, वहां मीड डे मील की जगह सूखी रोटी और उसपर नमक लगाकर बांटा जा रहा था। इनकी देश भक्ति, इनका रास्ता ये है कि उस पत्रकार को डेढ़ महीने जेल में डालकर रखा इन्होंने, डेढ़ महीने तक, ऐसा रास्ता हमको नहीं चाहिए। हम नहीं चलेंगे। मर जाएंगे, लेकिन ऐसे रास्ते पर नहीं चलेंगे कि बच्चों के मीड डे मील का पैसा खा जाएं और बच्चो को सूखी रोटी और नोन लगाकर दें। मर जाएंगे लेकिन ये नहीं करेंगे। इस रास्ते पर नहीं चलेंगे, अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय, इनका जो रास्ता है उसपर ये नारे जोर से लगा लेते हैं, ये बातें जोर से कर लेते हैं। जब सवाल को सुनने की बात आएं तो वाकआउट भी अच्छे से कर लेते हैं, लेकिन इनका जो रास्ता है, उसपर चलकर ज्यादा से ज्यादा सत्ता तक पहुंचा जा सकता है, भगत सिंह और बाबा साहब के सपनों तक नहीं पहुंचा जा सकता है। जिस तरह की नारेबाजी कर करके, मिलावटी देश भक्ति कर करके, खोखली देशभक्ति कर करके, ये सत्ता तक पहुंच सकते हैं, गांधी और सुभाष के सपनों तक नहीं पहुंच सकते।

अध्यक्ष महोदय उन सपनों तक पहुंचना है। माननीय मुख्यमंत्री जी को बोलना है। मैं बस आखिर में ये बात कहकर बात खत्म करूंगा कि एक बार सत्येन्द्र जी और हम डिसकस कर रहे थे तो हमने दोनों ने अपने बारे में कॉमन पाया आप सब लोग भी याद करियेगा, जब हम स्कूल में पढ़ते थे तो उस समय हमें बताया जाता था कि तीन तरह के देश होते हैं। विकसित देश, विकासशील देश और अविकसित देश। हिन्दी मीडियम में पढ़ा था इस लिए हिन्दी मीडियम के शब्द यूज कर रहा हूं। हमें कहा जाता था कि तीन तरह के देश होते हैं विकसित देश, विकासशील देश, अविकसित।

भारत विकासशील देश है। हम लोग पूछते थे भई अब भारत विकासशील देश है तो विकसित कितने दिन में बनेगा तो बोला दस साल की बात है। आठ–दस साल से बहुत बढ़िया काम चल रहा है। हो जाएगा बस आठ–दस साल में हो जाएगा। हमें बड़ा लगता था अच्छा है। जब हाई स्कूल या उससे नीचे क्लासेस में पढ़ते थे तो हमें लगता था इंटर करेंगे, ग्रेजुएशन, ग्रेजुएशन करेंगे तब तक हो ही लेगा। थोड़ा बहुत हो ही लेगा। नौकरी मिलेगी विकसित देश में कम से कम।

अध्यक्ष महोदय, आज मेरा बच्चा स्कूल में पढ़ रहा है। उसकी किताब में मैंने खोलकर देखा, उसमें भी लिखा हुआ है तीन तरह के देश होते हैं विकसित देश, अविकसित देश, विकासशील देश और अभी भी भारत विकासशील देश मे हीं हैं। विकसित देशों की श्रेणी में नहीं आया और मैं आज कह रहा हूं इस सदन में रिकार्ड में रहे ये बात कि भारत तब तक विकसित देशों की श्रेणी में नहीं आ सकता, जब तक मुख्यमंत्री जी का जो सपना है कि दिल्ली के, देश के हरेक बच्चे को गरीब से गरीब आदमी के बच्चे को क्वालिटी एजुकेशन नहीं मिलेगी, भारत विकसित देशों में श्रेणी में नहीं आएगा। ये कहते हैं मुंगेरी लाल के हसीन सपने देख रहो हो। हां जी सपने तो देख रहे हैं। सपने देख रहे हैं हमारे सपनों में दम है। हमें अपनी नीयत पर भरोसा है, आपको अपनी नीयत पर भरोसा नहीं है? आपकी प्रोब्लम है, हमारी थोड़े ही प्रोब्लम है। आपके पास कोई विजन नहीं है, हमारे पास विजन है, वो आपकी प्रोब्लम है हमारी थोड़े ही है। हमें अपनी शिक्षा पर भरोसा है, हमें पता है कि अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देंगे। आज जो बच्चा, किस बच्चे की बात की मैंने 2047 में। आज जो बच्चा पैदा हो रहा है। 25 साल बाद फिर वो ग्रेजुएशन में खड़ा होगा। पहली नौकरी, दूसरी नौकरी कर रहा होगा ग्रेजुएशन के बाद में, मैं उस बच्चे की बात कर रहा हूं। उस बच्चे को इतनी शानदार शिक्षा देंगे, इतनी शानदार शिक्षा देंगे कि 2047 तक तब वो 25 साल का बनकर खड़ा होगा, उसकी इन्कम सिंगापुर में बैठे हुए उसके काउंटर पार्ट की इन्कम के बराबर होगी। उसकी एवरेज में इन्कम होगी। आपको शिक्षा पर भरोसा नहीं है। आप तो कभी भी शिक्षा पर भरोसा नहीं रहा, आज कौन सा होगा? इनको शिक्षा पर भरोसा नहीं रहा अध्यक्ष महोदय। ये हंस इसलिए रहे हैं क्योंकि उसकी नीयत में खोंट है, इनको अपने कर्मों में खोंट और इनको शिक्षा पर भरोसा नहीं

है? हमको अपने ऊपर आत्मविश्वास है। हम आत्मविश्वास से मुस्कुरा इसलिए रहे हैं क्योंकि हमें भरोसा है, हमारी नियत साफ है, हमारी लीडरशिप की नीयत साफ है। हमें शिक्षा पर भरोसा है और हमें कर्मो पर भरोसा है। इसलिए हम जो कुछ इस बजट में कहा है, हम उसको हासिल करके रहेंगे ये हमारा कमिटमेंट है खुदसे। ये हमारा संकल्प है अपने आप से और हम भारत को वहां लेकर जाना चाहते हैं, देश को वहां लेकर जाना चाहते हैं फिर से अपने सपने को रिकार्ड करके आखिर में एक लाईन में अपनी बात खत्म करूंगा कि एक ऐसे देश का सपना देखते हैं जहां अभी हम लोग पढ़ते हैं, देखते हैं जिन परिवारों में बच्चें हैं, स्कूल में हैं, उन परिवारों में सपना पलता है कि मेरा बच्चा थोड़ा सा बड़ा हो जाए तो ग्रेजुएशन करने के लिए, पोस्ट ग्रेजुएशन करने के लिए उसको अमेरिका, यूरोप के फलानें यूनिवर्सिटी भेजेंगे, फलांने कॉलेज में भेजेंगे। आज मैं कहता हूं ये सदन बैठकर सपना देखे कि हम शिक्षा को और देश को वहां लाकर खड़ा करें कि अमेरिका और यूरोप और जापान जैसे देशों में उनकी फैमिली में ड्राईंग रूम में बैठकर चर्चा हो रही हो कि हमारा बच्चा थोड़ा सा बड़ा हो जाए, थोड़ी सी मेहनत लग जाए और थोड़ी कोई फैलोशिप मिल जाए तो दिल्ली की फलांनी यूनिवर्सिटी में पढ़ने भेजेंगे हम अपने बच्चे को। ये सपना सच कर लिजिए बाकी सारे सपने अपने आप सच हो जाएंगे। एक बार एक चीज जरुर लगेगी और शिक्षा— पिछले पांच साल में काम किया है, स्वास्थ्य— पिछले पांच साल में काम किया है, लोगों के जीवन पर पिछले पांच—छः साल में काम किया है। हमारा पूरा भरोसा है कि जितनी बातें इस बजट में कही गयी है और जितनी माननीय सदस्यों ने यहां पर कहीं, जितने आइडियाज यहां पर दिये, उन सबको समाहित करके निश्चित रूप से एक साल के अंदर अंदर अगले साल जब यहां बैठेंगे तो उन तमाम् चीजों के सिर्फ सपने नहीं अगली सीढ़ी पे आकर बैठेंगे। बहुत बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्षः बहुत बहुत धन्यवाद मनीष जी। अब माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी।

माननीय मुख्यमंत्रीः अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले इतनी कठिन परिस्थितियों में पिछले एक साल से जो देश भर में, दिल्ली में इतनी कठिन परिस्थितियां रहीं, उसमें इतना शानदार बजट प्रस्तुत करने के लिए मैं वित्त मंत्री जी को बहुत बहुत दिल से

बधाई देना चाहता हूं। पूरे दिल्ली के लोगों की तरफ से बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने इतना शानदार बजट, इतना बैलेंस्ड करके बजट प्रस्तुत किया गया। जैसा हम जानते हैं पिछले एक साल में स्थितियां बहुत खराब रहीं। जनता काफी तकलीफ में थी, लोगों के धंधे बंद हो गये थे, फैक्ट्रियां बंद हो गयी थी, दुकानें बंद हो गयी थी, जिसकी वजह से एक तरफ सरकारी रेवेन्यू (टैक्स) आना बंद हो गया और दूसरी तरफ सरकारी खर्चे बहुत ज्यादा बढ़ गये क्योंकि जिम्मेदार सरकार होने के नाते हमें लोगों के लिए जगह जगह तरह तरह की सुविधाओं का इंतजाम करना पड़ा। उनके खाने पीने के लिए, राशन के लिए रोजमर्रा की जरूरतों के लिए किट प्रोवाइड किया गया, उनके स्वास्थ्य सेवाओं के लिए, कोरोना से ईलाज के लिए, बहुत सारी चीजों का इंतजाम किया गया तो खर्चे सरकार के बहुत ज्यादा बढ़ गये, लेकिन इन्कम लगभग खत्म हो गयी और उसके वाबजूद सरकार ने इतना अच्छा बजट पेश किया, इसके लिए मैं वित्त मंत्री जी को बधाई देता हूं। कई लोग कहते थे, कई पत्रकार भी कहते थे, कई लोग कहते थे कि अब तो शायद बिजली की सब्सिडी खत्म करनी पड़ेगी इन लोगों को, अब तो शायद पानी की सब्सिडी खत्म करनी पड़ेगी इन लोगों को। लेकिन पूरे पिछले साल भी बिजली भी फ्री रही, पानी भी फ्री रहा, बच्चों का स्कूल भी फ्री रहा, सारे सरकारी अस्पतालों में ईलाज भी फ्री रहा और महिलाओं का बस में सफर भी फ्री रहा और आने वाले साल में जब बजट प्रस्तुत किया गया है तो उस बजट में भी बिजली भी फ्री है, पानी भी फ्री है, स्कूल भी फ्री है, अस्पताल भी फ्री है और बसों में महिलाओं का सफर भी फ्री है। इतनी कठिन परिस्थतियों में ये सारी सहुलियतें जनता को जारी रहीं इसकी मैं उन्हें बधाई देता हूं। पिछले एक–डेढ़ महीने में देश का बजट प्रस्तुत किया गया मैंने वो बड़े गौर से देखा। पिछले एक–डेढ़ महीने में लगभग देश के हर राज्य में बजट प्रस्तुत किया गया। लगभग सभी सरकारों ने, राज्य सरकारों ने और केन्द्र सरकार ने जो बजट प्रस्तुत किए सबने घाटे के बजट प्रस्तुत किए। दिल्ली अकेला राज्य है जिसने इतनी कठिन परिस्थितियों में भी फायदे का बजट प्रस्तुत किया सरप्लस बजट प्रस्तुत किया घाटे का बजट प्रस्तुत नहीं किया। ये भी अपने आप में एक बहुत बड़ी बात है। इस बजट को देशभक्ति बजट बोला गया। आज हमारा देश आजादी के 75 साल मना रहा है बड़ी धूमधाम से मना रहा

है और इस 75वें साल में इस बजट के जरिए पूरी कोशिश की गई है कि अगले एक साल दिल्ली के कण–कण के अंदर देशभक्ति की भावना होगी हर जगह देशभक्ति की भावना होगी और कई सारे कार्यक्रमों के आयोजन और कई सारे नई–नई चीजें शुरू की जाएंगी इस दौरान स्कूलों के अंदर देशभक्ति पाठ्यक्रम शुरू किया जाएगा। ये पहली बार हो रहा है अन्य कई देशों में होता है कि बच्चों को बचपन से अपने देश के प्रति कूट–कूटकर देशभक्ति भरने का काम अन्य कई देशों में किया जाता है। हमारे देश के अंदर हमारे पाठ्यक्रम में मैं समझता हूं ये कमी थी जो इस वर्ष से दिल्ली राज्य में ये कमी पूरी की जाएगी और बच्चों के अंदर देशभक्ति की भावना भरी जाएगी। इसी बजट में कहा गया कि हम दिल्ली में जगह–जगह 500 जगह हम लोग बड़े–बड़े तिरंगे लगायेंगे, तिरंगे फहरायेंगे। सरकार बड़े–बड़े तिरंगे फहराएगी। ये बहुत ही शानदार कदम है। जब भी हम तिरंगा देखते हैं तो हमारा मन देशभक्ति से ओत–प्रोत हो जाता है। जब भी हम तिरंगा देखते हैं तो अंदर खुद–ब–खुद मन बोल उठता है भारत माता की जय। जब भी हम तिरंगा देखते हैं तो हमें अपनी भारत माता की याद आती है और बॉर्डर में लड़ते हुए सैनिक जो हमारे लिए शहीद हो रहे हैं उनकी तस्वीर हमारे सामने आ जाती है। ये बहुत ही अच्छा कदम है कि पूरी दिल्ली के अंदर जगह–जगह जब तिरंगे लगाए जाएंगे और रोज सुबह जब कोई अपने घर से निकलेगा, दफ्तर जाएगा रास्ते में उसे जगह–जगह तिरंगे दिखाई देंगे और उसका मन देशभक्ति से भर जाएगा उसका मन फ्रेश हो जाएगा। मुझे ये समझ नहीं आ रहा कि जब से ये ऐलान किया गया है तब से भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस के लोग इसका विरोध क्यों कर रहे हैं। इसमें विरोध करने वाली क्या बात है अच्छा कदम है, साथ देना चाहिए, तारीफ करनी चाहिए। अध्यक्ष महोदय, देशभक्ति की बात के ऊपर राजनीति नहीं होनी चाहिए। देश हमारा सबका है भारत हमारा सबका है चाहे कोई बीजेपी से हो, चाहे कांग्रेस से हो, चाहे आम आदमी पार्टी से हो, चाहे इस पार्टी से हो, चाहे उस पार्टी से हो देश तो हमारा सबका है। केन्द्र सरकार ने जब–जब अच्छे काम किए हमने दलगत राजनीति से ऊपर उठकर साथ दिया। मुझे याद है 2014 में प्रधानमंत्री जी ने स्वच्छ भारत का ऐलान किया था। मैं खुद झाडू लेकर एक झुग्गी बस्ती के अंदर सफाई करने गया था स्वच्छ भारत में पार्टिसिपेट

करने के लिए। मुझे याद है जब उन्होंने योगा का कार्यक्रम एनाउंस किया था मैं खुद अपनी चटाई लेकर इंडिया गेट गया था योगा करने के लिए ये सारे गए थे। जब–जब भारत की बात आती है हमारे लिए कोई बीजेपी नहीं है, कोई कांग्रेस नहीं है, कोई आम आदमी पार्टी नहीं, हमारे लिए हमारा देश है भारत माता है। तो मेरे को समझ नहीं आया कि जब हमने कहा पूरी दिल्ली के अंदर तिरंगे फहरायेंगे तो भारतीय जनता पार्टी वालों ने इसका विरोध क्यों किया, कांग्रेस वालों ने इसका विरोध क्यों किया? कहते हैं तिरंगे नहीं होने चाहिए। क्यों नहीं होने चाहिए तिरंगे? होने चाहिए नहीं होने चाहिए, होने चाहिए तिरंगे। मैं भारतीय जनता पार्टी से पूछना चाहता हूं कि ये तिरंगा भारत में नहीं फहराएगा तो पाकिस्तान में फहराएगा क्या? हमारे देश का तिरंगा दिल्ली में नहीं फहराएगा तो इस्लामाबाद में फहराएगा क्या? मुझे बड़ा दुख हुआ। अभी जब परसों मैं सदन में भाषण दे रहा था, मैंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के ऊपर भव्य राम मंदिर बनने का काम तो शुरू हो गया। जब ये मंदिर बन जाएगा तो हम अपने दिल्ली के सभी बुजुर्गों को फ्री में रामलला के दर्शन कराकर लायेंगे हम राम मंदिर के दर्शन कराके लायेंगे अयोध्या के। जब से मैंने ये ऐलान किया ये बीजेपी और कांग्रेस वाले विरोध कर रहे हैं इसका। क्यों विरोध कर रहे हैं इसका मेरे को तो समझ नहीं आता। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या अपने बुजुर्गों को राम मंदिर के दर्शन कराना पाप है, क्या अपने बुजुर्गों को अयोध्या ले जाकर रामलला के दर्शन कराना क्या ये गलत बात है? ये तो अच्छी बात है, पुण्य की बात है। क्यों विरोध कर रहे हैं वो इसका? मुझे बिल्कुल समझ नहीं आता कि वो इस बात का क्यों हर चीज में राजनीति–हर चीज में राजनीति। कभी देश के बारे में सोच लिया करो। मुझे बेहद खुशी है कि इस बजट के अंदर हमने अपने लोगों के योग, सुबह–सुबह योगा करने की भी व्यवस्था की है। इसमें कहीं भी दिल्ली के अंदर 25–50 लोग इकट्ठे होकर अगर मांग करेंगे कि जी हमें योगा करना है, वो जहां कहेंगे, चाहे वो कहेंगे हमारे पार्क में योगा करा दो, हमारी सोसायटी में योगा करा दो, हमारे यहां योगा करा दो, दिल्ली सरकार उनके योगा कराने का इंतजाम करेगी। ये पहली बार अपने आप में कार्यक्रम है कि सरकार जो है जनता के स्वास्थ्य के लिए इस किस्म का कार्यक्रम करने जा रही है। इस बजट में हम लोगों ने सपना देखा है, हमने सपना

देखा है कि 2048 का ओलंपिक खेल दिल्ली के अंदर करवाया जाएगा। इंडियन ओलंपिक एसोसिएशन का मैं बयान पढ़ रहा था अखबारों के अंदर उन्होंने कहा है कि दिल्ली सरकार ने ये बयान कैसे दिया, उन्हें हमसे पूछना चाहिए था। मैं पूरी इज्जत के साथ उन्हें कहना चाहता हूं कि हमारा ये सपना है हम उनके पास जाएंगे। उनसे जो भी अप्रुवल लेनी है अप्रुवल लेंगे। अगर उनके माध्यम से अप्लाई करना है उनके माध्यम से अप्लाई करेंगे और ये जैसा मैंने कहा था कि कोरोना एक महामारी थी जो हम अकेले नहीं कर सकते थे। अकेले उससे नहीं जूझ सकते थे, हमने सबका साथ लिया। दिल्ली के अंदर ओलंपिक खेलों का आयोजन भी हम अकेले नहीं कर सकते हमें इसमें सबका सहयोग चाहिए होगा। ये भारत के लिए गौरव की बात होगी, भारत के लिए गर्व की बात होगी, भारत के लिए बड़ी बात होगी। इसमें हम केन्द्र सरकार के पास भी जाएंगे। इंडियन ओलंपिक एसोसिएशन के पास भी जाएंगे सारी स्पोर्ट्स बॉडिज के पास भी जाएंगे, सारे संस्थानों के पास भी जाएंगे। सारा देश मिलकर 2048 के ओलंपिक गेम्स के लिए बिड करेगा अकेली दिल्ली सरकार नहीं करने वाली, दिल्ली सरकार इसमें इनिशिऐटिव लेगी। लेकिन सारा देश मिलकर करेगा और हमारे सारे देश के लिए गर्व की बात है। हमने कहा कि सिंगापुर की जो इनकम है सिंगापुर की इनकम दुनियाभर की इनकम में लगभग सबसे ज्यादा मानी जाने वाली है इसलिए सिंगापुर कहा गया। आज भारत एक गरीब देश माना जाता है जो अभी उप मुख्यमंत्री महोदय ने कहा कि आखिर मेरा देश कब विकसित देशों में गिना जाएगा। बचपन से सुनते आ रहे हैं हमारा देश विकासशील है, हमारा देश डेवलपिंग कंट्री है, हमारा देश विकासशील है कब बनेगा डवलप कंट्री। कभी न कभी तो किसी न किसी को इसके बारे में कहना पड़ेगा न कि भई अब बनेगा, अब इसके लिए काम करेंगे और इतने समय में बनेगा और इतने समय तक करेंगे। तो आज हमने कहा 25 साल के अंदर 2047 तक हम दिल्ली की पर कैपिटा इनकम जो है सिंगापुर की पर कैपिटा इनकम के बराबर होगी। हां, मैं मानता हूं हमारा सपना है जब से ये दोनों ऐलान किए हैं हमने कहा कि ओलंपिक में कि हम बिडिंग करेंगे, हमने कहा सिंगापुर के बराबर इनकम लायेंगे, ये कई विपक्षी पार्टियां हमारा मजाक उड़ा रही है हंस रही है हमारे ऊपर। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि आज हंस लो

लेकिन आज जो ये सपना देखा है, जब हमने चुनाव लड़े थे पिछली बार 2013 में पहली बार चुनाव लड़े थे। हमने कहा था हम बिजली फ्री करेंगे, तब तो हमने कहा था बिजली के बिल आधे करेंगे हंसा करते थे हमारे ऊपर। हो ही नहीं सकता, केजरीवाल झूठ बोल रहा है। 49 दिन के अंदर करके दिखा दिया हमने। हमने कहा था सरकारी स्कूल अच्छे करेंगे ये कहते थे हो ही नहीं सकते सरकारी स्कूल अच्छे। 5 साल में करके दिखा दिए। हमने कहा था सरकारी अस्पताल अच्छे करेंगे, कहते थे हो ही नहीं सकते, हमने करके दिखा दिए। आज हम कह रहे हैं कि 2048 का दिल्ली के अंदर ओलंपिक खेल होगा, ये मजाक उड़ा रहे हैं, करके दिखाएंगे। ये देश करके दिखाएगा इस देश पर भरोसा रखो, देश के लोगों पर भरोसा रखो। आज हम कह रहे हें कि 2047 तक 100 साल हो जाएंगे आजादी के 25 साल बचे हैं। 25 साल के अंदर ये देश हमारा देश विकसित होगा। हां, हमने सपना देखा है और इस देश के लोग इस सपने को पूरा करके दिखाएंगे। तो अध्यक्ष महोदय, ये जो बजट है मैं इसका पूरा समर्थन करता हूं और फिर से वित्त मंत्री महोदय को बधाई देता हूं।

अनुदानों की मांगें (2021—2022)

माननीय अध्यक्षः— अब सदन माननीय उप मुख्यमंत्री द्वारा दिनांक 09 मार्च, 2021 को सदन में प्रस्तुत Demands for Grants पर Demand wise विचार करेगाः—

DEMAND NO. 1 (Legislative Assembly)

जिसमें Revenue मे़ं 61 करोड़ 15 लाख रुपये हैं, सदन के सामने है—

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 1 पास हुई।

DEMAND NO. 2 (General Administration)

जिसमें Revenue में 7 अरब 96 करोड़ 15 लाख 50 हज़ार रुपये हैं, सदन के सामने है–

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 2 पास हुई।

DEMAND NO. 3 (Administration of Justice)

जिसमें Revenue में 11 अरब 44 करोड़ 27 लाख रुपये हैं तथा Capital में 1 करोड़ रूपये हैं, कुल राशि 11 अरब 45 करोड़ 27 लाख रुपये सदन के सामने है–

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 3 पास हुई।

DEMAND NO. 4 (Finance)

जिसमें Revenue में 3 अरब 50 करोड़ 73 लाख रुपये हैं तथा Capital में 50 लाख रूपये हैं, कुल राशि 3 अरब 51 करोड़ 23 लाख रुपये सदन के सामने है–

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Demand No. 4 पास हुई।

डिमांड नंबर—5 (होम)

जिसमें रेवेन्यू में 9 अरब 58 करोड़ 79 लाख रुपये हैं तथा कैपिटल 1 अरब 3 करोड़ 5 लाख रूपये, कुल राशि 10 अरब 61 करोड़ 84 लाख रुपये सदन के सामने है—

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

डिमांड नंबर—5 पास हुई।

डिमांड नंबर—6 (एजुकेशन)

जिसमें रेवेन्यू मे़ं 140 अरब 8 करोड़ 52 लाख 50 हजा़र रुपये हैं तथा Capital में 4 अरब 81 करोड़ 96 लाख 50 हजा़र रूपये, कुल राशि 144 अरब 90 करोड़ 49 लाख रुपये सदन के सामने है—

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

डिमांड नंबर—6 पास हुई।

डिमांड नंबर—7 (मेडिकल एंड पब्लिक हेल्थ)

जिसमें रेवेन्यू मे़ं 80 अरब 63 करोड़ 42 लाख 90 हज़ार रुपये हैं तथा कैपिटल में 3 अरब 69 करोड़ 45 लाख रूपये, कुल राशि 84 अरब 32 करोड़ 87 लाख 90 हज़ार रुपये सदन के सामने है—

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

डिमांड नंबर–7 पास हुई।

डिमांड नंबर–8 (सोशल वेलफेयर)

जिसमें रेवेन्यू में 93 अरब 26 करोड़ 67 लाख 30 हज़ार रुपये हैं तथा कैपिटल में 22 अरब 32 करोड़ 86 लाख 70 हज़ार रूपये, कुल राशि 115 अरब 59 करोड़ 54 लाख रुपये सदन के सामने है–

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

डिमांड नंबर–8 पास हुई।

डिमांड नंबर–9 (इंडस्ट्रीज)

जिसमें रेवेन्यू में 5 अरब 73 करोड़ 93 लाख 50 हज़ार रुपये हैं तथा कैपिटल में 5 करोड़ 22 लाख रूपये, कुल राशि 5 अरब 79 करोड़ 15 लाख 50 हज़ार रुपये सदन के सामने है–

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

डिमांड नंबर–9 पास हुई।

डिमांड नंबर—10 (डेवलपमेंट)

जिसमें रेवेन्यू में 31 अरब 49 करोड़ 92 लाख 50 हज़ार रुपये हैं तथा कैपिटल में 8 अरब 92 करोड़ 92 लाख रूपये, कुल राशि 40 अरब 42 करोड़ 84 लाख 50 हज़ार रुपये सदन के सामने है—

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

डिमांड नंबर—10 पास हुई।

डिमांड नंबर—11 (Urban Development & Public Works)

जिसमें रेवेन्यू में 96 अरब 63 करोड़ 7 लाख रुपये हैं तथा कैपिटल में 88 अरब 6 करोड़, कुल राशि 184 अरब 69 करोड़ 7 लाख रुपये सदन के सामने है—

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

डिमांड नंबर—11 पास हुई।

डिमांड नंबर—12 (Loans)

जिसमें कैपिटल में 1 करोड़ 50 लाख रूपये हैं सदन के सामने है—

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

डिमांड नंबर—12 पास हुई।

डिमांड नंबर–13 (पेंशन)

जिसमें रेवेन्यू में 3 करोड़ रूपये हैं सदन के सामने है–

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

डिमांड नंबर–13 पास हुई।

हाउस ने कुल मिलाकर रेवेन्यू में 480 अरब 99 करोड़ 65 लाख 20 हज़ार रुपये तथा कैपिटल में 128 अरब 94 करोड़ 47 लाख 20 हज़ार रुपये, कुल राशि 609 अरब 94 करोड़ 12 लाख 40 हज़ार रुपयों की डिमांड को मंजूरी दे दी है।

Appropriation (No. 2) Bill, 2021

(Bill No. 02 of 2021)

अब माननीय उप–मुख्यमंत्री Appropriation (No. 2) Bill, 2021 (Bill No. 02 of 2021) को हाउस में Introduce करने की permission मांगेंगे।

Hon'ble Dy. Chief Minister:-

Hon'ble Speaker Sir, I seek the permission of the House to introduce Appropriation (No. 2) Bill, 2021 (Bill No. 02 of 2021) to the house

माननीय अध्यक्ष: माननीय उप–मुख्यमंत्री जी का प्रस्ताव सदन के सामने है–

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

प्रस्ताव पास हुआ।

अब माननीय उप मुख्यमंत्री बिल को सदन में Introduce करेंगे।

Hon'ble Dy. Chief Minister:-

Hon’ble Speaker Sir, I introduce Appropriation (No. 2) Bill, 2021 (Bill No. 02 of 2021) to the House.

माननीय अध्यक्षः अब बिल पर Clause-wise विचार होगा।

प्रश्न है कि खण्ड–2, खण्ड–3 व Schedule बिल का अंग बनें–

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

खण्ड–2, खण्ड–3 एवं Schedule बिल का अंग बन गये।

प्रश्न है कि खण्ड–1, Preamble और Title Bill का अंग बनें–

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

खण्ड–1, Preamble और Title Bill का अंग बन गये।

अब माननीय उप–मुख्यमंत्री प्रस्ताव करेंगे कि Appropriation (No. 2) Bill, 2021 (Bill No. 02 of 2021) को पास किया जाए।

Hon'ble Dy. Chief Minister:-

Hon’ble Speaker, Sir, the House may now please pass the Appropriation (No. 2) Bill, 2021 (Bill No. 02 of 2021)

माननीय अध्यक्षः अब माननीय उप–मुख्यमंत्री जी का प्रस्ताव सदन के सामने है–

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

Appropriation (No. 2) Bill, 2021 (Bill No. 02 of 2021) पास हुआ।

समिति के प्रतिवेदन पर सहमतिः श्री अमानुतुल्ला खान जी, श्री अब्दुल रहमान जी प्रस्तुत करेंगे।

श्री अमानतुल्ला खान : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि यह सदन दिनांक 11 मार्च, 2021 को सदन में प्रस्तुत अल्पसंख्यक कल्याण समिति के प्रथम प्रतिवेदन से सहमत है।

माननीय अध्यक्षः यह प्रस्ताव सदन के सामने है–

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

प्रस्ताव पास हुआ।

मैं माननीय सदस्यों को सूचित करना चाहता हूं कि सदन की कार्यवाही को आज ही अनिश्चित काल तक के लिये स्थगित किया जा रहा है। इस सत्र के सभी सरकारी कार्यों का निपटान कर दिया गया है। देश में कोरोना के मामलों में

भी लगातार बढ़ोतरी हो रही है। इन दोनों बिंदुओं को मद्देनजर सत्र को आज ही अनिश्चित काल के लिए स्थगित किया जा रहा है। इससे पहले की मैं सदन को अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित करूं, स्वस्थ संसदीय परम्पराओं का निर्वाह करते हुए सदन के नेता एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी, माननीय उप–मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी, सभी मंत्रीगण, श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष तथा सदन के सभी माननीय सदस्यों का हार्दिक आभार प्रकट करता हूं।

मैं माननीय उप–मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी की तहेदिल से सराहना करता हूं कि उन्होंने न केवल शानदार बजट प्रस्तुत किया बल्कि बजट को कागज रहित (पेपर लेस) ढंग से पेश करके नई ऐतिहासिक शुरूआत की। इसके अलावा मैं एन.आई.सी और दिल्ली सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के सभी अधिकारियों विशेशकर श्री एम. श्रीकांत और श्री हिमांशु मनचंदा तथा विधानसभा सचिवालय की सूचना प्रौद्योगिकी शाखा के अधिकारी श्री रविकांत सतदेवे के प्रयास भी सराहनीय हैं, जिन्होंने बजट की कागज रहित प्रक्रिया को लागू करने में लगातार कार्य किया।

मैं माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी का भी बहुत–बहुत आभार व्यक्त करता हूं। देश को राम राज्य की 10 बिदुओं को लेकर एक नई दिशा दी है जो वास्तविकता में प्रशंसनीय है मैं उनकी भी भूरी–भूरी प्रशंसा करता हूं।

इसके अलावा सत्र के संचालन में सहयोग देने के लिए विधान सभा सचिवालय तथा दिल्ली सरकार के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ–साथ विभिन्न विभागों, सुरक्षा एजेंसियों व दिल्ली पुलिस का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं। मीडिया के सभी बंधुओं का भी बहुत–बहुत धन्यवाद करता हूं कि विधानसभा की कार्यवाही को उन्होंने जन–जन तक पहुंचाने में हमारा सहयोग किया है।

अब मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगा कि वे राष्ट्र गान के लिए खड़े हों।

(राष्ट्र गान : जन–गण–मन)

अब सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित की जाती है, जय हिन्द।

,,

© दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी राज्यक्षेत्र शासन अधिनियम, 1991 की धारा 18 (2) के उपबंधों तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली विधान सभा प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली के नियम 281 (2) के प्रावधानों के अंतर्गत प्रकाशित तथा ग्राफिक प्रिंटर्स, स्मैट फॉर्म्स, नई दिल्ली–110 007 द्वारा मुद्रित।